

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं हैं।

Aniket Dhyani

ॐ गं गणपतये नमः

शुभ



लाभ



Model: ParasharPatrika

SrNo: 115-120-105-1268 / 274

Date: 27/12/2023

Aniket Dhyani

15 Nov 1997 09:50 PM

Hardoi

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 15/11/1997
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 21:50:00 घंटे
इष्ट _____: 38:19:24 घटी
स्थान _____: Hardoi
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 27:23:00 उत्तर
रेखांश _____: 80:06:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:09:36 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 21:40:24 घंटे
वेलान्तर _____: 00:15:26 घंटे
साम्पातिक काल _____: 01:19:34 घंटे
सूर्योदय _____: 06:30:14 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:18:05 घंटे
दिनमान _____: 10:47:51 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 29:30:50 तुला
लग्न के अंश _____: 05:01:48 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: रोहिणी - 2
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: शिव
करण _____: तैत्तिल
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: वा-वासुदेव
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1919	कार्तिक	24
पंजाबी	संवत : 2054	कार्तिक	30
बंगाली	सन् : 1404	कार्तिक	29
तमिल	संवत : 2054	आइपसी	30
केरल	कोल्लम : 1173	तुलम	30
नेपाली	संवत : 2054	कार्तिक	30
चैत्रादि	संवत : 2054	मार्गशीर्ष	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2054	कार्तिक	कृष्ण 1

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 1
तिथि समाप्ति काल _____: 17:12:04
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: कृतिका
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 14:58:58 घंटे
जन्म योग _____: रोहिणी
सूर्योदय कालीन योग _____: परिघ
योग समाप्ति काल _____: 21:26:37 घंटे
जन्म योग _____: शिव
सूर्योदय कालीन करण _____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 17:12:04 घंटे
जन्म करण _____: तैत्तिल
भयात _____: 17:07:34
भभोग _____: 56:37:37
भोग्य दशा काल _____: चंद्र 6 वर्ष 11 मा 12 दि

घात चक्र

मास _____: मार्गशीर्ष
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: हस्त
योग _____: शुक्ल
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: वृष
सूर्य _____: वृश्चिक
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: धनु
बुध _____: कन्या
गुरु _____: मकर
शुक्र _____: मकर
शनि _____: तुला
राहु _____: मकर

Astro Arun Pandit Private Limited

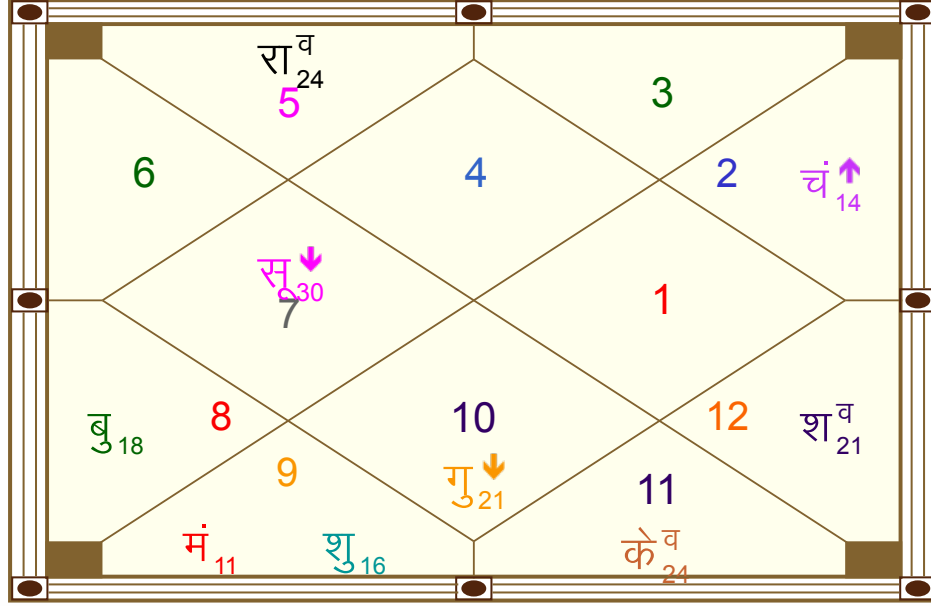
Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

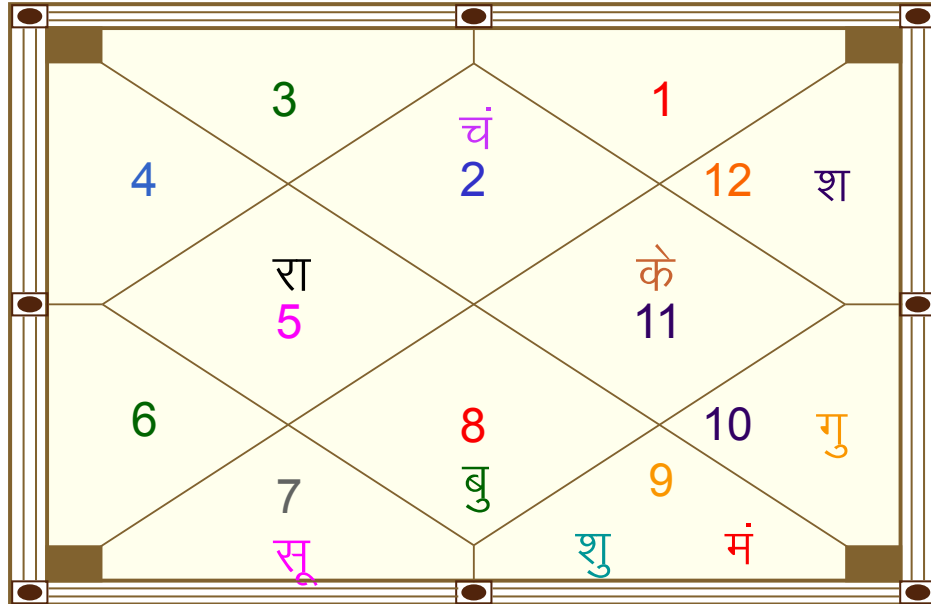
www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Astro Arun Pandit Private Limited

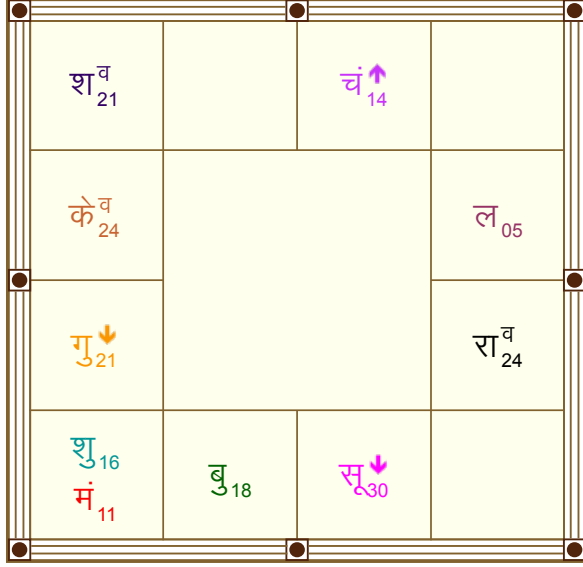
Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

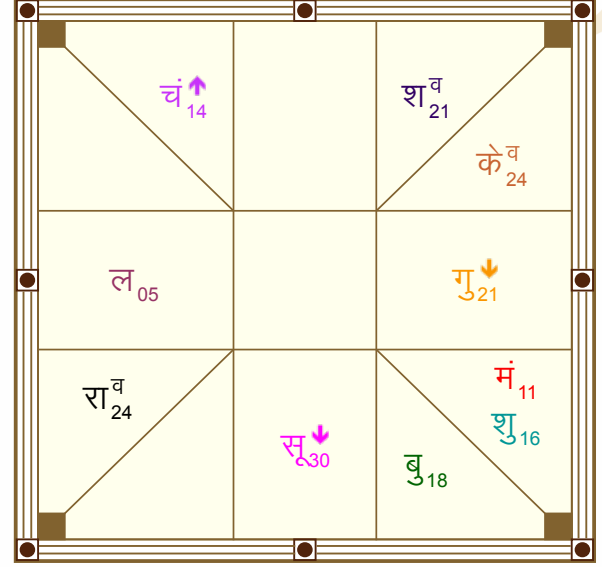
www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली



लग्न कुण्डली



विंशोत्तरी

चन्द्र 6वर्ष 11मा 12दि

चन्द्र

15/11/1997

30/10/2114

चन्द्र	28/10/2004
मंगल	29/10/2011
राहु	28/10/2029
गुरु	28/10/2045
शनि	28/10/2064
बुध	28/10/2081
केतु	28/10/2088
शुक्र	29/10/2108
सूर्य	30/10/2114

योगिनी

सिद्धा 4वर्ष 10मा 11दि

भद्रिका

27/09/2020

27/09/2025

भद्रिका	08/06/2021
उल्का	08/04/2022
सिद्धा	29/03/2023
संकटा	08/05/2024
मंगला	28/06/2024
पिंगला	07/10/2024
धान्या	08/03/2025
भ्रामरी	27/09/2025

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	05:01:48	309:14:30	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	---
सूर्य			तुला	29:30:50	01:00:26	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	चंद्र	नीच राशि
चंद्र			वृष	14:03:59	14:11:49	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	मूलत्रिकोण
मंगल			धनु	11:02:29	00:45:28	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	मित्र राशि
बुध			वृश्चि	17:41:44	01:24:36	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	सम राशि
गुरु			मक	20:37:36	00:07:05	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	नीच राशि
शुक्र			धनु	16:11:38	00:55:48	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	सूर्य	सम राशि
शनि	व		मीन	20:32:20	00:03:06	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	सम राशि
राहु	व		सिंह	23:34:55	00:11:04	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	23:34:55	00:11:04	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			मक	11:20:57	00:01:37	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	मंगल	---
नेप			मक	03:44:41	00:01:13	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	---
प्लूटो			वृश्चि	11:10:26	00:02:20	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	चंद्र	---
दशम भाव			मीन	27:41:35	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	गुरु	--

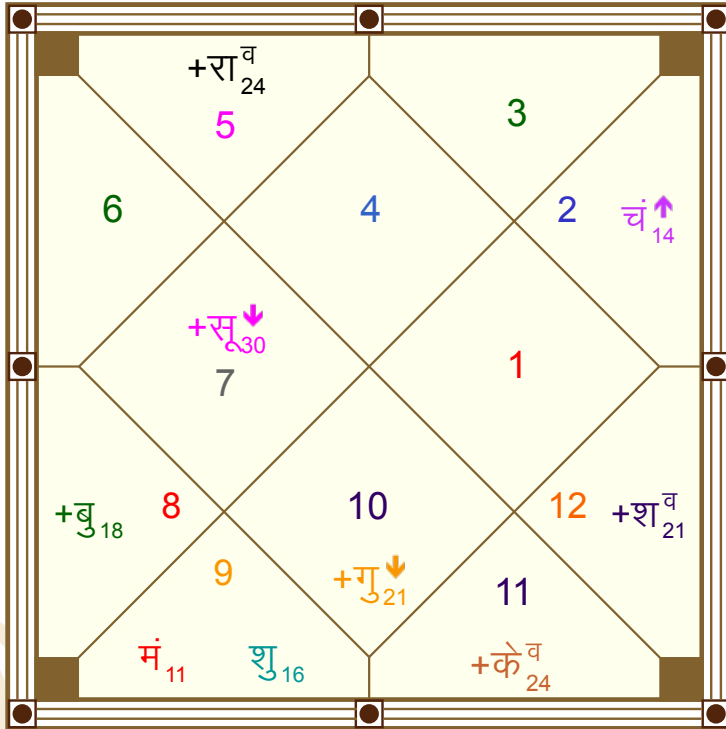
व - वकी स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

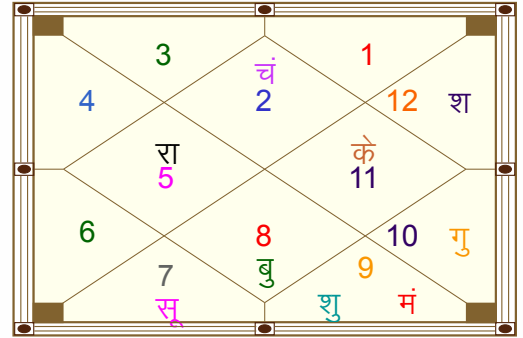
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:33

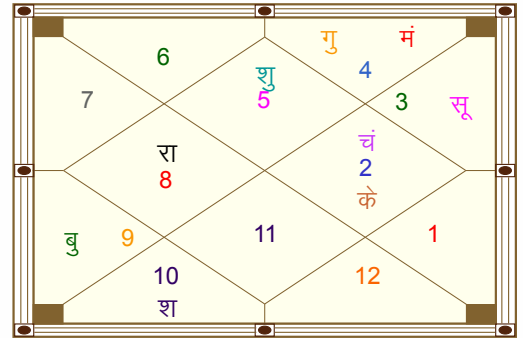
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	
1	मिथुन	18:48:26
2	कर्क	18:48:26
3	सिंह	16:21:42
4	कन्या	13:54:57
5	तुला	13:54:57
6	वृश्चिक	16:21:42
7	धनु	18:48:26
8	मकर	18:48:26
9	कुम्भ	16:21:42
10	मीन	13:54:57
11	मेष	13:54:57
12	वृष	16:21:42

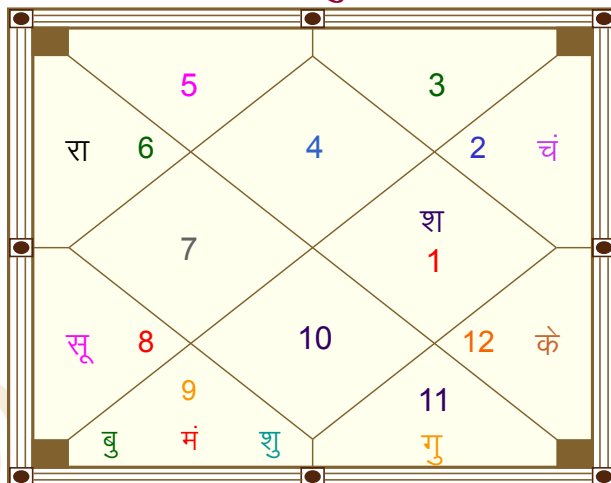
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	05:01:48
2	कर्क	28:39:38
3	सिंह	25:56:02
4	कन्या	27:41:35
5	वृश्चिक	01:51:19
6	धनु	04:49:57
7	मकर	05:01:48
8	मकर	28:39:38
9	कुम्भ	25:56:02
10	मीन	27:41:35
11	वृष	01:51:19
12	मिथुन	04:49:57

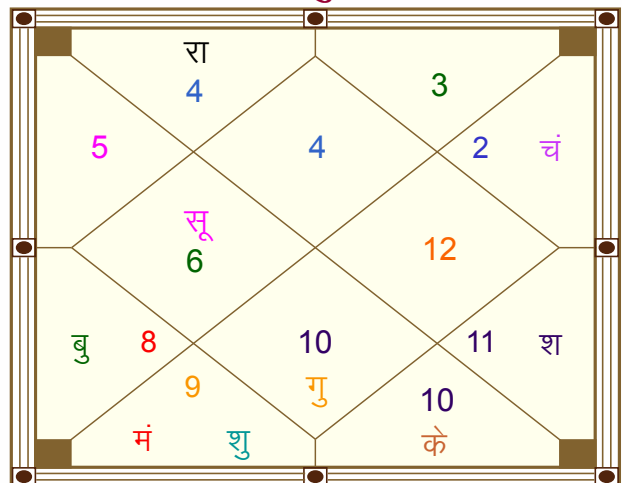
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

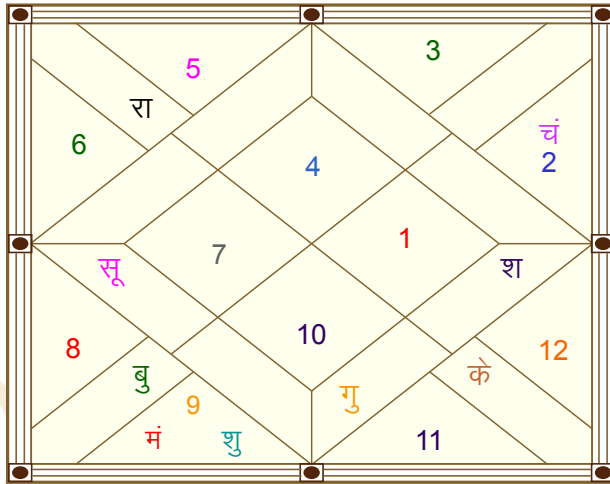
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	कारक					अवस्था	
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	मृत	भीत	नृत्यलिप्सा	1.08	7 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	युवा	स्वस्थ	उपवेशन	16.89	37 %
मंगल	कलत्र	भ्रातृ	कुमार	मुदित	नृत्यलिप्सा	4.93	37 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	युवा	शक्त	नृत्यलिप्सा	3.91	80 %
गुरु	अमात्य	धन	कुमार	भीत	निद्रा	0.73	75 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	युवा	शक्त	नृत्यलिप्सा	4.22	26 %
शनि	भ्रातृ	आयु	कुमार	शान्त	शयन	0.98	42 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	खल	आगमन	0.00	47 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	47 %
कुल						32.75	

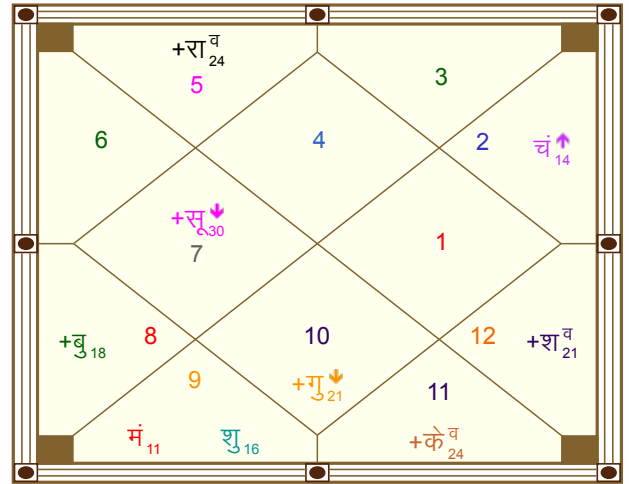
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



लग्न-चलित



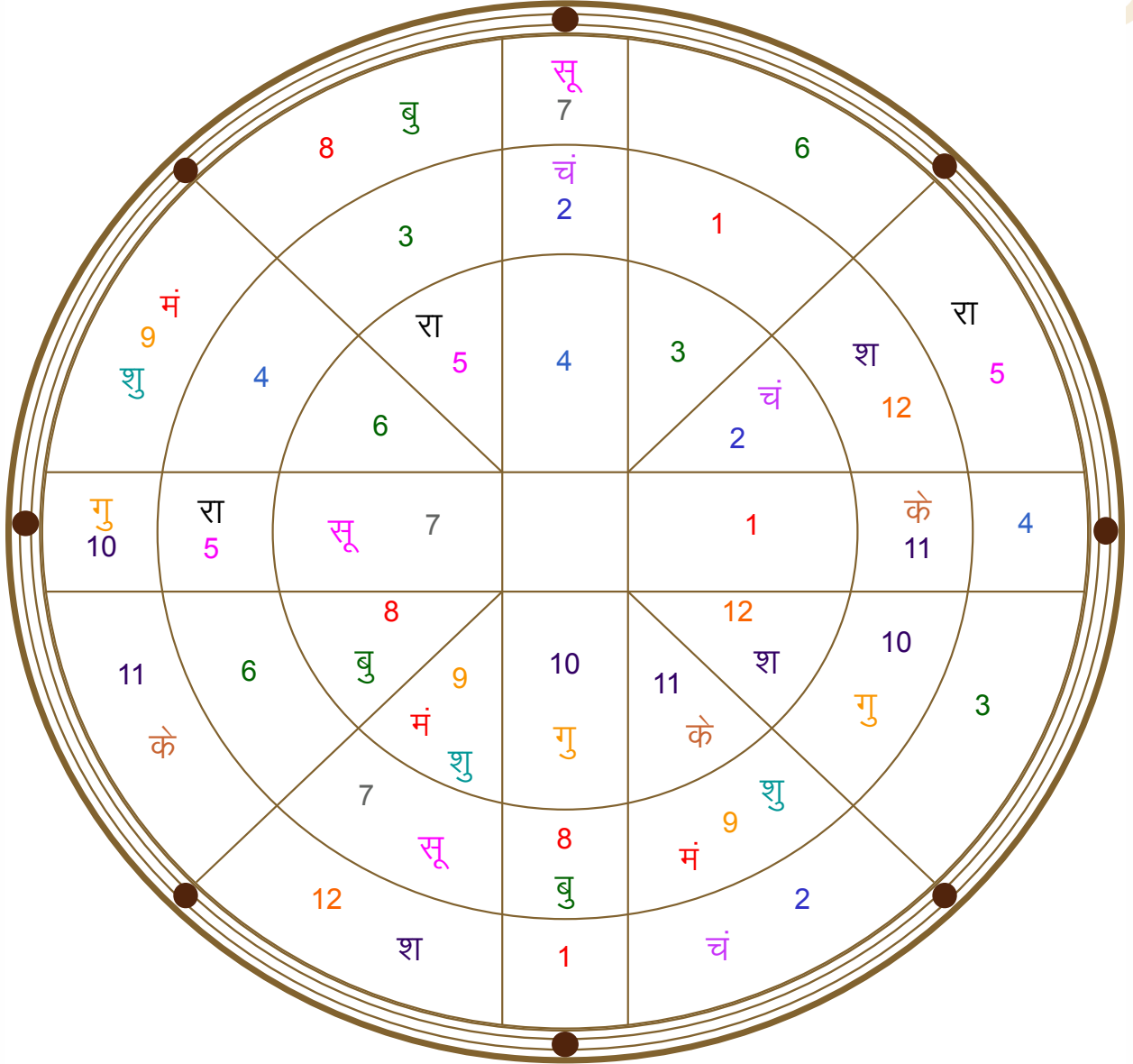
Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र, गुरु—
2	चंद्र, गुरु— राहु,
3	सूर्य—
4	सूर्य, बुध, शनि—
5	मंगल— बुध+ शनि,
6	सूर्य— मंगल, गुरु— शुक्र+ राहु, केतु—
7	सूर्य, गुरु, शनि— केतु,
8	मंगल, शनि— केतु,
9	शनि,
10	सूर्य— गुरु— केतु—
11	चंद्र+ गुरु, शुक्र, राहु—
12	बुध, शनि—

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	3- 4, 6- 7, 10-
चंद्र	1, 2, 11+
मंगल	5- 6, 8,
बुध	4, 5+ 12,
गुरु	1- 2- 6- 7, 10- 11,
शुक्र	6+ 11,
शनि	4- 5, 7- 8- 9, 12-
राहु	2, 6, 11-
केतु	6- 7, 8, 10-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	चन्द्र
राशि नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
राशि स्वामी	शुक्र
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	शनि
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

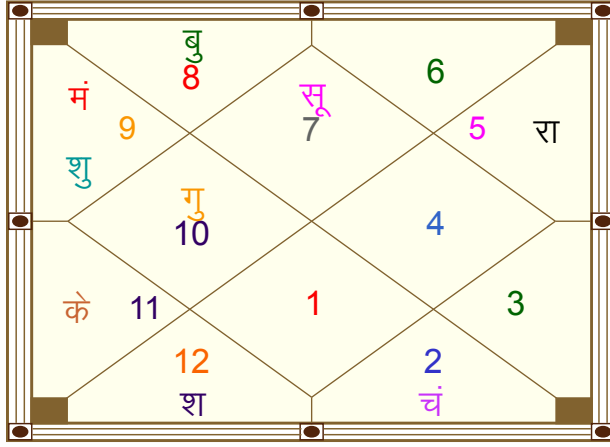
+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

षोडशवर्ग चक्र

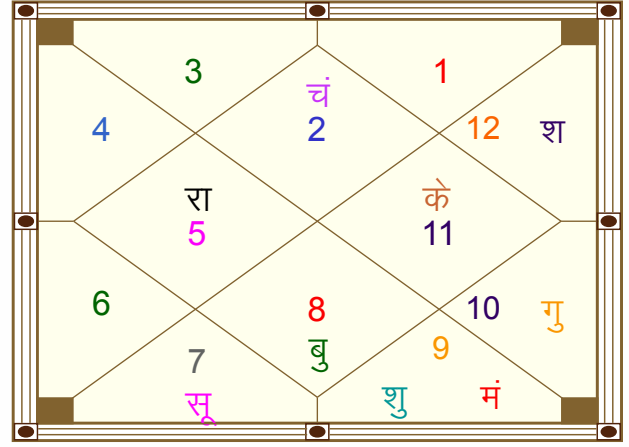
वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली



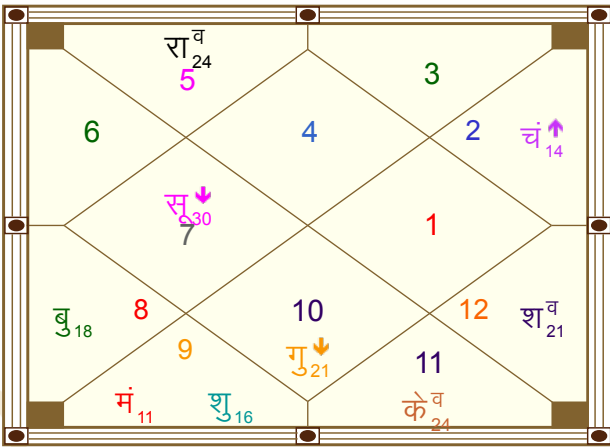
आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली



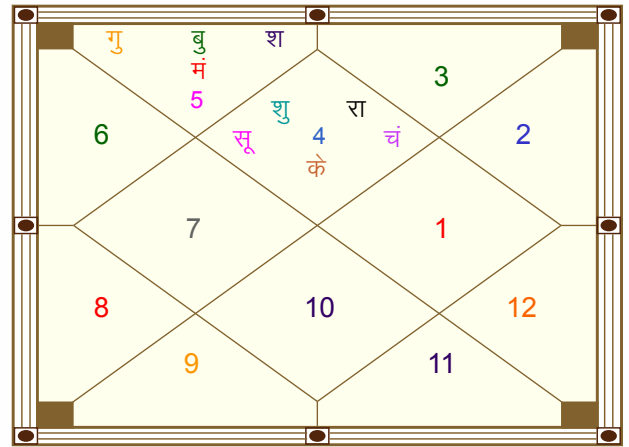
मनोबलविचारः

लग्न कुंडली



देह विचारः

होरा कुंडली



सम्पदाविचारः

Astro Arun Pandit Private Limited

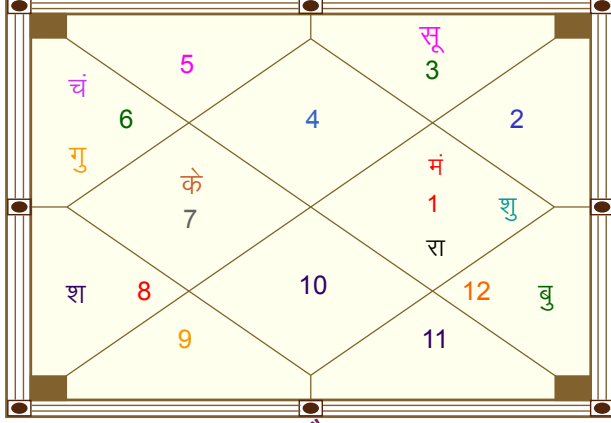
Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

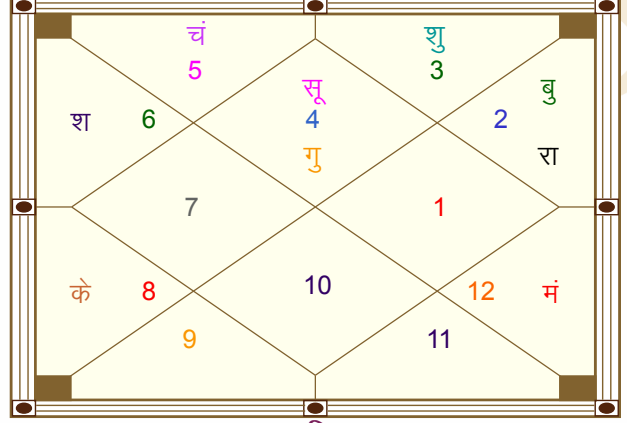
www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

षोडशवर्ग चक्र

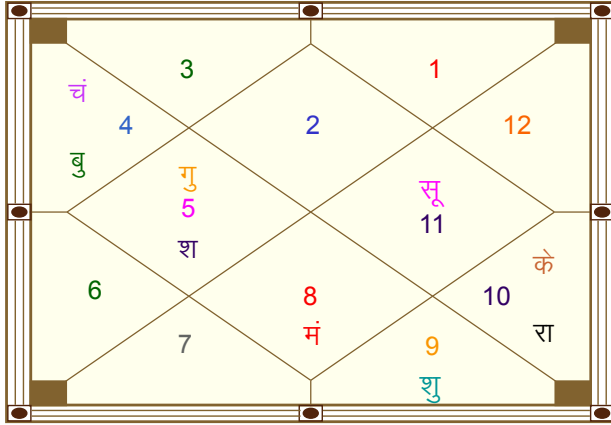
द्रेष्काण कुंडली



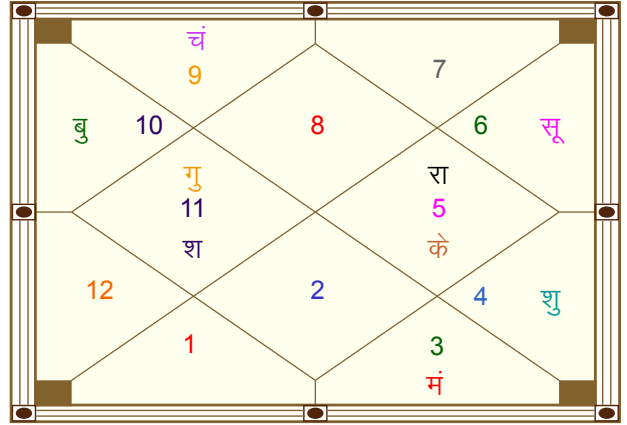
चतुर्थाश कुंडली



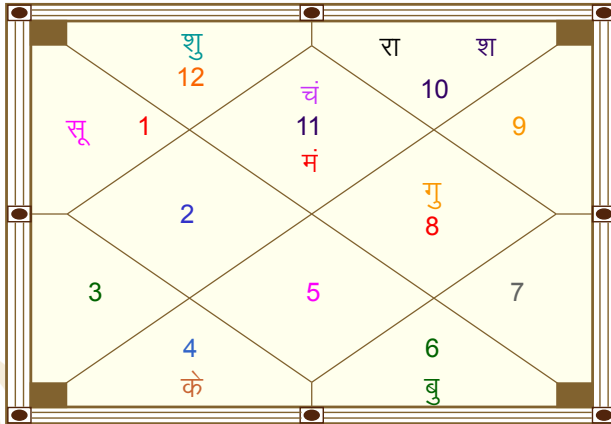
भ्रातृसौख्यम
पंचमांश कुंडली



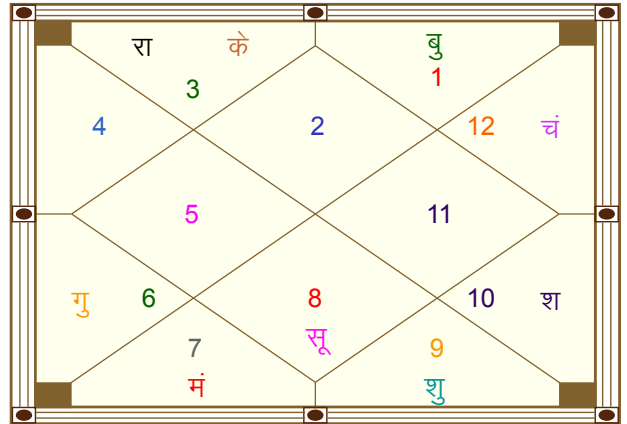
भाग्यविचारः
षष्ठांश कुंडली



ज्ञानविचारः
सप्तमांश कुंडली



रिपुज्ञानम्
अष्टमांश कुंडली



पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

आयुविचारः

Astro Arun Pandit Private Limited

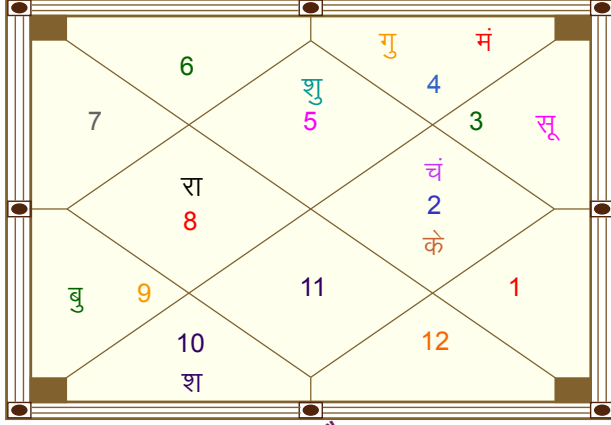
Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

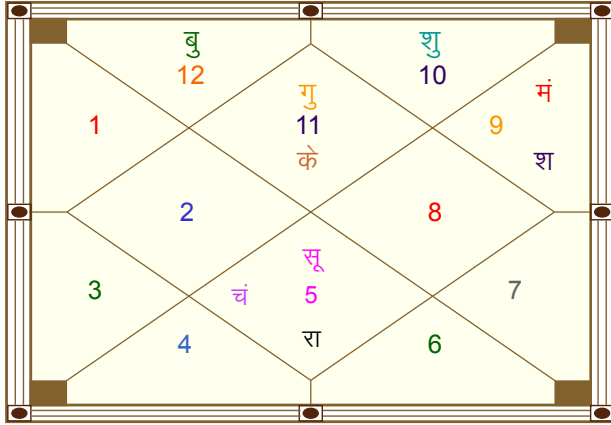
www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

षोडशवर्ग चक्र

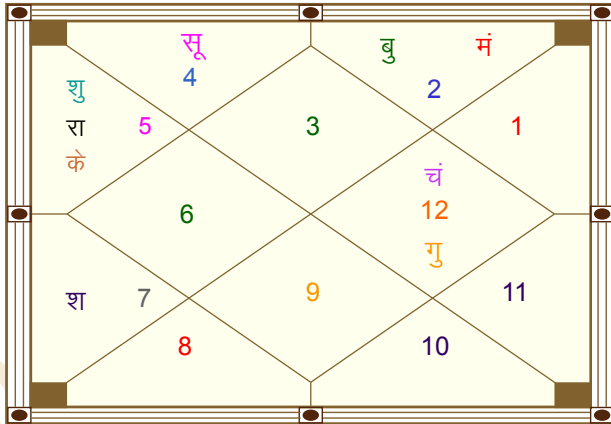
नवमांश कुंडली



कलत्र सौख्यम
एकादशांश कुंडली

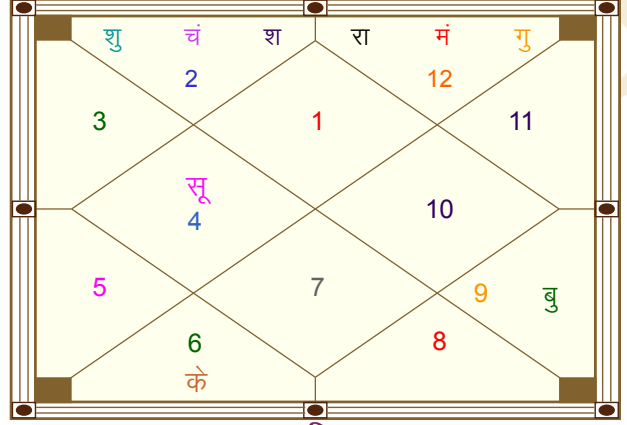


लाभविचारः
षोडशांश कुंडली

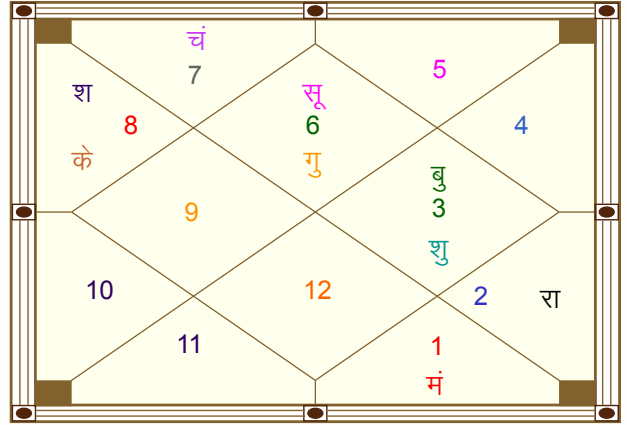


वाहनसुखविचारः

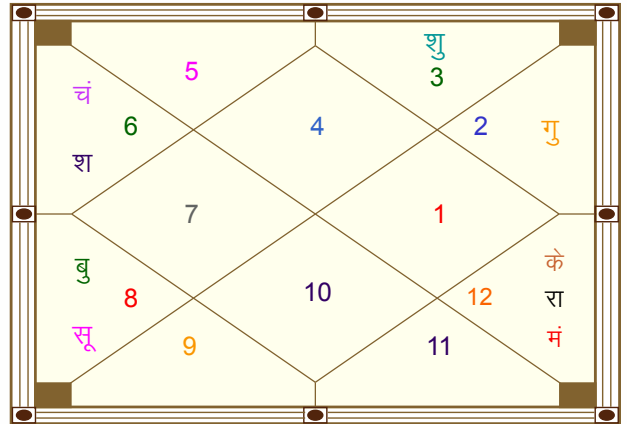
दशमांश कुंडली



राज्यविचारः
द्वादशांश कुंडली



पितृसौख्यम
विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्

Astro Arun Pandit Private Limited

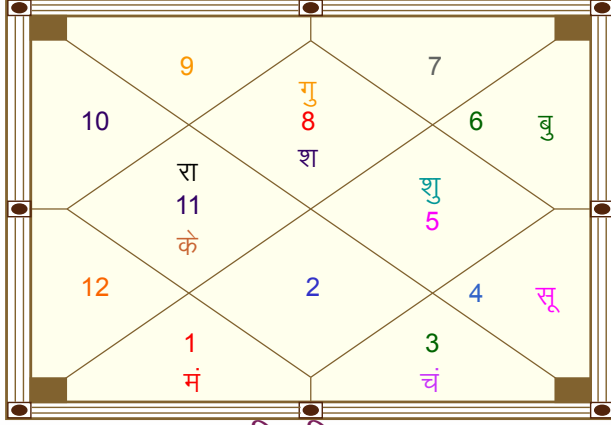
Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

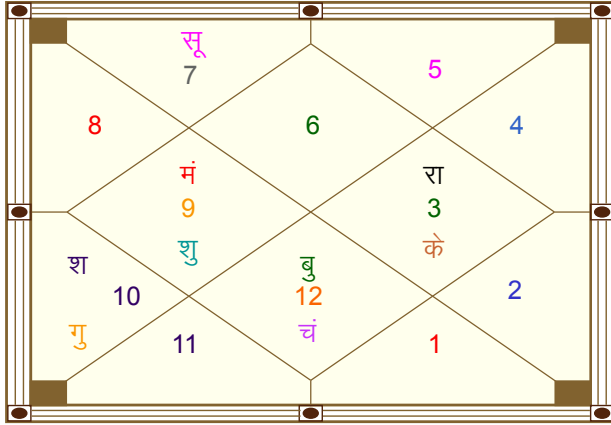
www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

षोडशवर्ग चक्र

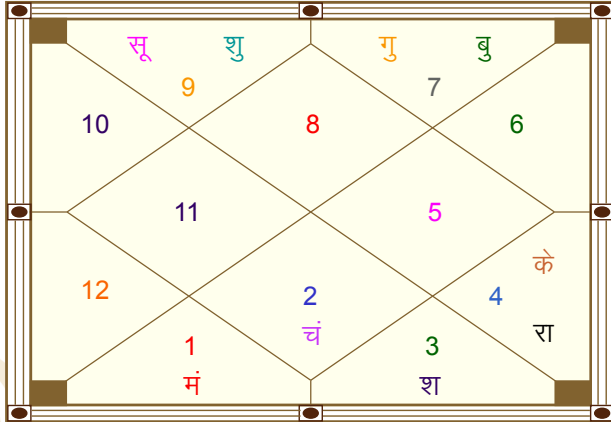
चतुर्विंशश कुंडली



विद्याविचारः
त्रिंशश कुंडली

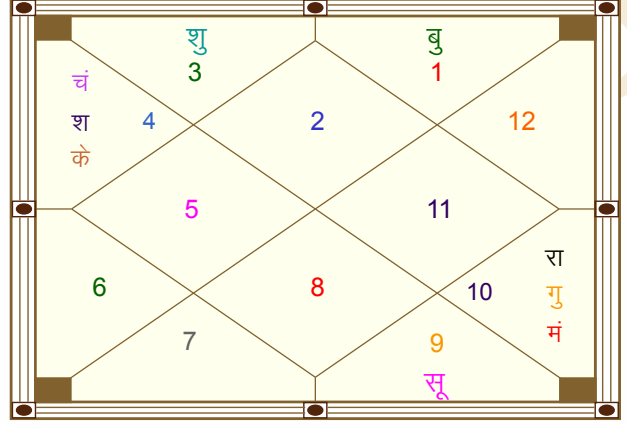


अरिष्टज्ञानम्
अक्षवेदांश कुंडली

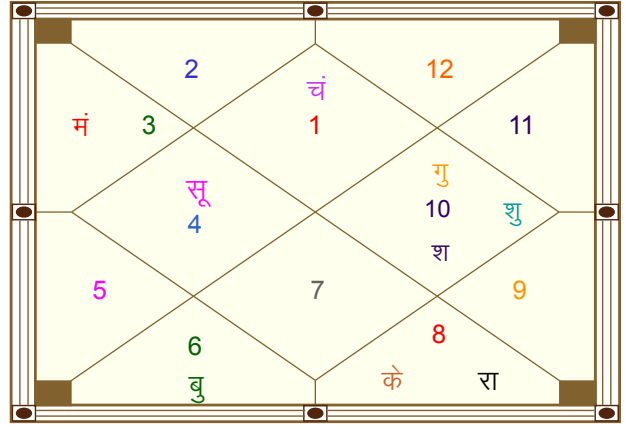


सर्वास्थितिविचारः

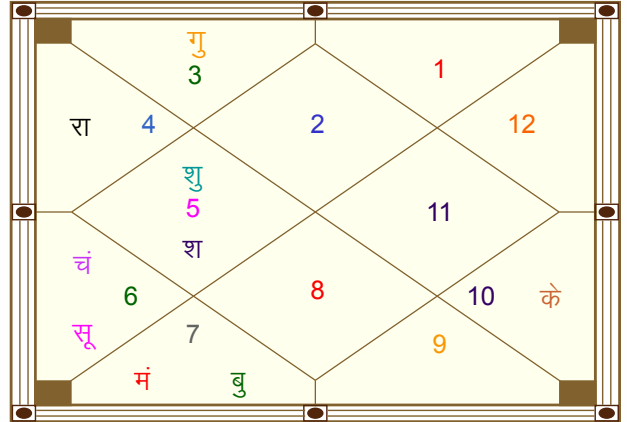
सप्तविंशश कुंडली



बलाबलज्ञानम्
खवेदांश कुंडली



शुभाशुभज्ञानम्
षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कर्क	तुला	वृष	धनु	वृश्चि	मक	धनु	मीन	सिंह	कुंभ
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	कर्क	मिथु	कन्या	मेष	मीन	कन्या	मेष	वृश्चि	मेष	तुला
चतुर्थांश	कर्क	कर्क	सिंह	मीन	वृष	कर्क	मिथु	कन्या	वृष	वृश्चि
सप्तमांश	कुंभ	मेष	कुंभ	कुंभ	कन्या	वृश्चि	मीन	मक	मक	कर्क
नवमांश	सिंह	मिथु	वृष	कर्क	धनु	कर्क	सिंह	मक	वृश्चि	वृष
दशमांश	मेष	कर्क	वृष	मीन	धनु	मीन	वृष	वृष	मीन	कन्या
द्वादशांश	कन्या	कन्या	तुला	मेष	मिथु	कन्या	मिथु	वृश्चि	वृष	वृश्चि
षोडशांश	मिथु	कर्क	मीन	वृष	वृष	मीन	सिंह	तुला	सिंह	सिंह
विंशांश	कर्क	वृश्चि	कन्या	मीन	वृश्चि	वृष	मिथु	कन्या	मीन	मीन
चतुर्विंशांश	वृश्चि	कर्क	मिथु	मेष	कन्या	वृश्चि	सिंह	वृश्चि	कुंभ	कुंभ
सप्तविंशांश	वृष	धनु	कर्क	मक	मेष	मक	मिथु	कर्क	मक	कर्क
त्रिंशांश	कन्या	तुला	मीन	धनु	मीन	मक	धनु	मक	मिथु	मिथु
खवेदांश	मेष	कर्क	मेष	मिथु	कन्या	मक	मक	मक	वृश्चि	वृश्चि
अक्षवेदांश	वृश्चि	धनु	वृष	मेष	तुला	तुला	धनु	मिथु	कर्क	कर्क
षष्ट्यंश	वृष	कन्या	कन्या	तुला	तुला	मिथु	सिंह	सिंह	कर्क	मक

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ----	1 ----	1 ----	1 ----
चन्द्र	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
मंगल	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	5 कन्दुक
बुध	1 ----	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
गुरु	1 ----	1 ----	3 उत्तम	4 नागपुष्प
शुक्र	0 ----	1 ----	2 पारिजात	2 भेदक
शनि	2 किंसुक	3 व्यंजन	4 गोपुर	5 कन्दुक
राहु	1 ----	1 ----	1 ----	1 ----
केतु	0 ----	0 ----	0 ----	1 ----

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.75	8.90	16.60	15.80	12.55	11.45	14.00	8.00	14.65
सप्तवर्ग	13.38	9.75	16.33	16.43	13.30	11.98	14.75	8.38	14.05
दशवर्ग	12.98	9.55	13.90	16.95	13.83	12.25	12.58	9.40	12.18
षोडशवर्ग	12.93	9.15	13.40	16.70	13.43	12.23	13.13	8.98	12.20

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	7	56	44	39	5	26	10
सप्तवर्गज बल	90	109	150	143	98	81	122
ओजयुग्मक बल	30	30	15	15	0	0	0
केन्द्र बल	60	30	15	30	60	15	15
द्रेष्काण बल	0	0	0	15	0	0	0
कुल स्थान बल	187	225	224	242	163	122	147
कुल दिग्बल	11	15	24	16	5	34	35
नतोन्नत बल	10	50	50	60	10	10	50
पक्ष बल	5	110	5	55	55	55	5
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	0	0	0	0	0	0	45
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	12	2	0	58	9	0	23
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	27	162	55	174	239	126	122
कुल चेष्टाबल	0	0	19	28	29	41	48
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	0	4	5	7	1	5	5
कुल षट्बल	284	459	344	492	472	370	365
रूप षट्बल	4.7	7.6	5.7	8.2	7.9	6.2	6.1
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	0.9	1.3	1.1	1.2	1.2	1.1	1.2
संबंधित पद	7	1	5	4	3	6	2

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	8.92	55.73	28.67	33.13	12.34	32.80	21.62
कष्ट फल	50.56	4.23	25.48	25.83	41.04	25.44	24.95

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	459	284	492	492	344	472	365	365	472	472	370	492
भावदिग्बल	30	20	40	30	40	10	30	10	10	0	50	50
भावदृष्टि बल	52	74	54	47	8	6	-1	24	37	39	50	69
कुल भाव बल	541	378	586	569	393	488	394	398	519	511	470	611
रूप भाव बल	9.0	6.3	9.8	9.5	6.5	8.1	6.6	6.6	8.6	8.5	7.8	10.2
संबंधित पद	4	12	2	3	11	7	10	9	5	6	8	1

Astro Arun Pandit Private Limited

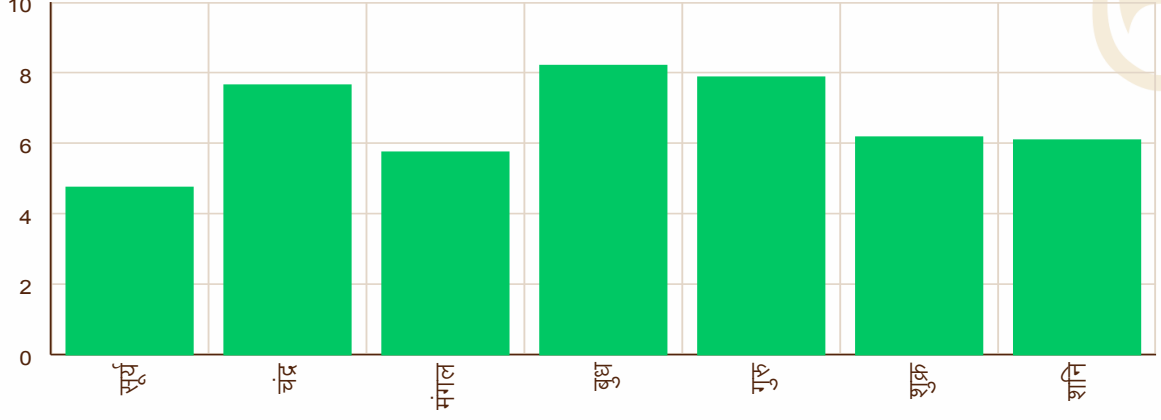
Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

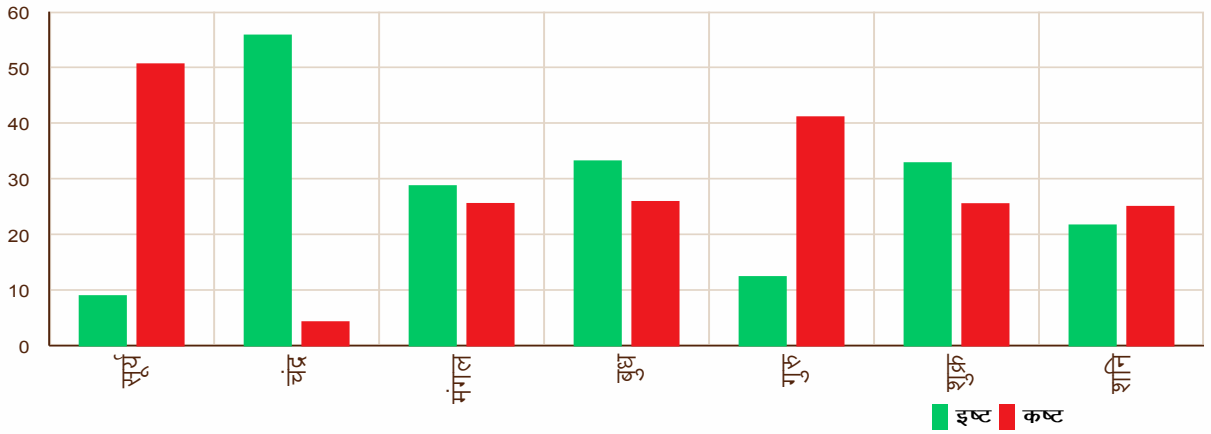
www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

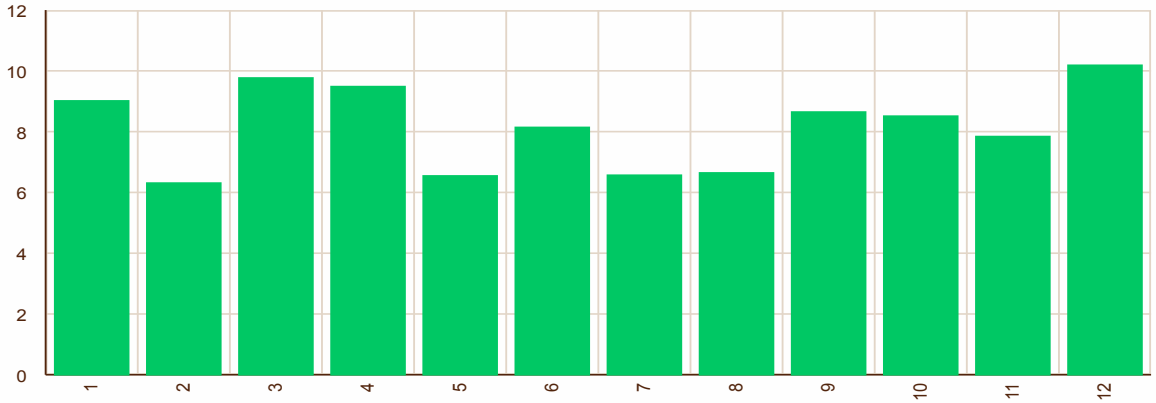
रूप षट्बल



इष्ट - कष्ट फल



रूप भाव बल



Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	6	2	5	3	3	6	4	2	2	1	1	39
गुरु	5	4	3	6	6	4	5	5	4	6	3	5	56
मंगल	2	2	3	5	1	4	5	3	5	3	1	5	39
सूर्य	4	4	6	4	3	5	6	4	3	4	1	4	48
शुक्र	3	6	2	5	6	6	5	4	3	4	3	5	52
बुध	4	1	5	4	7	4	6	3	6	4	4	6	54
चंद्र	5	6	2	4	5	4	4	3	2	5	5	4	49
बिन्दु	27	29	23	33	31	30	37	26	25	28	18	30	337
रेखा	29	27	33	23	25	26	19	30	31	28	38	26	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	4	1	4	1	1	5	3	0	0	0	0	21
गुरु	1	0	0	1	2	0	2	0	0	2	0	0	8
मंगल	1	0	2	2	0	2	4	0	4	1	0	2	18
सूर्य	1	0	5	0	0	1	5	0	0	0	0	0	12
शुक्र	0	2	0	1	3	2	3	0	0	0	1	1	13
बुध	0	0	1	1	3	3	2	0	2	3	0	3	18
चंद्र	3	2	0	1	3	0	2	0	0	1	3	1	16
रेखा	8	8	9	10	12	9	23	3	6	7	4	7	106

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	4	0	4	1	0	5	3	0	0	0	0	17
गुरु	1	0	0	1	2	0	2	0	0	2	0	0	8
मंगल	1	0	0	2	0	0	4	0	4	1	0	2	14
सूर्य	1	0	4	0	0	1	5	0	0	0	0	0	11
शुक्र	0	2	0	1	3	2	3	0	0	0	1	1	13
बुध	0	0	1	1	3	2	2	0	2	3	0	3	17
चंद्र	3	2	0	1	3	0	2	0	0	1	2	1	15
रेखा	6	8	5	10	12	5	23	3	6	7	3	7	95

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	79	128	108	135	55	108	125
ग्रह पिंड	25	35	100	85	30	30	60
शोध्य पिंड	104	163	208	220	85	138	185

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

सूर्य का अष्टकवर्ग

3	6		
5	6	4	3
6	7	4	1
4	8	10	12
9	4	11	4
3		1	

31	23		
30	6	33	3
37	7	27	1
26	8	10	12
9	28	11	30
25		18	

चंद्र का अष्टकवर्ग

5	2		
4	6	4	3
4	7	5	1
3	8	10	12
9	5	11	4
2		5	

मंगल का अष्टकवर्ग

1	3		
4	6	5	3
5	7	2	1
3	8	10	12
9	3	11	5
5		1	

बुध का अष्टकवर्ग

7	5		
4	6	4	3
6	7	4	1
3	8	10	12
9	4	11	6
6		4	

गुरु का अष्टकवर्ग

6	3		
4	6	6	3
5	7	5	1
5	8	10	12
9	6	11	5
4		3	

शुक्र का अष्टकवर्ग

6	2		
6	6	5	3
5	7	3	1
4	8	10	12
9	4	11	5
3		3	

शनि का अष्टकवर्ग

3	2		
3	6	5	3
6	7	4	1
4	8	10	12
9	2	11	1
2		1	

लग्न का अष्टकवर्ग

4	3		
5	6	4	3
3	7	5	1
2	8	10	12
9	4	11	4
6		5	

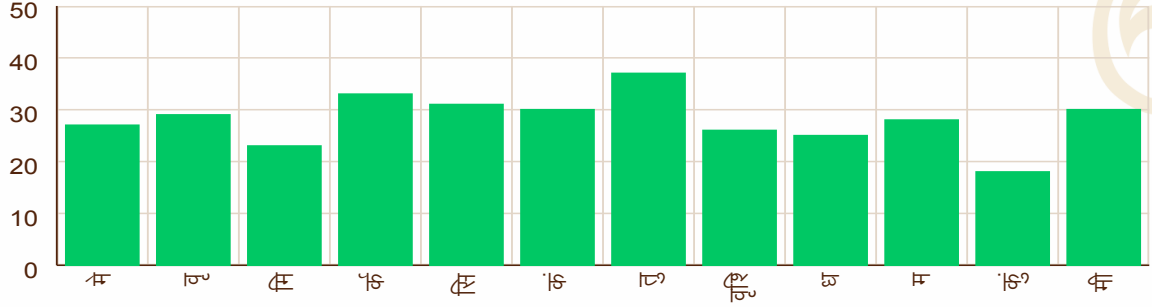
Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

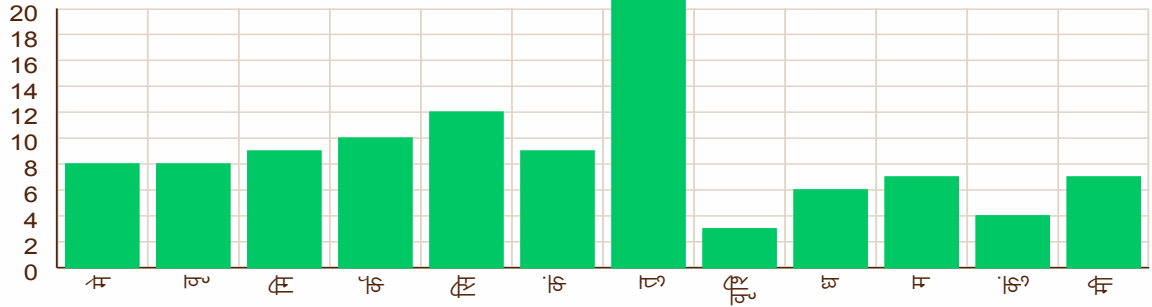
+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

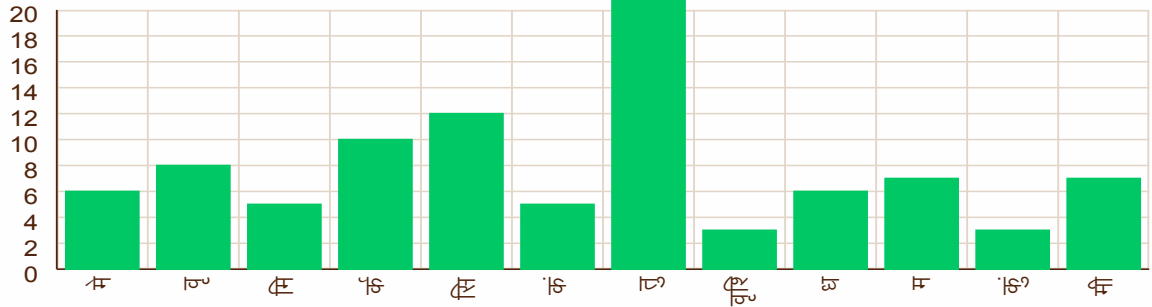
अष्टकवर्ग ग्राफ सर्वाष्टकवर्ग



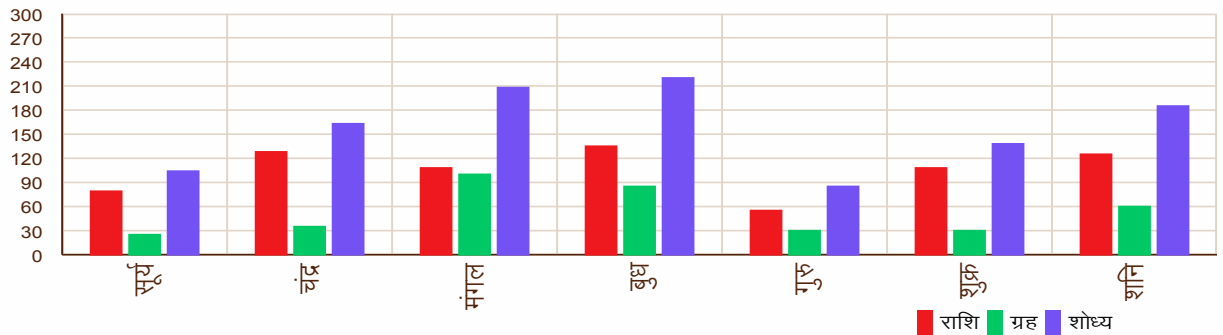
त्रिकोण शोधन के पश्चात् अष्टकवर्ग



एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् अष्टकवर्ग



शोध्य पिंड



Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 6 वर्ष 11 मास 12 दिन

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
15/11/1997	28/10/2004	29/10/2011	28/10/2029	28/10/2045
28/10/2004	29/10/2011	28/10/2029	28/10/2045	28/10/2064
00/00/0000	मंगल 26/03/2005	राहु 11/07/2014	गुरु 16/12/2031	शनि 31/10/2048
00/00/0000	राहु 14/04/2006	गुरु 04/12/2016	शनि 29/06/2034	बुध 11/07/2051
15/11/1997	गुरु 21/03/2007	शनि 10/10/2019	बुध 04/10/2036	केतु 19/08/2052
गुरु 28/01/1999	शनि 28/04/2008	बुध 29/04/2022	केतु 10/09/2037	शुक्र 20/10/2055
शनि 28/08/2000	बुध 26/04/2009	केतु 17/05/2023	शुक्र 11/05/2040	सूर्य 01/10/2056
बुध 28/01/2002	केतु 22/09/2009	शुक्र 17/05/2026	सूर्य 27/02/2041	चंद्र 02/05/2058
केतु 29/08/2002	शुक्र 22/11/2010	सूर्य 11/04/2027	चंद्र 29/06/2042	मंगल 11/06/2059
शुक्र 28/04/2004	सूर्य 30/03/2011	चंद्र 10/10/2028	मंगल 05/06/2043	राहु 17/04/2062
सूर्य 28/10/2004	चंद्र 29/10/2011	मंगल 28/10/2029	राहु 28/10/2045	गुरु 28/10/2064

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
28/10/2064	28/10/2081	28/10/2088	29/10/2108	30/10/2114
28/10/2081	28/10/2088	29/10/2108	30/10/2114	00/00/0000
बुध 27/03/2067	केतु 26/03/2082	शुक्र 28/02/2092	सूर्य 16/02/2109	चंद्र 30/08/2115
केतु 23/03/2068	शुक्र 27/05/2083	सूर्य 27/02/2093	चंद्र 17/08/2109	मंगल 30/03/2116
शुक्र 22/01/2071	सूर्य 01/10/2083	चंद्र 29/10/2094	मंगल 23/12/2109	राहु 29/09/2117
सूर्य 28/11/2071	चंद्र 01/05/2084	मंगल 29/12/2095	राहु 17/11/2110	गुरु 16/11/2117
चंद्र 29/04/2073	मंगल 28/09/2084	राहु 28/12/2098	गुरु 05/09/2111	00/00/0000
मंगल 26/04/2074	राहु 16/10/2085	गुरु 29/08/2101	शनि 17/08/2112	00/00/0000
राहु 12/11/2076	गुरु 22/09/2086	शनि 29/10/2104	बुध 23/06/2113	00/00/0000
गुरु 18/02/2079	शनि 01/11/2087	बुध 30/08/2107	केतु 29/10/2113	00/00/0000
शनि 28/10/2081	बुध 28/10/2088	केतु 29/10/2108	शुक्र 30/10/2114	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 6 वर्ष 11 मा 21 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
15/11/1997		28/01/1999		28/08/2000		28/01/2002		29/08/2002	
28/01/1999		28/08/2000		28/01/2002		29/08/2002		28/04/2004	
गुरु	02/12/1997	शनि	29/04/1999	बुध	09/11/2000	केतु	09/02/2002	शुक्र	08/12/2002
शनि	17/02/1998	बुध	20/07/1999	केतु	10/12/2000	शुक्र	17/03/2002	सूर्य	08/01/2003
बुध	27/04/1998	केतु	23/08/1999	शुक्र	06/03/2001	सूर्य	27/03/2002	चंद्र	27/02/2003
केतु	25/05/1998	शुक्र	27/11/1999	सूर्य	01/04/2001	चंद्र	14/04/2002	मंगल	04/04/2003
शुक्र	14/08/1998	सूर्य	26/12/1999	चंद्र	14/05/2001	मंगल	26/04/2002	राहु	04/07/2003
सूर्य	08/09/1998	चंद्र	13/02/2000	मंगल	13/06/2001	राहु	28/05/2002	गुरु	23/09/2003
चंद्र	18/10/1998	मंगल	17/03/2000	राहु	30/08/2001	गुरु	26/06/2002	शनि	29/12/2003
मंगल	16/11/1998	राहु	12/06/2000	गुरु	07/11/2001	शनि	29/07/2002	बुध	24/03/2004
राहु	28/01/1999	गुरु	28/08/2000	शनि	28/01/2002	बुध	29/08/2002	केतु	28/04/2004
चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
28/04/2004		28/10/2004		26/03/2005		14/04/2006		21/03/2007	
28/10/2004		26/03/2005		14/04/2006		21/03/2007		28/04/2008	
सूर्य	08/05/2004	मंगल	06/11/2004	राहु	23/05/2005	गुरु	29/05/2006	शनि	24/05/2007
चंद्र	23/05/2004	राहु	28/11/2004	गुरु	13/07/2005	शनि	22/07/2006	बुध	20/07/2007
मंगल	02/06/2004	गुरु	18/12/2004	शनि	12/09/2005	बुध	08/09/2006	केतु	13/08/2007
राहु	30/06/2004	शनि	11/01/2005	बुध	05/11/2005	केतु	28/09/2006	शुक्र	19/10/2007
गुरु	24/07/2004	बुध	01/02/2005	केतु	27/11/2005	शुक्र	24/11/2006	सूर्य	08/11/2007
शनि	22/08/2004	केतु	09/02/2005	शुक्र	30/01/2006	सूर्य	11/12/2006	चंद्र	12/12/2007
बुध	17/09/2004	शुक्र	06/03/2005	सूर्य	18/02/2006	चंद्र	09/01/2007	मंगल	05/01/2008
केतु	28/09/2004	सूर्य	14/03/2005	चंद्र	22/03/2006	मंगल	28/01/2007	राहु	05/03/2008
शुक्र	28/10/2004	चंद्र	26/03/2005	मंगल	14/04/2006	राहु	21/03/2007	गुरु	28/04/2008
मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
28/04/2008		26/04/2009		22/09/2009		22/11/2010		30/03/2011	
26/04/2009		22/09/2009		22/11/2010		30/03/2011		29/10/2011	
बुध	19/06/2008	केतु	04/05/2009	शुक्र	02/12/2009	सूर्य	28/11/2010	चंद्र	16/04/2011
केतु	10/07/2008	शुक्र	29/05/2009	सूर्य	23/12/2009	चंद्र	09/12/2010	मंगल	29/04/2011
शुक्र	08/09/2008	सूर्य	06/06/2009	चंद्र	28/01/2010	मंगल	16/12/2010	राहु	31/05/2011
सूर्य	26/09/2008	चंद्र	18/06/2009	मंगल	21/02/2010	राहु	05/01/2011	गुरु	28/06/2011
चंद्र	26/10/2008	मंगल	27/06/2009	राहु	26/04/2010	गुरु	22/01/2011	शनि	01/08/2011
मंगल	17/11/2008	राहु	19/07/2009	गुरु	22/06/2010	शनि	11/02/2011	बुध	31/08/2011
राहु	10/01/2009	गुरु	08/08/2009	शनि	29/08/2010	बुध	01/03/2011	केतु	13/09/2011
गुरु	27/02/2009	शनि	01/09/2009	बुध	28/10/2010	केतु	08/03/2011	शुक्र	18/10/2011
शनि	26/04/2009	बुध	22/09/2009	केतु	22/11/2010	शुक्र	30/03/2011	सूर्य	29/10/2011

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु 29/10/2011 11/07/2014		राहु - गुरु 11/07/2014 04/12/2016		राहु - शनि 04/12/2016 10/10/2019		राहु - बुध 10/10/2019 29/04/2022		राहु - केतु 29/04/2022 17/05/2023	
राहु	25/03/2012	गुरु	05/11/2014	शनि	17/05/2017	बुध	19/02/2020	केतु	21/05/2022
गुरु	03/08/2012	शनि	24/03/2015	बुध	12/10/2017	केतु	14/04/2020	शुक्र	24/07/2022
शनि	06/01/2013	बुध	26/07/2015	केतु	12/12/2017	शुक्र	16/09/2020	सूर्य	12/08/2022
बुध	26/05/2013	केतु	15/09/2015	शुक्र	03/06/2018	सूर्य	02/11/2020	चंद्र	13/09/2022
केतु	23/07/2013	शुक्र	08/02/2016	सूर्य	25/07/2018	चंद्र	18/01/2021	मंगल	06/10/2022
शुक्र	03/01/2014	सूर्य	23/03/2016	चंद्र	20/10/2018	मंगल	14/03/2021	राहु	02/12/2022
सूर्य	21/02/2014	चंद्र	04/06/2016	मंगल	20/12/2018	राहु	31/07/2021	गुरु	22/01/2023
चंद्र	14/05/2014	मंगल	25/07/2016	राहु	25/05/2019	गुरु	02/12/2021	शनि	24/03/2023
मंगल	11/07/2014	राहु	04/12/2016	गुरु	10/10/2019	शनि	29/04/2022	बुध	17/05/2023
राहु - शुक्र 17/05/2023 17/05/2026		राहु - सूर्य 17/05/2026 11/04/2027		राहु - चंद्र 11/04/2027 10/10/2028		राहु - मंगल 10/10/2028 28/10/2029		गुरु - गुरु 28/10/2029 16/12/2031	
शुक्र	16/11/2023	सूर्य	03/06/2026	चंद्र	27/05/2027	मंगल	01/11/2028	गुरु	09/02/2030
सूर्य	10/01/2024	चंद्र	30/06/2026	मंगल	27/06/2027	राहु	29/12/2028	शनि	13/06/2030
चंद्र	10/04/2024	मंगल	19/07/2026	राहु	18/09/2027	गुरु	18/02/2029	बुध	01/10/2030
मंगल	13/06/2024	राहु	06/09/2026	गुरु	30/11/2027	शनि	20/04/2029	केतु	15/11/2030
राहु	24/11/2024	गुरु	20/10/2026	शनि	24/02/2028	बुध	13/06/2029	शुक्र	25/03/2031
गुरु	20/04/2025	शनि	11/12/2026	बुध	12/05/2028	केतु	05/07/2029	सूर्य	03/05/2031
शनि	10/10/2025	बुध	27/01/2027	केतु	13/06/2028	शुक्र	07/09/2029	चंद्र	07/07/2031
बुध	14/03/2026	केतु	15/02/2027	शुक्र	12/09/2028	सूर्य	26/09/2029	मंगल	22/08/2031
केतु	17/05/2026	शुक्र	11/04/2027	सूर्य	10/10/2028	चंद्र	28/10/2029	राहु	16/12/2031
गुरु - शनि 16/12/2031 29/06/2034		गुरु - बुध 29/06/2034 04/10/2036		गुरु - केतु 04/10/2036 10/09/2037		गुरु - शुक्र 10/09/2037 11/05/2040		गुरु - सूर्य 11/05/2040 27/02/2041	
शनि	11/05/2032	बुध	24/10/2034	केतु	24/10/2036	शुक्र	19/02/2038	सूर्य	25/05/2040
बुध	19/09/2032	केतु	11/12/2034	शुक्र	19/12/2036	सूर्य	09/04/2038	चंद्र	19/06/2040
केतु	12/11/2032	शुक्र	28/04/2035	सूर्य	05/01/2037	चंद्र	29/06/2038	मंगल	06/07/2040
शुक्र	15/04/2033	सूर्य	09/06/2035	चंद्र	03/02/2037	मंगल	25/08/2038	राहु	18/08/2040
सूर्य	01/06/2033	चंद्र	17/08/2035	मंगल	23/02/2037	राहु	18/01/2039	गुरु	26/09/2040
चंद्र	17/08/2033	मंगल	04/10/2035	राहु	15/04/2037	गुरु	28/05/2039	शनि	12/11/2040
मंगल	10/10/2033	राहु	05/02/2036	गुरु	30/05/2037	शनि	29/10/2039	बुध	23/12/2040
राहु	25/02/2034	गुरु	26/05/2036	शनि	23/07/2037	बुध	15/03/2040	केतु	09/01/2041
गुरु	29/06/2034	शनि	04/10/2036	बुध	10/09/2037	केतु	11/05/2040	शुक्र	27/02/2041

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र 27/02/2041 29/06/2042	गुरु - मंगल 29/06/2042 05/06/2043	गुरु - राहु 05/06/2043 28/10/2045	शनि - शनि 28/10/2045 31/10/2048	शनि - बुध 31/10/2048 11/07/2051
चंद्र 08/04/2041 मंगल 07/05/2041 राहु 19/07/2041 गुरु 22/09/2041 शनि 08/12/2041 बुध 15/02/2042 केतु 15/03/2042 शुक्र 04/06/2042 सूर्य 29/06/2042	मंगल 19/07/2042 राहु 08/09/2042 गुरु 23/10/2042 शनि 16/12/2042 बुध 03/02/2043 केतु 22/02/2043 शुक्र 20/04/2043 सूर्य 07/05/2043 चंद्र 05/06/2043	राहु 14/10/2043 गुरु 08/02/2044 शनि 26/06/2044 बुध 28/10/2044 केतु 18/12/2044 शुक्र 13/05/2045 सूर्य 26/06/2045 चंद्र 07/09/2045 मंगल 28/10/2045	शनि 20/04/2046 बुध 23/09/2046 केतु 26/11/2046 शुक्र 28/05/2047 सूर्य 22/07/2047 चंद्र 22/10/2047 मंगल 25/12/2047 राहु 07/06/2048 गुरु 31/10/2048	बुध 19/03/2049 केतु 16/05/2049 शुक्र 27/10/2049 सूर्य 15/12/2049 चंद्र 07/03/2050 मंगल 03/05/2050 राहु 27/09/2050 गुरु 06/02/2051 शनि 11/07/2051
शनि - केतु 11/07/2051 19/08/2052	शनि - शुक्र 19/08/2052 20/10/2055	शनि - सूर्य 20/10/2055 01/10/2056	शनि - चंद्र 01/10/2056 02/05/2058	शनि - मंगल 02/05/2058 11/06/2059
केतु 04/08/2051 शुक्र 10/10/2051 सूर्य 31/10/2051 चंद्र 03/12/2051 मंगल 27/12/2051 राहु 26/02/2052 गुरु 20/04/2052 शनि 23/06/2052 बुध 19/08/2052	शुक्र 28/02/2053 सूर्य 27/04/2053 चंद्र 01/08/2053 मंगल 07/10/2053 राहु 30/03/2054 गुरु 31/08/2054 शनि 02/03/2055 बुध 13/08/2055 केतु 20/10/2055	सूर्य 06/11/2055 चंद्र 05/12/2055 मंगल 25/12/2055 राहु 15/02/2056 गुरु 01/04/2056 शनि 26/05/2056 बुध 15/07/2056 केतु 04/08/2056 शुक्र 01/10/2056	चंद्र 18/11/2056 मंगल 22/12/2056 राहु 18/03/2057 गुरु 03/06/2057 शनि 03/09/2057 बुध 24/11/2057 केतु 28/12/2057 शुक्र 03/04/2058 सूर्य 02/05/2058	मंगल 26/05/2058 राहु 25/07/2058 गुरु 17/09/2058 शनि 20/11/2058 बुध 17/01/2059 केतु 09/02/2059 शुक्र 18/04/2059 सूर्य 08/05/2059 चंद्र 11/06/2059
शनि - राहु 11/06/2059 17/04/2062	शनि - गुरु 17/04/2062 28/10/2064	बुध - बुध 28/10/2064 27/03/2067	बुध - केतु 27/03/2067 23/03/2068	बुध - शुक्र 23/03/2068 22/01/2071
राहु 14/11/2059 गुरु 01/04/2060 शनि 13/09/2060 बुध 07/02/2061 केतु 09/04/2061 शुक्र 29/09/2061 सूर्य 20/11/2061 चंद्र 15/02/2062 मंगल 17/04/2062	गुरु 18/08/2062 शनि 12/01/2063 बुध 23/05/2063 केतु 16/07/2063 शुक्र 17/12/2063 सूर्य 01/02/2064 चंद्र 18/04/2064 मंगल 11/06/2064 राहु 28/10/2064	बुध 02/03/2065 केतु 22/04/2065 शुक्र 16/09/2065 सूर्य 30/10/2065 चंद्र 11/01/2066 मंगल 03/03/2066 राहु 13/07/2066 गुरु 07/11/2066 शनि 27/03/2067	केतु 17/04/2067 शुक्र 16/06/2067 सूर्य 04/07/2067 चंद्र 03/08/2067 मंगल 25/08/2067 राहु 18/10/2067 गुरु 05/12/2067 शनि 01/02/2068 बुध 23/03/2068	शुक्र 11/09/2068 सूर्य 02/11/2068 चंद्र 27/01/2069 मंगल 29/03/2069 राहु 31/08/2069 गुरु 16/01/2070 शनि 29/06/2070 बुध 22/11/2070 केतु 22/01/2071

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य 22/01/2071 28/11/2071		बुध - चंद्र 28/11/2071 29/04/2073		बुध - मंगल 29/04/2073 26/04/2074		बुध - राहु 26/04/2074 12/11/2076		बुध - गुरु 12/11/2076 18/02/2079	
सूर्य	06/02/2071	चंद्र	10/01/2072	मंगल	20/05/2073	राहु	13/09/2074	गुरु	03/03/2077
चंद्र	04/03/2071	मंगल	10/02/2072	राहु	13/07/2073	गुरु	15/01/2075	शनि	12/07/2077
मंगल	22/03/2071	राहु	27/04/2072	गुरु	30/08/2073	शनि	11/06/2075	बुध	06/11/2077
राहु	08/05/2071	गुरु	05/07/2072	शनि	27/10/2073	बुध	21/10/2075	केतु	24/12/2077
गुरु	18/06/2071	शनि	25/09/2072	बुध	17/12/2073	केतु	14/12/2075	शुक्र	11/05/2078
शनि	06/08/2071	बुध	07/12/2072	केतु	07/01/2074	शुक्र	18/05/2076	सूर्य	22/06/2078
बुध	19/09/2071	केतु	07/01/2073	शुक्र	09/03/2074	सूर्य	03/07/2076	चंद्र	30/08/2078
केतु	07/10/2071	शुक्र	03/04/2073	सूर्य	27/03/2074	चंद्र	19/09/2076	मंगल	17/10/2078
शुक्र	28/11/2071	सूर्य	29/04/2073	चंद्र	26/04/2074	मंगल	12/11/2076	राहु	18/02/2079
बुध - शनि 18/02/2079 28/10/2081		केतु - केतु 28/10/2081 26/03/2082		केतु - शुक्र 26/03/2082 27/05/2083		केतु - सूर्य 27/05/2083 01/10/2083		केतु - चंद्र 01/10/2083 01/05/2084	
शनि	24/07/2079	केतु	06/11/2081	शुक्र	05/06/2082	सूर्य	02/06/2083	चंद्र	19/10/2083
बुध	10/12/2079	शुक्र	01/12/2081	सूर्य	27/06/2082	चंद्र	13/06/2083	मंगल	01/11/2083
केतु	05/02/2080	सूर्य	08/12/2081	चंद्र	01/08/2082	मंगल	20/06/2083	राहु	03/12/2083
शुक्र	18/07/2080	चंद्र	21/12/2081	मंगल	26/08/2082	राहु	09/07/2083	गुरु	31/12/2083
सूर्य	05/09/2080	मंगल	29/12/2081	राहु	29/10/2082	गुरु	26/07/2083	शनि	03/02/2084
चंद्र	26/11/2080	राहु	21/01/2082	गुरु	25/12/2082	शनि	15/08/2083	बुध	04/03/2084
मंगल	23/01/2081	गुरु	10/02/2082	शनि	02/03/2083	बुध	03/09/2083	केतु	16/03/2084
राहु	19/06/2081	शनि	05/03/2082	बुध	02/05/2083	केतु	10/09/2083	शुक्र	21/04/2084
गुरु	28/10/2081	बुध	26/03/2082	केतु	27/05/2083	शुक्र	01/10/2083	सूर्य	01/05/2084
केतु - मंगल 01/05/2084 28/09/2084		केतु - राहु 28/09/2084 16/10/2085		केतु - गुरु 16/10/2085 22/09/2086		केतु - शनि 22/09/2086 01/11/2087		केतु - बुध 01/11/2087 28/10/2088	
मंगल	10/05/2084	राहु	24/11/2084	गुरु	01/12/2085	शनि	25/11/2086	बुध	22/12/2087
राहु	01/06/2084	गुरु	14/01/2085	शनि	24/01/2086	बुध	21/01/2087	केतु	12/01/2088
गुरु	21/06/2084	शनि	16/03/2085	बुध	13/03/2086	केतु	14/02/2087	शुक्र	13/03/2088
शनि	15/07/2084	बुध	09/05/2085	केतु	02/04/2086	शुक्र	23/04/2087	सूर्य	31/03/2088
बुध	05/08/2084	केतु	01/06/2085	शुक्र	29/05/2086	सूर्य	13/05/2087	चंद्र	30/04/2088
केतु	14/08/2084	शुक्र	04/08/2085	सूर्य	15/06/2086	चंद्र	15/06/2087	मंगल	21/05/2088
शुक्र	08/09/2084	सूर्य	23/08/2085	चंद्र	13/07/2086	मंगल	09/07/2087	राहु	14/07/2088
सूर्य	15/09/2084	चंद्र	24/09/2085	मंगल	02/08/2086	राहु	08/09/2087	गुरु	01/09/2088
चंद्र	28/09/2084	मंगल	16/10/2085	राहु	22/09/2086	गुरु	01/11/2087	शनि	28/10/2088

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र 28/10/2088 28/02/2092	शुक्र - सूर्य 28/02/2092 27/02/2093	शुक्र - चंद्र 27/02/2093 29/10/2094	शुक्र - मंगल 29/10/2094 29/12/2095	शुक्र - राहु 29/12/2095 28/12/2098
शुक्र 19/05/2089 सूर्य 19/07/2089 चंद्र 28/10/2089 मंगल 07/01/2090 राहु 09/07/2090 गुरु 18/12/2090 शनि 29/06/2091 बुध 18/12/2091 केतु 28/02/2092	सूर्य 17/03/2092 चंद्र 16/04/2092 मंगल 08/05/2092 राहु 01/07/2092 गुरु 19/08/2092 शनि 16/10/2092 बुध 07/12/2092 केतु 28/12/2092 शुक्र 27/02/2093	चंद्र 18/04/2093 मंगल 24/05/2093 राहु 23/08/2093 गुरु 12/11/2093 शनि 17/02/2094 बुध 14/05/2094 केतु 19/06/2094 शुक्र 28/09/2094 सूर्य 29/10/2094	मंगल 22/11/2094 राहु 25/01/2095 गुरु 23/03/2095 शनि 30/05/2095 बुध 29/07/2095 केतु 23/08/2095 शुक्र 02/11/2095 सूर्य 23/11/2095 चंद्र 29/12/2095	राहु 10/06/2096 गुरु 03/11/2096 शनि 26/04/2097 बुध 28/09/2097 केतु 01/12/2097 शुक्र 01/06/2098 सूर्य 26/07/2098 चंद्र 25/10/2098 मंगल 28/12/2098
शुक्र - गुरु 28/12/2098 29/08/2101	शुक्र - शनि 29/08/2101 29/10/2104	शुक्र - बुध 29/10/2104 30/08/2107	शुक्र - केतु 30/08/2107 29/10/2108	सूर्य - सूर्य 29/10/2108 16/02/2109
गुरु 07/05/2099 शनि 08/10/2099 बुध 23/02/2100 केतु 21/04/2100 शुक्र 01/10/2100 सूर्य 18/11/2100 चंद्र 07/02/2101 मंगल 05/04/2101 राहु 29/08/2101	शनि 01/03/2102 बुध 11/08/2102 केतु 18/10/2102 शुक्र 29/04/2103 सूर्य 25/06/2103 चंद्र 30/09/2103 मंगल 06/12/2103 राहु 28/05/2104 गुरु 29/10/2104	बुध 25/03/2105 केतु 24/05/2105 शुक्र 12/11/2105 सूर्य 03/01/2106 चंद्र 30/03/2106 मंगल 30/05/2106 राहु 01/11/2106 गुरु 19/03/2107 शनि 30/08/2107	केतु 24/09/2107 शुक्र 04/12/2107 सूर्य 25/12/2107 चंद्र 30/01/2108 मंगल 23/02/2108 राहु 27/04/2108 गुरु 23/06/2108 शनि 30/08/2108 बुध 29/10/2108	सूर्य 03/11/2108 चंद्र 13/11/2108 मंगल 19/11/2108 राहु 05/12/2108 गुरु 20/12/2108 शनि 06/01/2109 बुध 22/01/2109 केतु 28/01/2109 शुक्र 16/02/2109
सूर्य - चंद्र 16/02/2109 17/08/2109	सूर्य - मंगल 17/08/2109 23/12/2109	सूर्य - राहु 23/12/2109 17/11/2110	सूर्य - गुरु 17/11/2110 05/09/2111	सूर्य - शनि 05/09/2111 17/08/2112
चंद्र 03/03/2109 मंगल 13/03/2109 राहु 10/04/2109 गुरु 04/05/2109 शनि 02/06/2109 बुध 28/06/2109 केतु 09/07/2109 शुक्र 08/08/2109 सूर्य 17/08/2109	मंगल 25/08/2109 राहु 13/09/2109 गुरु 30/09/2109 शनि 20/10/2109 बुध 07/11/2109 केतु 15/11/2109 शुक्र 06/12/2109 सूर्य 12/12/2109 चंद्र 23/12/2109	राहु 10/02/2110 गुरु 26/03/2110 शनि 17/05/2110 बुध 03/07/2110 केतु 22/07/2110 शुक्र 15/09/2110 सूर्य 01/10/2110 चंद्र 29/10/2110 मंगल 17/11/2110	गुरु 26/12/2110 शनि 10/02/2111 बुध 23/03/2111 केतु 09/04/2111 शुक्र 28/05/2111 सूर्य 12/06/2111 चंद्र 06/07/2111 मंगल 23/07/2111 राहु 05/09/2111	शनि 30/10/2111 बुध 18/12/2111 केतु 07/01/2112 शुक्र 05/03/2112 सूर्य 22/03/2112 चंद्र 20/04/2112 मंगल 11/05/2112 राहु 02/07/2112 गुरु 17/08/2112

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - शुक्र - सूर्य 16/11/2023 12:31 10/01/2024 07:25	राहु - शुक्र - चंद्र 10/01/2024 07:25 10/04/2024 14:55	राहु - शुक्र - मंगल 10/04/2024 14:55 13/06/2024 12:58	राहु - शुक्र - राहु 13/06/2024 12:58 24/11/2024 21:40
सूर्य 19/11/2023 06:16 चंद्र 23/11/2023 19:50 मंगल 27/11/2023 00:32 राहु 05/12/2023 05:46 गुरु 12/12/2023 13:06 शनि 21/12/2023 05:17 बुध 28/12/2023 23:34 केतु 01/01/2024 04:16 शुक्र 10/01/2024 07:25	चंद्र 17/01/2024 22:02 मंगल 23/01/2024 05:53 राहु 05/02/2024 22:36 गुरु 18/02/2024 02:48 शनि 03/03/2024 13:47 बुध 16/03/2024 12:15 केतु 21/03/2024 20:05 शुक्र 06/04/2024 01:20 सूर्य 10/04/2024 14:55	मंगल 14/04/2024 08:24 राहु 23/04/2024 22:31 गुरु 02/05/2024 11:03 शनि 12/05/2024 13:56 बुध 21/05/2024 15:16 केतु 25/05/2024 08:45 शुक्र 05/06/2024 00:26 सूर्य 08/06/2024 05:08 चंद्र 13/06/2024 12:58	राहु 08/07/2024 04:40 गुरु 30/07/2024 02:38 शनि 25/08/2024 03:12 बुध 17/09/2024 10:02 केतु 27/09/2024 00:09 शुक्र 24/10/2024 09:36 सूर्य 01/11/2024 14:50 चंद्र 15/11/2024 07:33 मंगल 24/11/2024 21:40
राहु - शुक्र - गुरु 24/11/2024 21:40 20/04/2025 00:04	राहु - शुक्र - शनि 20/04/2025 00:04 10/10/2025 11:55	राहु - शुक्र - बुध 10/10/2025 11:55 14/03/2026 17:28	राहु - शुक्र - केतु 14/03/2026 17:28 17/05/2026 15:31
गुरु 14/12/2024 09:11 शनि 06/01/2025 12:22 बुध 27/01/2025 05:06 केतु 04/02/2025 17:39 शुक्र 01/03/2025 02:03 सूर्य 08/03/2025 09:22 चंद्र 20/03/2025 13:34 मंगल 29/03/2025 02:06 राहु 20/04/2025 00:04	शनि 17/05/2025 11:21 बुध 11/06/2025 01:13 केतु 21/06/2025 04:07 शुक्र 20/07/2025 02:05 सूर्य 28/07/2025 18:17 चंद्र 12/08/2025 05:16 मंगल 22/08/2025 08:09 राहु 17/09/2025 08:44 गुरु 10/10/2025 11:55	बुध 01/11/2025 11:42 केतु 10/11/2025 13:02 शुक्र 06/12/2025 09:57 सूर्य 14/12/2025 04:14 चंद्र 27/12/2025 02:41 मंगल 05/01/2026 04:01 राहु 28/01/2026 10:51 गुरु 18/02/2026 03:35 शनि 14/03/2026 17:28	केतु 18/03/2026 10:57 शुक्र 29/03/2026 02:38 सूर्य 01/04/2026 07:20 चंद्र 06/04/2026 15:10 मंगल 10/04/2026 08:39 राहु 19/04/2026 22:46 गुरु 28/04/2026 11:18 शनि 08/05/2026 14:12 बुध 17/05/2026 15:31
राहु - सूर्य - सूर्य 17/05/2026 15:31 03/06/2026 01:59	राहु - सूर्य - चंद्र 03/06/2026 01:59 30/06/2026 11:26	राहु - सूर्य - मंगल 30/06/2026 11:26 19/07/2026 15:39	राहु - सूर्य - राहु 19/07/2026 15:39 06/09/2026 23:04
सूर्य 18/05/2026 11:14 चंद्र 19/05/2026 20:07 मंगल 20/05/2026 19:07 राहु 23/05/2026 06:18 गुरु 25/05/2026 10:53 शनि 28/05/2026 01:21 बुध 30/05/2026 09:14 केतु 31/05/2026 08:14 शुक्र 03/06/2026 01:59	चंद्र 05/06/2026 08:46 मंगल 06/06/2026 23:07 राहु 11/06/2026 01:45 गुरु 14/06/2026 17:24 शनि 19/06/2026 01:30 बुध 22/06/2026 22:38 केतु 24/06/2026 12:59 शुक्र 29/06/2026 02:34 सूर्य 30/06/2026 11:26	मंगल 01/07/2026 14:17 राहु 04/07/2026 11:19 गुरु 07/07/2026 00:41 शनि 10/07/2026 01:33 बुध 12/07/2026 18:44 केतु 13/07/2026 21:35 शुक्र 17/07/2026 02:17 सूर्य 18/07/2026 01:18 चंद्र 19/07/2026 15:39	राहु 27/07/2026 01:10 गुरु 02/08/2026 14:57 शनि 10/08/2026 10:19 बुध 17/08/2026 09:58 केतु 20/08/2026 07:00 शुक्र 28/08/2026 12:14 सूर्य 30/08/2026 23:25 चंद्र 04/09/2026 02:02 मंगल 06/09/2026 23:04

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - सूर्य - गुरु		राहु - सूर्य - शनि		राहु - सूर्य - बुध		राहु - सूर्य - केतु	
06/09/2026 23:04		20/10/2026 18:59		11/12/2026 20:08		27/01/2027 09:48	
20/10/2026 18:59		11/12/2026 20:08		27/01/2027 09:48		15/02/2027 14:01	
गुरु	12/09/2026 19:19	शनि	29/10/2026 00:46	बुध	18/12/2026 10:28	केतु	28/01/2027 12:39
शनि	19/09/2026 17:52	बुध	05/11/2026 09:44	केतु	21/12/2026 03:40	शुक्र	31/01/2027 17:21
बुध	25/09/2026 22:54	केतु	08/11/2026 10:36	शुक्र	28/12/2026 21:57	सूर्य	01/02/2027 16:22
केतु	28/09/2026 12:15	शुक्र	17/11/2026 02:47	सूर्य	31/12/2026 05:50	चंद्र	03/02/2027 06:43
शुक्र	05/10/2026 19:34	सूर्य	19/11/2026 17:15	चंद्र	04/01/2027 02:58	मंगल	04/02/2027 09:33
सूर्य	08/10/2026 00:10	चंद्र	24/11/2026 01:20	मंगल	06/01/2027 20:10	राहु	07/02/2027 06:35
चंद्र	11/10/2026 15:50	मंगल	27/11/2026 02:12	राहु	13/01/2027 19:49	गुरु	09/02/2027 19:57
मंगल	14/10/2026 05:12	राहु	04/12/2026 21:35	गुरु	20/01/2027 00:50	शनि	12/02/2027 20:49
राहु	20/10/2026 18:59	गुरु	11/12/2026 20:08	शनि	27/01/2027 09:48	बुध	15/02/2027 14:01
राहु - सूर्य - शुक्र		राहु - चंद्र - चंद्र		राहु - चंद्र - मंगल		राहु - चंद्र - राहु	
15/02/2027 14:01		11/04/2027 08:55		27/05/2027 00:40		27/06/2027 23:41	
11/04/2027 08:55		27/05/2027 00:40		27/06/2027 23:41		18/09/2027 04:02	
शुक्र	24/02/2027 17:10	चंद्र	15/04/2027 04:14	मंगल	28/05/2027 21:25	राहु	10/07/2027 07:33
सूर्य	27/02/2027 10:55	मंगल	17/04/2027 20:09	राहु	02/06/2027 16:28	गुरु	21/07/2027 06:31
चंद्र	04/03/2027 00:29	राहु	24/04/2027 16:31	गुरु	06/06/2027 22:44	शनि	03/08/2027 06:49
मंगल	07/03/2027 05:11	गुरु	30/04/2027 18:37	शनि	12/06/2027 00:11	बुध	14/08/2027 22:14
राहु	15/03/2027 10:25	शनि	08/05/2027 00:06	बुध	16/06/2027 12:50	केतु	19/08/2027 17:17
गुरु	22/03/2027 17:45	बुध	14/05/2027 11:20	केतु	18/06/2027 09:35	शुक्र	02/09/2027 10:00
शनि	31/03/2027 09:56	केतु	17/05/2027 03:15	शुक्र	23/06/2027 17:25	सूर्य	06/09/2027 12:37
बुध	08/04/2027 04:13	शुक्र	24/05/2027 17:53	सूर्य	25/06/2027 07:46	चंद्र	13/09/2027 08:59
केतु	11/04/2027 08:55	सूर्य	27/05/2027 00:40	चंद्र	27/06/2027 23:41	मंगल	18/09/2027 04:02
राहु - चंद्र - गुरु		राहु - चंद्र - शनि		राहु - चंद्र - बुध		राहु - चंद्र - केतु	
18/09/2027 04:02		30/11/2027 05:14		24/02/2028 23:10		12/05/2028 13:56	
30/11/2027 05:14		24/02/2028 23:10		12/05/2028 13:56		13/06/2028 12:58	
गुरु	27/09/2027 21:48	शनि	13/12/2027 22:53	बुध	06/03/2028 23:04	केतु	14/05/2028 10:41
शनि	09/10/2027 11:23	बुध	26/12/2027 05:49	केतु	11/03/2028 11:43	शुक्र	19/05/2028 18:31
बुध	19/10/2027 19:46	केतु	31/12/2027 07:16	शुक्र	24/03/2028 10:11	सूर्य	21/05/2028 08:52
केतु	24/10/2027 02:02	शुक्र	14/01/2028 18:15	सूर्य	28/03/2028 07:19	चंद्र	24/05/2028 00:47
शुक्र	05/11/2027 06:14	सूर्य	19/01/2028 02:21	चंद्र	03/04/2028 18:33	मंगल	25/05/2028 21:32
सूर्य	08/11/2027 21:53	चंद्र	26/01/2028 07:50	मंगल	08/04/2028 07:13	राहु	30/05/2028 16:35
चंद्र	14/11/2027 23:59	मंगल	31/01/2028 09:17	राहु	19/04/2028 22:38	गुरु	03/06/2028 22:51
मंगल	19/11/2027 06:16	राहु	13/02/2028 09:35	गुरु	30/04/2028 07:00	शनि	09/06/2028 00:18
राहु	30/11/2027 05:14	गुरु	24/02/2028 23:10	शनि	12/05/2028 13:56	बुध	13/06/2028 12:58

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - चंद्र - शुक्र		राहु - चंद्र - सूर्य		राहु - मंगल - मंगल		राहु - मंगल - राहु	
13/06/2028 12:58		12/09/2028 20:28		10/10/2028 05:55		01/11/2028 14:50	
12/09/2028 20:28		10/10/2028 05:55		01/11/2028 14:50		29/12/2028 03:29	
शुक्र	28/06/2028 18:13	सूर्य	14/09/2028 05:20	मंगल	11/10/2028 13:14	राहु	10/11/2028 05:56
सूर्य	03/07/2028 07:47	चंद्र	16/09/2028 12:08	राहु	14/10/2028 21:46	गुरु	17/11/2028 22:01
चंद्र	10/07/2028 22:25	मंगल	18/09/2028 02:29	गुरु	17/10/2028 21:22	शनि	27/11/2028 00:37
मंगल	16/07/2028 06:15	राहु	22/09/2028 05:06	शनि	21/10/2028 10:22	बुध	05/12/2028 04:13
राहु	29/07/2028 22:59	गुरु	25/09/2028 20:45	बुध	24/10/2028 14:26	केतु	08/12/2028 12:45
गुरु	11/08/2028 03:11	शनि	30/09/2028 04:51	केतु	25/10/2028 21:45	शुक्र	18/12/2028 02:51
शनि	25/08/2028 14:10	बुध	04/10/2028 01:59	शुक्र	29/10/2028 15:15	सूर्य	20/12/2028 23:53
बुध	07/09/2028 12:38	केतु	05/10/2028 16:20	सूर्य	30/10/2028 18:05	चंद्र	25/12/2028 18:56
केतु	12/09/2028 20:28	शुक्र	10/10/2028 05:55	चंद्र	01/11/2028 14:50	मंगल	29/12/2028 03:29
राहु - मंगल - गुरु		राहु - मंगल - शनि		राहु - मंगल - बुध		राहु - मंगल - केतु	
29/12/2028 03:29		18/02/2029 06:43		20/04/2029 00:04		13/06/2029 08:00	
18/02/2029 06:43		20/04/2029 00:04		13/06/2029 08:00		05/07/2029 16:56	
गुरु	04/01/2029 23:07	शनि	27/02/2029 21:28	बुध	27/04/2029 16:47	केतु	14/06/2029 15:20
शनि	13/01/2029 01:25	बुध	08/03/2029 11:55	केतु	30/04/2029 20:51	शुक्र	18/06/2029 08:49
बुध	20/01/2029 07:17	केतु	12/03/2029 00:56	शुक्र	09/05/2029 22:11	सूर्य	19/06/2029 11:40
केतु	23/01/2029 06:52	शुक्र	22/03/2029 03:50	सूर्य	12/05/2029 15:22	चंद्र	21/06/2029 08:24
शुक्र	31/01/2029 19:25	सूर्य	25/03/2029 04:42	चंद्र	17/05/2029 04:02	मंगल	22/06/2029 15:43
सूर्य	03/02/2029 08:46	चंद्र	30/03/2029 06:08	मंगल	20/05/2029 08:06	राहु	26/06/2029 00:16
चंद्र	07/02/2029 15:03	मंगल	02/04/2029 19:09	राहु	28/05/2029 11:41	गुरु	28/06/2029 23:51
मंगल	10/02/2029 14:38	राहु	11/04/2029 21:45	गुरु	04/06/2029 17:33	शनि	02/07/2029 12:52
राहु	18/02/2029 06:43	गुरु	20/04/2029 00:04	शनि	13/06/2029 08:00	बुध	05/07/2029 16:56
राहु - मंगल - शुक्र		राहु - मंगल - सूर्य		राहु - मंगल - चंद्र		गुरु - गुरु - गुरु	
05/07/2029 16:56		07/09/2029 14:59		26/09/2029 19:11		28/10/2029 18:13	
07/09/2029 14:59		26/09/2029 19:11		28/10/2029 18:13		09/02/2030 15:39	
शुक्र	16/07/2029 08:36	सूर्य	08/09/2029 13:59	चंद्र	29/09/2029 11:07	गुरु	11/11/2029 14:40
सूर्य	19/07/2029 13:18	चंद्र	10/09/2029 04:20	मंगल	01/10/2029 07:51	शनि	28/11/2029 01:28
चंद्र	24/07/2029 21:08	मंगल	11/09/2029 07:11	राहु	06/10/2029 02:54	बुध	12/12/2029 18:42
मंगल	28/07/2029 14:38	राहु	14/09/2029 04:13	गुरु	10/10/2029 09:11	केतु	18/12/2029 20:09
राहु	07/08/2029 04:44	गुरु	16/09/2029 17:35	शनि	15/10/2029 10:37	शुक्र	05/01/2030 03:44
गुरु	15/08/2029 17:16	शनि	19/09/2029 18:27	बुध	19/10/2029 23:17	सूर्य	10/01/2030 08:24
शनि	25/08/2029 20:10	बुध	22/09/2029 11:39	केतु	21/10/2029 20:02	चंद्र	19/01/2030 00:11
बुध	03/09/2029 21:29	केतु	23/09/2029 14:29	शुक्र	27/10/2029 03:52	मंगल	25/01/2030 01:38
केतु	07/09/2029 14:59	शुक्र	26/09/2029 19:11	सूर्य	28/10/2029 18:13	राहु	09/02/2030 15:39

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : सिद्धा 4 वर्ष 10 मास 11 दिन

सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष
15/11/1997	27/09/2002	27/09/2010	28/09/2011	27/09/2013
27/09/2002	27/09/2010	28/09/2011	27/09/2013	27/09/2016
15/11/1997	संक 08/07/2004	मंग 08/10/2010	पिंग 07/11/2011	धाय 27/12/2013
संक 28/08/1998	मंग 27/09/2004	पिंग 28/10/2010	धाय 07/01/2012	भ्राम 28/04/2014
मंग 07/11/1998	पिंग 08/03/2005	धाय 27/11/2010	भ्राम 28/03/2012	भद्रि 27/09/2014
पिंग 29/03/1999	धाय 07/11/2005	भ्राम 07/01/2011	भद्रि 08/07/2012	उल्क 29/03/2015
धाय 28/10/1999	भ्राम 27/09/2006	भद्रि 27/02/2011	उल्क 07/11/2012	सिद्ध 28/10/2015
भ्राम 07/08/2000	भद्रि 07/11/2007	उल्क 28/04/2011	सिद्ध 29/03/2013	संक 28/06/2016
भद्रि 28/07/2001	उल्क 08/03/2009	सिद्ध 09/07/2011	संक 07/09/2013	मंग 28/07/2016
उल्क 27/09/2002	सिद्ध 27/09/2010	संक 28/09/2011	मंग 27/09/2013	पिंग 27/09/2016

भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष
27/09/2016	27/09/2020	27/09/2025	28/09/2031	27/09/2038
27/09/2020	27/09/2025	28/09/2031	27/09/2038	27/09/2046
भ्राम 08/03/2017	भद्रि 08/06/2021	उल्क 27/09/2026	सिद्ध 06/02/2033	संक 08/07/2040
भद्रि 27/09/2017	उल्क 08/04/2022	सिद्ध 28/11/2027	संक 28/08/2034	मंग 27/09/2040
उल्क 29/05/2018	सिद्ध 29/03/2023	संक 29/03/2029	मंग 07/11/2034	पिंग 08/03/2041
सिद्ध 09/03/2019	संक 08/05/2024	मंग 28/05/2029	पिंग 29/03/2035	धाय 07/11/2041
संक 27/01/2020	मंग 28/06/2024	पिंग 27/09/2029	धाय 28/10/2035	भ्राम 27/09/2042
मंग 08/03/2020	पिंग 07/10/2024	धाय 29/03/2030	भ्राम 07/08/2036	भद्रि 07/11/2043
पिंग 28/05/2020	धाय 08/03/2025	भ्राम 27/11/2030	भद्रि 28/07/2037	उल्क 08/03/2045
धाय 27/09/2020	भ्राम 27/09/2025	भद्रि 28/09/2031	उल्क 27/09/2038	सिद्ध 27/09/2046

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला : चन्द्र पिंगला : सूर्य धान्या : गुरु भ्रामरी : मंगल
 भद्रिका : बुध उल्का : शनि सिद्धा : शुक्र संकटा : राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
 योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

योगिनी दशा

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
27/09/2046		28/09/2047		27/09/2049		27/09/2052		27/09/2056	
28/09/2047		27/09/2049		27/09/2052		27/09/2056		27/09/2061	
मंग	08/10/2046	पिंग	07/11/2047	धांय	27/12/2049	भ्राम	08/03/2053	भद्रि	08/06/2057
पिंग	28/10/2046	धांय	07/01/2048	भ्राम	28/04/2050	भद्रि	27/09/2053	उल्क	08/04/2058
धांय	27/11/2046	भ्राम	28/03/2048	भद्रि	27/09/2050	उल्क	29/05/2054	सिद्ध	29/03/2059
भ्राम	07/01/2047	भद्रि	08/07/2048	उल्क	29/03/2051	सिद्ध	09/03/2055	संक	08/05/2060
भद्रि	27/02/2047	उल्क	07/11/2048	सिद्ध	28/10/2051	संक	27/01/2056	मंग	28/06/2060
उल्क	28/04/2047	सिद्ध	29/03/2049	संक	28/06/2052	मंग	08/03/2056	पिंग	07/10/2060
सिद्ध	09/07/2047	संक	07/09/2049	मंग	28/07/2052	पिंग	28/05/2056	धांय	08/03/2061
संक	28/09/2047	मंग	27/09/2049	पिंग	27/09/2052	धांय	27/09/2056	भ्राम	27/09/2061
उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
27/09/2061		28/09/2067		27/09/2074		27/09/2082		28/09/2083	
28/09/2067		27/09/2074		27/09/2082		28/09/2083		27/09/2085	
उल्क	27/09/2062	सिद्ध	06/02/2069	संक	08/07/2076	मंग	08/10/2082	पिंग	07/11/2083
सिद्ध	28/11/2063	संक	28/08/2070	मंग	27/09/2076	पिंग	28/10/2082	धांय	07/01/2084
संक	29/03/2065	मंग	07/11/2070	पिंग	08/03/2077	धांय	27/11/2082	भ्राम	28/03/2084
मंग	28/05/2065	पिंग	29/03/2071	धांय	07/11/2077	भ्राम	07/01/2083	भद्रि	08/07/2084
पिंग	27/09/2065	धांय	28/10/2071	भ्राम	27/09/2078	भद्रि	27/02/2083	उल्क	07/11/2084
धांय	29/03/2066	भ्राम	07/08/2072	भद्रि	07/11/2079	उल्क	28/04/2083	सिद्ध	29/03/2085
भ्राम	27/11/2066	भद्रि	28/07/2073	उल्क	08/03/2081	सिद्ध	09/07/2083	संक	07/09/2085
भद्रि	28/09/2067	उल्क	27/09/2074	सिद्ध	27/09/2082	संक	28/09/2083	मंग	27/09/2085
धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
27/09/2085		27/09/2088		27/09/2092		27/09/2097		29/09/2103	
27/09/2088		27/09/2092		27/09/2097		29/09/2103		00/00/0000	
धांय	27/12/2085	भ्राम	08/03/2089	भद्रि	08/06/2093	उल्क	27/09/2098	सिद्ध	07/02/2105
भ्राम	28/04/2086	भद्रि	27/09/2089	उल्क	08/04/2094	सिद्ध	28/11/2099	संक	16/11/2105
भद्रि	27/09/2086	उल्क	29/05/2090	सिद्ध	29/03/2095	संक	30/03/2101		00/00/0000
उल्क	29/03/2087	सिद्ध	09/03/2091	संक	08/05/2096	मंग	29/05/2101		00/00/0000
सिद्ध	28/10/2087	संक	27/01/2092	मंग	28/06/2096	पिंग	28/09/2101		00/00/0000
संक	28/06/2088	मंग	08/03/2092	पिंग	07/10/2096	धांय	30/03/2102		00/00/0000
मंग	28/07/2088	पिंग	28/05/2092	धांय	08/03/2097	भ्राम	28/11/2102		00/00/0000
पिंग	27/09/2088	धांय	27/09/2092	भ्राम	27/09/2097	भद्रि	29/09/2103		00/00/0000

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	7
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 7
शत्रु अंक	1, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

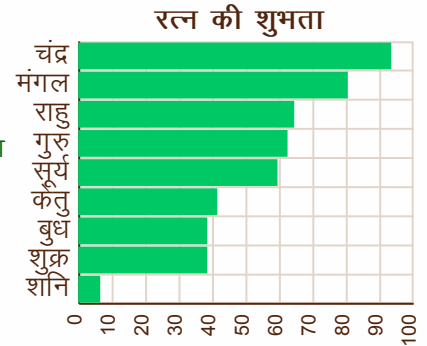
www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता क्षेत्र
मोती	चंद्र	93% धनार्जन, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	80% शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	64% धन, सुख
पुखराज	गुरु	62% दम्पति, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	59% सुख, धन
लहसुनिया	केतु	41% दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
पन्ना	बुध	38% सन्तति कष्ट, व्यय, पराक्रम हानि
हीरा	शुक्र	38% शत्रु व रोग, हानि, ग्रह कलेश
नीलम	शनि	6% नेष्ट भाग्य, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	28/10/2004	66%	100%	80%	50%	62%	38%	6%	52%	16%
मंगल	29/10/2011	66%	99%	92%	12%	69%	38%	6%	52%	52%
राहु	28/10/2029	44%	80%	67%	38%	62%	50%	19%	77%	16%
गुरु	28/10/2045	66%	99%	86%	12%	75%	12%	6%	64%	41%
शनि	28/10/2064	44%	80%	67%	50%	62%	50%	31%	70%	16%
बुध	28/10/2081	66%	80%	80%	56%	62%	50%	6%	64%	41%
केतु	28/10/2088	44%	80%	86%	38%	62%	50%	0%	52%	58%
शुक्र	29/10/2108	44%	80%	80%	50%	62%	56%	19%	70%	52%
सूर्य	30/10/2114	72%	99%	86%	38%	69%	12%	0%	52%	16%

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।

भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मोती व मूंगा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मूंगा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, पुखराज एवं माणिक्य रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया, पन्ना व हीरा रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

नीलम पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र एकादश भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न की शुभता से आपको विदेश जाना पसंद होगा। आपको महंगे वाहनों का सुख प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। रत्न शुभता से समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। मोती रत्न के प्रभाव से आपको सरकारी मामलों की विधिवत जानकारी होगी। मोती रत्न आपको सरकार की ओर से सम्मान और पद प्रतिष्ठा दे सकता है। रत्न शुभता से आप मिलनसार बनेंगे। व्यापार के माध्यम से आपको मनोकूल लाभ होगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में चंद्र लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश चंद्र का रत्न मोती धारण कर आप अपने जीवन को दीर्घकालिन बना सकते हैं। मोती रत्न आपके स्वास्थ्य को अनुकूल, तेज एवं स्फूर्ति दे सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप को प्रयासों में सफलता, यश-सम्मान एवं भावुकता में कमी कर सकता है। रत्न शुभता से आप व्यवहारिक बनेंगे तथा आपका मनोबल उच्च रहेगा। मोती रत्न आपको यशस्वी बनाकर व्यवसाय में सफलता दे सकता है। इसके साथ ही रत्न की शुभता आपके दाम्पत्य जीवन को सुखी रख सकती है। आपके स्वभाव की अस्थिरता को नियंत्रित करने में भी मोती रत्न अहम भूमिका निभा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातःकाल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौ माय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे— चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे — सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल षष्ठ भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपकी सभी इच्छाओं की पूर्ति करेगा। आप क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे और आप तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी होंगे। रत्न प्रभाव से आप अपने विरोधियों को पराजित करेंगे। मूंगा रत्न की शुभता आपमें धैर्य शक्ति का विकास करेगा। नौकरी के क्षेत्र में आपकी नेतृत्व शक्ति का विकास होगा। यह रत्न आपकी विवेकशक्ति में बढ़ोतरी करेगा। व्यवसाय की जगह आप नौकरी करने को अधिक वरीयता देंगे। आप अपने व्ययों को नियंत्रित रख पायेंगे।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में मंगल पंचम भाव एवं दशम भाव के स्वामी तथा मंगल लग्नेश चंद्र के मित्र भी है। यह मंगल योगकारक ग्रह होने के कारण आपके लिए सबसे अधिक शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए अतिउत्तम रत्न है। संतान सुख और शैक्षिक जीवन में अनुकूल सफलता पाने के लिए आपको यह रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको संतान प्राप्ति के योग, पिता एवं आजीविका क्षेत्र से लाभ दिला सकता है। रत्न की शुभता से आपको भूमि, भवन, दैनिक व्यवसाय, परिश्रम से सम्मान प्राप्ति हो सकती है। मंगल रत्न मूंगा आपके ग्रहस्थ जीवन को भी सुखमय बनाए रख सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे – गोहूँ, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दूसरे भाव में स्थित है। राहु रत्न गोमेद धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। यह रत्न धारण कर आप धन संचय के प्रति सचेत रहेंगे। धन के प्रति आपका मोह बढ़ेगा। सत्य बोलने की ओर आप अग्रसर होंगे। गोमेद रत्न की शुभता चातुर्य एवं नीति निर्माण से धन संचय करने में आपको सफलता देगी। गोमेद आपके स्वभाव को सौम्य बनाए रखेगा। गोमेद रत्न धारण कर आप पारिवारिक संस्कारों का नियम से पालन करेंगे। यह रत्न आपको विचार अभिव्यक्ति का कौशल देगा।

राहु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपकी मानसिक परेशानियों में कमी होगी। यह रत्न आपको सुख शांति, पारिवारिक सौहार्द और भूमि-भवन के विषयों में लाभ देगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको सरकार व सगे संबंधियों से सुख-सहयोग की स्थिति बनाए रखेगा। तथा यह रत्न आपको परदेश का सुख देगा तथा आपके मातृ सुख में वृद्धि करेगा। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने से आपको भौतिक सुख-सुविधाओं का सुख भोगने के पर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे। यह रत्न आपकी संतोष भावना को बढ़ाएगा। आपको सेवकों का सुख प्राप्त होगा। शैक्षिक पक्ष से भी इस रत्न की शुभता आपके साथ बनी हुई है।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराये। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे— तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8–10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज शुभ रत्न धारण कर आप गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते हैं। पुखराज रत्न धारण करने के बाद लोग आपसे मिलकर प्रसन्न होंगे। रत्न की शुभता से आप मिलनसार व्यक्ति बनेंगे। आपका जीवनसाथी आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होगा। यह रत्न आपको काव्य साहित्य, कला प्रेमी और शास्त्र प्रेमी बनाएगा। रत्न प्रभाव से आपको धन, सुख, श्रेष्ठ पद और मान्यता मिलेगी। पुखराज रत्न से आपको सरकारी कामों, कचहरी के काम, मंत्रणा देने का काम, सलाहकार का काम, चित्रकला आदि के द्वारा लाभ मिल सकते हैं।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में गुरु षष्ठ भाव एवं नवम भाव के स्वामी है। गुरु लग्नेश चंद्र के मित्र एवं त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए शुभ ग्रह होते हैं। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण कर आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली बन सकता है। आप विद्या, बुद्धि व संतान से युक्त हो सकते हैं। आपके कार्यों में जो बाधाएं आती हैं वो रत्न शुभता से दूर हो सकती हैं। छठे भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न रोग, शत्रु तथा ऋणों पर नियन्त्रण बनाये रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। शत्रुओं पर विजय, भाग्य व धर्म को प्रबलता मिल सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं— चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ

में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपकी सुख-समृद्धि को बढ़ायेगा। इस रत्न को धारण कर आप धन दौलत से परिपूर्ण होंगे। यह रत्न आपको शीघ्र ही लोकप्रियता देगा। पिता से संबंध मजबूत करेगा। भाईयों व बंधुओं के स्नेह का पात्र बनेंगे। प्रवास में अधिक रहना पड़ सकता है। मित्रवर्ग में सूर्य रत्न माणिक्य आपको विशेष अधिकार दिला सकता है। सूर्य रत्न आपको माणिक्य ऊंच पदवी, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सम्मानजनक स्थिति देगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव के स्वामी है। सूर्य लग्नेश चंद्र का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते हैं। सूर्य रत्न की शुभता से आपको धन व कुटुम्ब एवं मान-सम्मान प्राप्त करा सकता है। माणिक्य के प्रभाव से आयु व दैनिक जीवन में सुख-शांति प्राप्त की जा सकती है। यह रत्न बातचीत में राजसिक प्रभाव, वाणी में आत्मविश्वास भाव दे सकता है। तथा यह रत्न आपको बैंक, रेवेन्यू, अकाउन्ट, सात्विक भोजन, कीमती धातु जैसे विषयों में शुभता दे सकता है। माणिक्य रत्न को धारण पर आप छोटे भाई-बहनों की विदेश यात्रा, कर्जा चुकाना, जेल, सजा, माता को होने वाले लाभ, मामा की यात्राएं, उच्च शिक्षा, दुर्घटना, ऋण इत्यादि में शुभता प्राप्त कर सकते हैं।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रस्ती से लेकर ८ रस्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने आप कुछ विषयों में आप लोभी और चालाक हो सकते हैं। आपके द्वारा दूसरों को शारीरिक और मानसिक कष्ट हो सकते हैं। अनजाने में आपसे पाप हो सकते हैं। आपके द्वारा किये गये कार्य से विवेकहीनता परिलक्षित हो

सकती है। रत्न प्रतिकूलता से आपको मुखरोग या दंत रोग हो सकता है। केतु रत्न आपको अकस्मात हानि करा सकता है। यह रत्न आपका ऑपरेशन करा सकता है। आपको विरासत मिलने में तकलीफ हो सकती है। सरकार के द्वारा आपकी धन हानि हो सकती है।

केतु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि नवम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपमें सदाचार भाव कम होगा। आप धर्म एवं संस्कृति के विरोधी होंगे। सुसंस्कृत और ईश्वरवादिता के विरुद्ध आपकी विचारधारा हो सकती है। जीवन में भाग्य और धर्म का सहयोग आपको नहीं मिल पाएगा। यह रत्न धारण करना आपको कर्म भाव से हटा सकता है। आप अपनी सफलता के लिए भाग्य पर आश्रित हो सकते हैं। यह रत्न आपमें अव्यावहारिक प्रवृत्ति का विकास करेगा। आप जीवन में एक समय में अपने धर्म से अधिक दूसरे धर्म में निष्ठा दिखा सकते हैं। इसके कारण आपको समाज में सम्मान हानि का सामना करना पड़ सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध पंचम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपके मन में लोभ की भावना आ सकती है। यह रत्न आपके संतान पक्ष की उन्नति को भी बाधित कर सकता है। रत्न प्रभाव से शिक्षा क्षेत्र में आपको बुद्धि का सहयोग कम मिल पाएगा। जिसके कारण गणना संबंधित विषयों को समझने में आपको परेशानी हो सकती है। व्यवहार की कमी के कारण आपको लोग अधिक पसंद नहीं करेंगे। वाद-विवाद में आप संयम खो सकते हैं। आर्थिक स्थिति को भी यह रत्न कुछ हद तक प्रभावित कर सकता है। साहित्य पढ़ने और लेखन में आपकी रुचि कम होगी।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में बुध तीसरे भाव एवं द्वादश भाव के स्वामी है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको बंधु बांधवों का सुख कम प्राप्त हो सकता है। पराक्रम भाव के पक्ष से भी यह रत्न आपके लिए अनुकूल फलदायक नहीं रहेगा। भाई-बहनों से संबंधों की मधुरता में कमी हो सकती है। बौद्धिक बल से धनार्जन करने में पन्ना रत्न आपको सहयोग नहीं करेगा। व्यावसायिक यात्राओं में असफलता का सामना आपको करना पड़ सकता है। पन्ना रत्न आपके भाग्योदय में बाधक का कार्य कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यय व्यर्थ हो सकते हैं। व्ययों को नियंत्रित रखने में आपको कष्ट हो सकते हैं। विद्या और बौद्धिक विषयों में आपके साथ परेशानियां बनी रहेंगी।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा आपके वैवाहिक जीवन की समस्याओं को कोर्ट कचहरी में लेकर आ सकता है। साहस की कमी के कारण आप जीवन के अनेक क्षेत्रों में सफल नहीं हो पायेंगे। दांपत्य जीवन की परेशानियां बढ़ सकती हैं। गुरुजनों से भी आपका विरोध रह सकता है। कुसंगति के मित्र आपकी जीवनशैली में बदलाव कर सकते हैं। आहार विहार अनियमित और अमर्यादित हो सकता है। रत्न प्रभाव से आपके खर्च आमदनी से अधिक हो सकते हैं। अनुचित

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

विषयों पर आपके व्यय हो सकते हैं। यह रत्न धारण करने के बाद आपको शत्रु पक्ष से सावधान रहना होगा। स्वतंत्र व्यवसाय से प्राप्तियां कम बन रही हैं।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं आयेश है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके भौतिक सुखों में कमी करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी पद्मोन्नति में अड़चन बनी रहेगी। जीवन साथी और वाहन सुख की चिंताएं आपको परेशान कर सकती हैं। जन्म स्थान से दूर आपको रहना पड़ सकता है। यह रत्न यश व सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में कमी करेगा। कुटूम्ब का सुख आपको पूरा नहीं मिल पाएगा। रत्न प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य पीड़ित हो सकता है। काव्य, संगीत और सौंदर्य संबंधी विषयों में कार्यक्षेत्र में हानि की स्थिति बन सकती है। रत्न प्रभाव से आपको नजला, जुकाम एवं जल संबंधी रोग हो सकते हैं।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि नीलम धारण करने पर आपका मन धर्म क्षेत्र में नहीं लग पाएगा। शनि रत्न आपकी विचारशक्ति को आंशिक रूप से अस्थिर कर सकता है। दूसरों के प्रति आपका व्यवहार रुखा कर सकता है। नीलम रत्न को धारण करने के बाद आप कठोर निर्णय लेने में संकोच नहीं करेंगे। आपको दूसरों के तिरस्कार का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपको अवनति के मार्ग पर भी लेकर जा सकता है। शिक्षक, वकालत और न्याय क्षेत्रों में आपका आजीविका के रूप में कार्य करना अनुकूल नहीं होगा। यदि आप इन क्षेत्रों में कार्य करते हैं तो आपको मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव आपको कंजूस, स्वाधी, ढोंगी और क्षुद्र बुद्धि बना सकता है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शनि सप्तमेश एवं अष्टमेश है। शनि का रत्न नीलम धारण करना आपके लिए सुख फलदायक नहीं रहेगा। नीलम रत्न आपके भाग्योदय में रुकावट ला सकता है। संतान, जीवन साथी व माता के कष्ट रत्न प्रभाव से बढ़ सकते हैं। यह रत्न आपको पेशाब से संबंधित रोग दे सकता है। शत्रु आपको शारीरिक कष्ट दे सकते हैं। रत्न प्रभाव से आपका मन चंचल रहेगा। मित्रों से मित्रताएं बनती बिगड़ती रहेंगी। यह रत्न आपकी आयु में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य कमजोर होगा। गुप्त रोग भी रत्न प्रभाव से प्रभावी हो सकते हैं। यह रत्न आपकी शारीरिक अस्वस्थता को बढ़ाएगा। कलह और अपयश की स्थिति आपके लिए यह रत्न बना सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु

(29/10/2011 - 28/10/2029)

राहु की दशा में आपका मोती व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

Aniket Dhyani

मूंगा, पुखराज व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और नीलम व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु (28/10/2029 - 28/10/2045)

गुरु की दशा में आपका मोती, मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, हीरा व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि (28/10/2045 - 28/10/2064)

शनि की दशा में आपका मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मूंगा, पुखराज, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व नीलम रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध (28/10/2064 - 28/10/2081)

बुध की दशा में आपका मोती व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, गोमेद, पुखराज, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(28/10/2081 - 28/10/2088)

केतु की दशा में आपका मूंगा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, लहसुनिया, गोमेद व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(28/10/2088 - 29/10/2108)

शुक्र की दशा में आपका मोती व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, पुखराज, हीरा, लहसुनिया व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(29/10/2108 - 30/10/2114)

सूर्य की दशा में आपका मोती व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, हीरा व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न – मोती

आपका जन्म कर्क राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी चंद्रमा होता है। चंद्रमा सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कर्क राशि के लग्न वाले जातकों को कर्क राशि के स्वामी ग्रह चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मोती रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मोती रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मोती रत्न चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मोती को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

मोती को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र – ॐ सों सोमाय नमः

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही, सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मोती रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मोती रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

कर्क लग्न वाले जातक यदि मोती रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है –

एक मुखी – सूर्य ग्रह – स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म – विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी – चंद्र ग्रह– वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी – मंगल ग्रह– शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी – बुध ग्रह– शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि – विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

पांच मुखी – गुरु ग्रह– शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी – शुक्र ग्रह – प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी – शनि ग्रह– शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी – राहु ग्रह– राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी – केतू ग्रह– केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी – भगवान महावीर– कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी – इंद्र ग्रह– आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी – भगवान विष्णु ग्रह– विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी – इंद्र ग्रह– सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी – शनि ग्रह– आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कर्क लग्न की हैं। कर्क लग्न आपको संवेदनशील बना रहा है। चर लग्न आपको लगातार कार्य करने का स्वभाव दे रहा हैं। आपको जलीय स्थानों के नजदीकरहना अधिक प्रिय हो सकता हैं। लगातार कार्य करना आपका स्वभाव , बिना थके निरन्तर कार्य करना आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालता है। आप भावुक, धैर्यवान है, और कठिन से कठिन समय में भी घबराते नहीं हैं। कुछ विषयों पर आप जिद्धी भी हो जाते हैं। अपने स्वभाव के नकारात्मक पक्ष को छोड़ने का प्रयास आपको करना चाहिए। साथ ही आपको अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करना चाहिए। कार्य के घण्टों में से थोड़ा समय आराम के लिए भी निकालें। आप अत्यधिक भावनात्मक हैं इसलिए आपके निर्णय कई बार गलत भी हो जाते हैं। फिर भी आप जब किसी काम को करने की ठान लेते हैं, तो उसे करके ही बैठते हैं।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। तथा इन भावों के स्वामियों को त्रिक भावेश के नाम से जाना जाता है। त्रिक भाव, भावेश व इन भावों में बैठे ग्रह स्वयं में किसी किसी प्रकार की अशुभता लिये होते हैं। यही कारण है की ये सभी आपके जीवन में कष्ट और बाधाओं का कारण बन सकते हैं। जिसमें छठा भाव रोग, ऋण और शत्रुओं से कष्ट देता है, इसका स्वामी जिस भाव में जाता है, उसके शुभ फलों में कुछ न कुछ कमी अवश्य करता है। जिसके फलस्वरूप आपको षष्ठ भाव के स्वामी या इस भाव में स्थित ग्रहों की महादशा— अन्तर्दशाओं में भाव सम्बंधित रोग, ऋण या शत्रुओं के द्वारा शारीरिक या मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

6, 8 व 12 भावों में अष्टम भाव विशेष अशुभता लिए होते हैं। इस भाव का स्वामी अष्टमेश, जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता है। अष्टम भाव अशुभता, बाधा और पाप का भाव है। और इस भाव या इस भाव के स्वामी से किसी भी भावेश का सम्बन्ध होना, भावेश की शुभता में कमी कर अशुभता को बढ़ाता है। तीसरा और अंतिम त्रिक भाव, द्वादश भाव है जिसे व्यय भाव भी कहा जाता है। द्वादश भाव से हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष का विचार किया जाता है। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव के विषयों में अशुभता लाते हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न में षष्ठ भाव व नवम भाव के स्वामी गुरु हैं। षष्ठेश गुरु आपका मामा—मौसी से बैर करा सकता है। संतान सुख में कमी कर सकता है तथा संतान रोगों के प्रभाव में शीघ्र आ सकती हैं, बुद्धि और विवेक का समय पर उपयोग नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त ऋण आदि विषयों में शत्रु बाधक हो सकते हैं।

सप्तम व अष्टम भाव के शनि की यह स्थिति जीवन साथी से प्राप्त होने वाले सुखों में कमी, सरकारी क्षेत्रों व आजीविका क्षेत्रों से अल्प लाभ, धन संचय कठिन, कुटुंबका न्यून सुख, विद्य 1 बुद्धि से अल्प लाभ व संतान सुख में बाधक बनता है।

द्वादश व तृतीय भाव के स्वामी बुध हैं। बुध आपके लग्न के लिए अशुभ ग्रहों की श्रेणी में आते हैं। बुध की यह स्थिति आपको अधिक व्ययों से परेशान, पारिवारिक सुख में न्यूनता, धन संचय दुष्कर, शत्रु संघर्ष से हानि के योग बना सकता है।

मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। मंगल का रोग भाव में होने से आपके जीवन साथी से सुखों में न्यूनता, मित्रों से धोखा, संतान सुख में न्यूनता, स्वजनों से झगड़ा, रक्त—विकार, धन—नाश का कारण बन सकता है।

शुक्र की स्थिति छठे भाव में आपको शत्रु विजयी बना रहा है, मामा का सुख, द्विभार्या योग, दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद, अंतरजातीय विवाह की संभावनाएं देता है।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते हैं। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यों में

लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 6, 7, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

सम
शुभ
अशुभ
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

व्यावसायिक परेशानी
धनार्जन
कम खर्च
धन
शत्रु व रोग

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ॥**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगे। पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकती हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं—

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटा, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।

9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।
11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

**ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 15 है। एक एवं पाँच के योग से आपका मूलांक 6 होगा। मूलांक 6 का अधिष्ठाता शुक्र है एवं एक का सूर्य तथा पाँच का बुध है। आपके जीवन में इन तीनों ग्रहों की काफी भूमिका रहेगी। मूलांक 6 के प्रभाव से आप एक सौन्दर्य प्रेमी, सुरुचिपूर्ण व्यवहार करने वाले, जनता के मध्य लोकप्रिय व्यक्ति होंगे। ललित कलाओं में आपकी रुचि रहेगी एवं गान, वाद्य, गीत संगीत सुनने का शौक रहेगा। आप प्रत्येक कार्य में स्वच्छता पसन्द करेंगे। आपके अन्दर दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति रहेगी एवं उन्हें अपना बना लेने की कला रहेगी।

सूर्य के प्रभाव से आप जीवन में सदैव प्रकाशित रहना चाहेंगे। परोपकार में हिचकेंगे नहीं तथा अपने कार्य को निष्पक्ष एवं ईमानदारी से करेंगे। बुध के प्रभाव से आपमें वाणी चातुर्य का विकास होगा। आप सोच-समझकर वाणी व्यवहार करेंगे। तर्क शक्ति अच्छी होगी तथा दूसरों को अपनी बात सहज में समझाने की सामर्थ्य रहेगी। आपकी समाज सेवा के कार्यों में रुचि रहेगी। दान पुण्य के कार्य आपके हाथ से होंगे। विद्याध्यन आपके लिये हितकर है एवं अपने बुद्धि चातुर्य, विद्या बुद्धि के सहारे अपने जीवन में प्रारम्भ से ही सफलता अर्जित करेंगे। एकाध असफलताएँ भी मिलेंगी। लेकिन इनसे आप बिना विचलित हुये अपने जीवन के लक्ष्य पर पहुँचेंगे एवं घर परिवार, समाज में नाम कमायेंगे।

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी-कठिनाई से होता है। अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकते हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचि पूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगे। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

आपका मूलांक 6 है तथा आपका भाग्यांक 7 है। मूलांक 6 का स्वामी शुक्र है तथा भाग्यांक 7 का स्वामी नेपच्यून है। मूलांक 6 और भाग्यांक 7 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। शुक्र एवं नेपच्यून के प्रभाववश आप कला के किसी क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगे। चौंसठ कलाओं में से किसी एकाधिक कला में आपको निपुणता हासिल होगी अथवा स्थायी रुचि बनी रहेगी। आपका रुझान कलात्मक वस्तुओं, दार्शनिक स्थलों की ओर अधिक रहेगा। आप ऐसा ही रोजगार-व्यापार पसंद करेंगे, जिसमें कला के किसी क्षेत्र का सतत् योगदान बना रहे। रोजगार-व्यापार के सिलसिले में अक्सर आपकी यात्राएं होती

रहेंगी। यात्राएं आप दूर-दूर देशों की करेंगे तथा कुछ एक यात्राओं से आपको अच्छे लाभ की प्राप्ति होगी। धन संग्रह में आपको काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। जब कि भौतिक सुख-सुविधाओं की वस्तुएं आसानी से प्राप्त हो जाएंगी। जीवन की मध्य अवस्था से आपका उच्च भाग्योदय प्रारंभ होगा एवं अंतिम अवस्था तक आपकी आर्थिक स्थिति काफी सुदृढ़ बन जाएगी। प्रारंभ में तो आपका सामाजिक स्तर सामान्य रहेगा, लेकिन अंतिम अवस्था में आपको काफी सामाजिक प्रभाव प्राप्त होगा।

आपका भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 34 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 43 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 6 की मित्रता 3 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 7 की मित्रता 2 एवं 6 से है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, जून, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 6 एवं भाग्यांक 7 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75

6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69

7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

लग्न फल

आपका जन्म पुष्यनक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर कर्क लग्न के साथ-साथ सिंह राशि का नवमांश एवं कर्क राशि का ही द्रेष्काण उदित था। जिससे यह संकेत मिलता है कि आप संतुलित ढंग से स्वस्थ रहकर, आनन्ददायक सुव्यवस्थित एवं उत्तम पारिवारिक जीवन बिताएंगे। आप विद्वान एवं सामाजिक प्रभाव से आदरणीय समझे जाएंगे। आप सुखद एवं मधुरतम जलीय यात्रा करेंगे। आप के जीवन के 36 वें वर्ष से सुन्दर और भाग्यशाली मार्ग प्रशस्त होंगे।

आपमें यह गुण विद्यमान है कि आप अपनी आवश्यकताओं को नियंत्रित रख कर उपयोगिता को पसन्द करते हो। आप विश्वासपूर्ण भावनाओं से विभिन्न प्रकार से अन्य लोगों की सहायता करोगे। आप धर्मशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र का अध्ययन करेंगे तथा भगवान के प्रति समर्पित आस्थावान होंगे। आपको धर्मस्थलों/धार्मिक तीर्थों का भ्रमण करने का सौभाग्य प्राप्त होगा एवं परोपकारी सेवक बन कर सामाजिक कार्य करेंगे। आप दुर्भावनाओं को त्यागकर, धन संचय करने की महत्त्वकांक्षा से प्रेरित रहेंगे। यह संभव है कि आप सभी प्रकार से पारिवारिक सदस्यों की सुख सुविधा की व्यवस्था करेंगे।

आप शारीरिक रूप से लम्बे, उन्नत ललाट एवं सुस्पष्ट आँखों से युक्त होंगे। आपकी मनोवृत्ति क्षमतानुसार एवं अवस्थानुसार अग्रसर होगी। आप उन्नति के लिए एक कड़ी के साथ-साथ दूसरी कड़ी भी प्रारम्भ कर सकते हैं।

आपमें ऐसा गुण एवं सामंजस्य विद्यमान है कि आप जन-सामान्य की भावना को तथा परिस्थितियों को विधिवत समझ कर उचित सामंजस्य कर देते हो। परन्तु आप बहुत अधीर हो जाते हो। परिणाम स्वरूप आपका स्वभाव विकृत होकर, हानिप्रद प्रमाणित हो जाता है। यह आवेग क्षणिक है, तथापि शीघ्रतापूर्वक शान्त होकर तेजी से सामान्य मनोवृत्ति ग्रहण कर लेते हैं।

आप धनोपार्जन हेतु कुछ विभिन्न प्रकार की पद्धति एवं उपायों का अनुसरण कर लेते हैं। यह सुनिश्चित है कि सतत आप में अन्तर्वाही चतुरता विद्यमान रहेगी।

आपको अपने रोमांचित जीवन के प्रति सचेत रहना चाहिए। आप पूर्णरूपेण उदासीन भाव से अपनी पत्नी से सम्बंधित रहेंगे। बल्कि आप उदासीन रहकर अपना पारिवारिक जीवन बिताएंगे।

आप अपना विवाह सुयोग्य गृहणी के साथ करने की प्राथमिकता देंगे ताकि अच्छे सन्तान का उद्भव हो सके। लेकिन आपके लिए उत्तम तो यह है कि अपनी दिनचर्या स्पष्ट रखें तथा अपना घरेलू जीवन, जीवन संगीनी के लिए आलोचनात्मक न बन सके।

कर्क राशीय प्रवृत्ति के अनुसार आपके स्वभानुकूल वह प्राणी होगा जिसका जन्म मीन अथवा वृश्चिक लग्न राशि में हुआ हो। आपके किशोरावस्था के लिए रोजगार, व्यवसाय अथवा

अनुकूल पेशा—वृत्ति नौसेना, सामुदायिक व्यवस्था आयात—निर्यात सिचाई एवं कृषि कार्य उत्तम रहेगा।

संभवतः आपका स्वास्थ्य एवं जीवन अक्षुण्ण नहीं रहेगा। परन्तु अवस्था की वृद्धि के अनुसार समस्याएँ सुधर कर उत्तम हो जाएगी। आप सदैव ही चिन्तित एवं कुतुहलयुक्त (घबराहट) रहेंगी। अतः आप इन प्रवृत्तियों को त्याग कर शान्तिपूर्वक रहे और खान—पान पर नियंत्रण रखें। मद्यपान का सर्वथा त्याग करे।

आपको कतिपय रोग जैसे गैसस्टिक, अलसर खाँसी सम्बंधी गड़बड़ी एवं गठिया सन्धिबात रोगादि से रक्षित रहना चाहिए।

आपके लिए रंग पीला, लाल, एवं सफेद रंग अनुकूल है। यह समझ लें कि रंग हरा एवं ब्लू रंग आपके लिए प्रतिकूल है।

आपके लिए अंक 4 एवं 6 अंक अनुकूल एवं प्रभावशाली है। परन्तु अंक 3 एवं 5 अंक आपकी उपयोगिता के प्रतिकूल है। अस्तु इनका त्याग करें।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में शुक्रवार एवं शनिवार पूर्ण आनन्द प्रदायक नहीं होगा। मंगलवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन सफलता प्रदायक होगा। बुधवार का दिन चिन्तनीय एवं व्ययकारी होगा। परन्तु रविवार का दिन सचेत रहने योग्य है।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रुचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही

स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

मंगल

छटेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, क्रोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छटे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा आपको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य—मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुःखी एवं गुप्तरोगी होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान्, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संशयी, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शांत स्वभाव एवं दृढ़तापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करने वाले होते हैं। इनकी प्रवृत्ति भावुक होती है तथा प्रेम एवं स्नेह का निश्छल भाव इनके अंदर विद्यमान रहता है। जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते हैं तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं। धर्म के प्रति ये श्रद्धालु होते हैं तथा समाज एवं देश सेवा के कार्य में इनकी इच्छा रहती है। दूसरे लोगों की आंतरिक भावनाओं को समझने में ये चतुर होते हैं। साथ ही राजनीति या सरकारी क्षेत्र में उच्चाधिकार प्राप्त सम्मानित पद को अर्जित करने में सफलता प्राप्त करते हैं जिससे समाज में इनको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपका स्वरूप सुन्दर एवं दर्शनीय होगा तथा अन्य जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप एक विद्वान तथा बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुद्धिमत्ता पूर्वक अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति भी प्रायः अच्छी रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा।

लग्न में लग्नेश चन्द्रमा की राशि के प्रभाव से आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे एवं अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उत्साह तथा परिश्रम से करेंगे। इनमें आपको सफलताएं भी प्राप्त होंगी जिससे आपके सर्वत्र उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। धन एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपकी बुद्धि श्रेष्ठ होगी तथा उत्कृष्ट कार्यकलापों को सम्पन्न करने में तत्पर होंगे।

आप एक कर्तव्यपरायण व्यक्ति होंगे तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे। इससे आपके कार्य क्षेत्र के प्रभाव में सतत वृद्धि होगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे लोग आपसे प्रभावित होंगे। साथ ही मित्रों में भी आप आदरणीय एवं सम्माननीय समझें जाएंगे तथा मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत होगा। संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आप में कृतज्ञता की भावना भी विद्यमान रहेगी फलतः अन्य जनों के उपकार को आप स्वीकार करेंगे तथा उनका हार्दिक आभार प्रकट करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा होगी तथा नियमित रूप से धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अवसरानुकूल सम्पन्न करते रहेंगे। जल क्रीड़ा के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा इससे आपको आनंद की अनुभूति होगी। ज्योतिष के प्रति भी आपकी श्रद्धा होगी तथा इसके ज्ञानार्जन में भी रुचिशील होंगे।

इस प्रकार आप शांत, दृढ़-प्रतिज्ञ, कर्तव्यपरायण, परिश्रमी एवं साहसी पुरुष होंगे तथा जीवन में सर्व सुखों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है तथा सूर्य इस राशि का स्वामी है। अतः इसके प्रभाव से आप अधिक बोलना पसन्द नहीं करेंगे तथा अधिकांश समय शान्त रहना ही आपको रुचिकर लगेगा तथा अवसरानुकूल ही वार्तालाप करना पसंद करेंगे। वैभवशाली वस्तुओं की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यों को सम्पन्न करने में आप सर्वदा उत्सुक तथा तत्पर रहेंगे। आप कभी कभी शीघ्र ही क्रोधित भी होंगे लेकिन शीघ्र ही शांत भी हो जाएंगे। पारिवारिक शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को पूर्ण सुविधाएं प्रदान करेंगे। पैतृक सम्पत्ति की आपको अवश्य प्राप्ति होगी। साथ ही बहुमूल्य वस्तुओं से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे।

जीवन में आपको जमीन जायदाद संबंधी लाभ होगा तथा गृह एवं वाहन आदि के स्वामित्व को भी प्राप्त करेंगे। सामाजिक जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने के लिए आप मधुर वाणी का प्रयोग करेंगे। साथ ही आपके स्पष्ट तर्कों से सभी लोग आपसे सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिवार में धार्मिक कार्यक्रम या उत्सव समय समय पर होते रहेंगे। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन पोषण करने में भी आप समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप एक जागरूक, धार्मिक तथा परोपकारी प्रवृत्ति से युक्त होकर समाज में मान सम्मान अर्जित करके अपना समय व्यतीत करेंगे।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कन्याराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति तीव्र रहेगी। साथ ही आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा दार्शनिक या बौद्धिक कार्यों को करने में प्रवृत्त रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिए उनकी गलतियों को भूल जाने की सीमा तक क्षमा करने में समर्थ रहेंगे परन्तु आयु के साथ-साथ आपसी संबंधों में तनाव भी हो सकता है। आप अपने क्षेत्र में नेतृत्व प्राप्त करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा यथायोग्य आदर प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक अच्छे वक्ता होंगे तथा भाषा पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा।

संचार की सुख सुविधाओं यथा वाहन, दूरभाष तथा दूरदर्शन आदि उपकरणों से सम्पन्न रहेंगे। आप संगीत के प्रिय होंगे एवं कला के प्रति भी आपकी रुचिशीलता रहेगी। आपका कंठ मधुर रहेगा जिससे अन्य जनों को अपने गायन से आकर्षित कर सकते हैं लेकिन सर्वप्रथम आप अपने सांसारिक कार्यों को पूर्ण करेंगे उसके बाद ही संगीत आदि कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आप समय समय पर यात्राएं करेंगे तथा इनसे आपको भविष्य में इच्छित लाभ होगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। आपकी पड़ोसी देशों की यात्राएं भी हो सकती हैं। इसके साथ ही पड़ोसियों से भी आप अच्छे संबंध रखना पसन्द करेंगे। नीति के आप ज्ञाता होंगे अतः आम चुनाव लेख लिखने या पुस्तक आदि प्रकाशन से भी आप ख्याति तथा लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप शस्त्र विद्या के ज्ञाता, अच्छे शील स्वभाव तथा मित्रों से युक्त, सामाजिक तथा धार्मिक वृत्ति के पुरुष होंगे।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा सूर्य भी अपनी नीचराशि में स्थित होकर चतुर्थ भाव में ही है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप को सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों की प्राप्ति परिश्रम एवं विलम्ब से ही होगी तथा ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने के लिए आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। लेकिन आप एक बुद्धिमान एवं पराक्रमी व्यक्ति हैं। अतः इससे आपको अधिक निराश नहीं होना चाहिए तथा कार्य को करने में प्रवृत्त रहना चाहिए।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी आपको प्राप्त होगा एवं इससे आप युक्त होंगे। परन्तु पिता से प्राप्त सम्पत्ति किंचित विवाद युक्त हो सकती है। लेकिन स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आपको धन सम्पत्ति की अवश्य प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त विवादित सम्पत्ति से आपको दूर ही रहना चाहिए तथा यत्नपूर्वक इसका क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए।

जीवन में आप अपने घर को विलम्ब एवं परिश्रम से प्राप्त करेंगे। यह किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से आपके संबंध मधुर कम ही होंगे। परन्तु मकान की सुन्दरता एवं आकर्षण में आप कोई कमी नहीं रखेंगे तथा व्यक्तिगत रूप से इसमें अपना योगदान प्रदान करेंगे एवं पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी आपको न्यूनाधिक रूप से सुख होगा परन्तु स्वयं के उत्तमवाहन की कमी रहेगी।

आपकी माता जी तेजस्वी शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा परिवार के सदस्यों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा एवं सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेहशीलता का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको अपना नैतिक तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करेंगी। आप भी सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे एवं अपनी ओर से उनको कोई कष्ट नहीं होने देंगे लेकिन आप दोनों के मध्य सैद्धांतिक एवं अन्य प्रकार से मतभेद रहेंगे जिससे संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

आप एक पारिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा प्रारंभिक कक्षाओं में अच्छे अंको से सफलता अर्जित करेंगे लेकिन स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम एवं बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी सफलता मिल सकती है। यदि आप तकनीकी क्षेत्र में कोई डिप्लोमा करें तो इसमें आपको इच्छित एवं शीघ्र सफलता मिल सकती है। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

नैसर्गिक तेजस्वी ग्रह सूर्य की नीच राशि में चतुर्थ भाव में स्थिति के कारण युवावस्था के बाद आपको रक्तचाप एवं हृदय रोग संबंधी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अतः प्रारंभ से ही आप खान-पान का उचित पालन करें तथा ऐसे पदार्थों का सेवन अल्प मात्रा में करें जिससे उपरोक्त समस्या उत्पन्न होती हो तो आप इस परेशानी से काफी हद तक छुटकारा पा सकते हैं। अतः पथ्यापथ्य का अवश्य ध्यान रखेंगे।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है साथ ही बुध भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र वृद्धि के स्वामी होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे तथा आपके सभी कार्यों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी। इससे लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य एवं धर्मशास्त्र में आपकी रुचि होगी तथा यत्नपूर्वक इस क्षेत्र में तत्पर होंगे। गणित एवं ज्योतिष के क्षेत्र में भी आपकी रुचि होगी तथा इस क्षेत्र में आपको काफी ज्ञान होगा तथा समाज में एक विद्वान के रूप में सम्मानित समझे जालेंगे। इसके अतिरिक्त आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र करने में समर्थ होंगे।

बुध की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आप रुचिशील होंगे तथा प्रेम में आप भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित करेंगे। आपका प्रेम मर्यादित एवं आदर्शवादी होगा तथा परस्पर एक दूसरे के प्रति पूर्ण आकर्षण एवं प्रेम होगा। इससे आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है।

पंचमभाव में बुध की स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा कन्या सन्तति की संख्या अधिक हो सकती है। आपके बच्चे बुद्धिमान, गुणवान एवं योग्य होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता-पिता के प्रति उनकी पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भावना होगी तथा आज्ञा का पालन करने में तत्पर रहेंगे। वे सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उनकी सलाह से ही सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सम्बन्धों में सदभावना एवं विश्वास का भाव बना रहेगा। इसके साथ ही बच्चों का पिता की अपेक्षा माता से अधिक लगाव होगा एवं अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान माता से ही करवाना पसन्द करेंगे लेकिन श्रद्धा एवं सम्मान का भाव दोनों के लिए बराबर रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में माता-पिता की श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। अतः आप एक भाग्यशाली व्यक्ति माने जायेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे योग्य एवं प्रतिभाशाली होंगे तथा अध्ययन के क्षेत्र में प्रारम्भ से ही विशिष्ट सफलताएं अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दीक्षा का समुचित प्रबन्ध करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। आपके बच्चे मधुर स्वभाव एवं व्यवहार कुशल भी होंगे जिससे अन्य लोग भी उनसे सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। तथा बच्चों पर आपको गर्व होगा।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक विद्वान तथा बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा शत्रुता के भाव की हमेशा उपेक्षा करेंगे। यद्यपि आप शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहते हैं परन्तु आपके शत्रु इसमें बाधाएं उत्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही वे आपके सम्मान को हानि तथा सामाजिक स्तर पर उपेक्षा करेंगे। इसे रोकने के लिए आप समयानुसार कोर्ट या मुकद्दमे आदि का सहारा ले सकते हैं। इस प्रकार आप दृढ़ता तथा बहादुरी से शत्रुपक्ष का सामना करेंगे तथा उनको पराजित करने में समर्थ रहेंगे। इस कार्य में आपकी बुद्धिमत्ता तथा आपके सद्मित्रों का मंडल भी आपको सहयोग प्रदान करेगा। यदा कदा पारिवारिक या बन्धुवर्ग से भी आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्ततोगत्वा इसमें आपको सफलता प्राप्त होगी। आप उच्च नैतिकता का अनुपालन करेंगे अतः शत्रुपक्ष को पराजित करने के लिए नकारात्मक साधनों का कभी भी प्रयोग नहीं करेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति बनाने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा कार्य क्षेत्र में सक्रियता से कार्यरत होकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाएंगे।

आपका सेवक वर्ग भी आज्ञाकारी होगा तथा आपको पूर्ण सम्मान प्रदान करेगा। अपने सेवकों तथा सहायकों के प्रति आपका दृष्टिकोण सकारात्मक तथा अपनत्व का रहेगा इससे आपकी महानता में वृद्धि होगी। जीवन में ऐसे अवसर बहुत कम आएंगे जब आपको ऋण की आवश्यकता पड़ेगी यदि आ भी गई तो आप ऋण से शीघ्र ही मुक्त हो जाएंगे। आपको अपने मामा मामियों से अच्छे संबंध रखने चाहिए क्योंकि इनसे जीवन में आपको पूर्ण सहयोग मिलता रहेगा लेकिन मामियों के स्वभाव में भिन्नता के कारण यदा कदा इसमें न्यूनता रहेगी तथा वे आपको कम ही सहयोग प्रदान करेंगी।

यदा कदा आपको मुकद्दमे आदि का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्त में इसमें विजय प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आप समाज में एक माननीय पुरुष होंगे तथा अपने अच्छे संबंधों से आपको सभी लोगों से यथोचित सहयोग एवं सम्मान मिलता रहेगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा बृहस्पति भी सप्तम भाव में स्थित है। सामान्यतया मकर राशि के सप्तम भाव से जातक का सहयोगी चंचल वात प्रकृति एवं धनवान होता है परन्तु नीचस्थ बृहस्पति के प्रभाव से वह स्वभाव से चिड़चिड़ा अल्प बुद्धिमान एवं जीवन में परिश्रम से ही सफलताएं प्राप्त करता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी चंचल एवं गंभीर स्वभाव की महिला होगी तथा सांसारिक कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करेंगी परन्तु अन्य लोग उनसे विशेष प्रसन्न नहीं होंगे। बृहस्पति के नीच तत्व के प्रभाव से कर्तव्य परायणता के भाव की भी न्यूनता होगी तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति विशेष सजग नहीं रहेंगी।

आपकी पत्नी का वर्ण गौरवर्ण होगा एवं कद भी मध्यम ही रहेगा। शारीरिक रूप से वह जलीय राशि एवं ग्रह के प्रभाव से स्थूल हो सकती है लेकिन अन्य अंग प्रत्यंग पुष्ट एवं सुडौल रहेंगे जिससे शारीरिक आकर्षण बना रहेगा एवं उनके व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। भौतिकता के प्रति उनका आकर्षण रहेगा तथा आधुनिक सुख साधनों तथा उपकरणों की प्राप्ति के लिए हमेशा चिंतित रहेंगी। स्वपरिश्रम एवं आपके सहयोग से न्यूनाधिक मात्रा में उनकी इच्छाएं अवश्य पूर्ण होंगी।

सप्तम भाव में नीचस्थ बृहस्पति के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा। आपका विवाह किसी संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा परन्तु बृहस्पति के प्रभाव से आप स्वेच्छा से प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी होगा तथा एक दूसरे को सांसारिक क्षेत्र में पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे तथापि यदा कदा पत्नी के चिड़चिड़े पन से आपको असुविधा की अनुभूति हो सकती है परन्तु ऐसी स्थितियों का सामना करने में आप पूर्ण समर्थ होंगे।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार से होगा तथा समाज में उनका प्रभाव सामान्य ही रहेगा। विवाह के अवसर पर ससुराल से आपको विशेष दहेज या धन सम्पत्ति की प्राप्ति नहीं होगी एवं अन्यत्र भी बहुमूल्य उपहारों की न्यूनता होगी लेकिन आप सन्तुष्ट रहेंगे। सास ससुर से संबंध औपचारिक रहेंगे तथा विशिष्ट अवसरों पर ही एक दूसरे से सम्पर्क स्थापित होगा लेकिन एक दूसरे के अस्तित्व को अवश्य मानेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा भाव कम ही होगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा नहीं करेंगी जिससे वे उनसे अप्रसन्न होंगे। साथ ही देवर एवं ननद भी उनके शुष्क स्वभाव एवं वाणी से असन्तुष्ट रहेंगे एवं उन्हें वांछित सहयोग तथा सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण योजनाओं में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी तथा

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी एवं आपस में विश्वास के भाव में कमी होगी अतः साझेदारी की उपेक्षा ही करें।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। इसके प्रभाव से आप ज्यौतिष या तंत्र मंत्र आदि पर विश्वास कम ही करेंगे क्योंकि आप एक व्यावहारिक पुरुष होंगे तथा अनावश्यक समय बर्बाद करना या स्वप्न देखना आपको अच्छा नहीं लगता। पैतृक सम्पत्ति आपको प्राप्त होगी लेकिन प्रचुर मात्रा में नहीं परन्तु इसका आप पर कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा क्योंकि स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपके पास प्रचुर मात्रा में धन ऐश्वर्य होगा। साथ ही आवश्यक सुख संसाधन भी उपलब्ध होंगे। आप का दहेज के लेन देन में कोई विश्वास नहीं रहेगा तथा न ही आप उसे स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आप इस सामाजिक बुराई के प्रति अन्य जनों को भी जागरूक करने के लिए तत्पर रहेंगे।

जीवन में यदा कदा आपके घर में कोई चोरी आदि की भी संभावना है लेकिन यह सामान्य होगी तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा पुलिस या अन्य जनों की सहायता से आपका चोरी का समान वापस मिल जाएगा जिससे हानि नहीं होगी। बीमा आदि करने से आपको कोई विशेष लाभ नहीं होगा। अतः आप इस पर अनावश्यक रकम या पूंजीनिवेश न करें। केवल चोरी के मामलों में प्रौढ़ावस्था में आपको बीमे का लाभ मिल सकता है।

शारीरिक सुरक्षा के प्रति आपको हमेशा सतर्क रहना चाहिए तथा अनावश्यक जोखिम नहीं लेना चाहिए क्योंकि न्यूनाधिक रूप से आप दुर्घटना से कष्ट प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सामान्यतया सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका समय व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से धर्म के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित दौरान आपकी— मन में इसके लिए पूर्ण श्रद्धा तथा निष्ठा रहेगी। ध्यान या समाधि के प्रति भी आप रुचिशील रहेंगे। आपकी अन्तर्दृष्टि प्रबल रहेगी अतः ज्योतिष एवं तंत्र मंत्र में सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही धर्माचार्य या कोई उपदेशक भी हो सकते हैं। आप नियमित रूप से भगवत पूजा करेंगे तथा वेद एवं आध्यात्मिक विषयों पर आपकी विद्वता रहेगी तथा इन विषयों पर आप धाराप्रवाह, लम्बे समय तक भाषण या उपदेश देने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप किसी धार्मिक संस्था के संस्थापक संचालक या अध्यक्ष अथवा सक्रिय सदस्य भी हो सकते हैं।

अपने व्यवसाय में आप कुशल रहेंगे इससे समाज से ख्याति तथा मान सम्मान अर्जित करेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आप रुचिशील तथा प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही आध्यात्मिक तथा धार्मिक ग्रंथों का भी व्यक्तिगत रूप से अध्ययन करेंगे। दैनिक पूजन आदि करने से आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति विकसित होगी फलतः आपके पूर्वाभास सत्य होंगे तथा अन्य जनों के प्रति सही भविष्यवाणियां भी करने में समर्थ रहेंगे।

लम्बी दूरी की यात्राओं से आपको प्रसिद्धि तथा धनऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। आप दूसरे शहर या देश में किसी धार्मिक संस्था की स्थापना भी कर सकते हैं। साथ ही परोपकार तथा सामाजिक जनों की भलाई के लिए कार्य करने में तत्पर रहेंगे अपने पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी तथा पूर्वजन्म के पुण्यों से इस जीवन में आनन्द एवं ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक साधुजनों के सेवक मंदिर तालाब आदि परोपकार के लिए बनाने वाले एवं आर्थिक रूप से सुसम्पन्न रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। मेष राशि अग्नितत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं से युक्त होगा। तथा श्रम के भाव की अल्पता रहेगी तथा जीवन में आप वांछित उन्नति तथा सफलता अर्जित करके मानसिक शांति की अनुभूति करेंगे।

आप के लिए आजीविका सेना, पुलिस, डाक्टर, इंजीनियर, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, विद्युत इंजीनियरिंग, होटल प्रबंधक या कर्मचारी, अग्नि से संबंधित विभाग, शस्त्र विभाग एवं अन्य पराक्रमी क्षेत्र शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन विभागों एवं क्षेत्रों में कार्य करने से आप को वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः आपको चाहिए कि अपने उज्ज्वल भविष्य एवं चरमोन्नति के लिए उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही अपने कार्य क्षेत्र का चयन करें।

व्यापारिक क्षेत्र में आप शस्त्रों के व्यापार से सुवर्ण लोहा तथा अन्य धातु कार्यों से, विद्युत उपकरणों का व्यापार या उत्पादन, औषधि का विक्रय या कैमिस्ट रासायनिक वस्तु या होटल आदि के कार्य से व्यापार में इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही व्यापारिक क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित होंगी। इसके साथ ही अन्य लोग आपके कार्य से प्रभावित होंगे तथा आपके प्रसंसक बनेंगे। अतः व्यापार में आपको उपरोक्त क्षेत्रों या कार्यों का ही चुनाव करना चाहिए।

जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही सौभाग्य से भी आपकी ख्याति दूर दूर तक व्याप्त होगी। आप को सामाजिक धार्मिक या अन्य संस्थाओं में भी किसी उच्च पदाधिकारी के रूप में मनोनीत किया जा सकता है जिससे आपके सामाजिक प्रभाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप एक अधिकार सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा सरकारी क्षेत्रों में आपको काफी मान सम्मान की प्राप्ति होगी।

आपके पिता एक पराक्रमी तेजस्वी शिक्षित एवं गंभीर प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही सभी लोग उनके प्रभाव से प्रभावित होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण ध्यान रहेगा तथा उच्च स्तर पर शिक्षा की व्यवस्था करेंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी उन्नति एवं प्रसिद्धि में उनका विशेष योगदान रहेगा। आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी सामान्यतया मधुरता रहेगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से ही सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त पिता के आप एक आज्ञाकारी पुत्र भी होंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपके मन में विभिन्न सांसारिक इच्छाएं विद्यमान रहेंगी साथ ही महत्वाकांक्षा के भाव से भी युक्त रहेंगे तथा इन सबकी प्राप्ति जीवन में दृढ़ता एवं परिश्रम से करने में समर्थ रहेंगे। प्रचुर मात्रा में आय के साथ साथ आपकी बचत करने की प्रवृत्ति भी रहेगी अतः आर्थिक रूप से आपको कभी परेशानी नहीं होगी। बड़े भाई बहिनों से आपको विशिष्ट सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा साथ ही आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता विद्यमान रहेगी।

आप सक्रिय प्रवृत्ति के लोगों को मित्र बनाना पसन्द करेंगे तथा वे आपके लिए विश्वसनीय भी रहेंगे। मित्र मंडल में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा अपने कलात्मक तरीकों से आप मित्रों तथा अन्य जनों का मनोरंजन करने में तत्पर रहेंगे। आपका मित्रता का क्षेत्र कला संगीत या नाटक आदि के ज्ञान को रखने वाले व्यक्तियों से अधिक रहेगा। इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन मित्रों के सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा समाज में एक आदरणीय तथा प्रतिष्ठित पुरुष समझे जाएंगे। साथ ही सामाजिक जनों की सेवा तथा सहयोग प्रदान करना अपना कर्तव्य समझेंगे। यदा कदा आप स्वयं अत्यंत ही एकाकीपन की अनुभूति भी करेंगे। जीवन में आपको सामाजिक सम्मान की प्राप्ति की भी संभावना रहेगी। साथ ही खेल आदि के क्षेत्र में भी आप दक्षता प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त होकर व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत को मानने वाले व्यक्ति होंगे तथा आजीवन इसका अनुपालन करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यंत ही सतर्कता का परिचय देंगे। आप एक ईमानदार व्यक्ति होंगे अतः बेईमानी को सहन करने में असमर्थ रहेंगे साथ ही धन को आप अपने परिश्रम एवं योग्यता से अर्जित करेंगे। इस प्रकार सामान्य रूप से आर्थिक क्षेत्र में आप भाग्यशाली रहेंगे।

जीवन में आपको आर्थिक समस्याओं से नहीं जूझना पड़ेगा। आपकी आवश्यकताएं अत्यंत ही सीधी सादी होंगी क्योंकि आप भौतिकता की ओर नहीं भागते तथा सामान्य रूप से ही आवश्यक वस्तुओं को घर में रखेंगे। आप शीघ्र लाभ की अपेक्षा दीर्घावधि लाभ के प्रति अधिक इच्छुक रहेंगे। प्रारंभ से ही धन संग्रह के प्रति आपकी रुचि रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ बचत भी करेंगे। अतः आपके समस्त पारिवारिक एवं सांसारिक व्यय आवश्यक रहेंगे जिससे आर्थिक स्थिति विशेष प्रभावित नहीं होगी। अपनी समृद्धि के द्वारा भविष्य में कल्याण संबंधी योजनाओं पर भी आपका व्यय होगा तथा अपने धन को बड़ी बड़ी योजनाओं या निवेशों में लगाएंगे जहां से आपको अधिक लाभ की प्राप्ति होगी।

परिवार की आप पूर्ण चिन्ता करेंगे तथा उनकी समृद्धि एवं खुशहाली के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही एक मित्र की तरह उनका पालन करेंगे। आपकी समय समय पर लम्बी दूरी की यात्राएं भी होंगी जिससे लाभ होगा। आपकी यात्राएं विभागीय या व्यापार संबंधी होंगी। साथ ही जीवन में आप विदेश यात्रा भी करेंगे। इस प्रकार सामान्य रूप से प्रसन्न रहेंगे।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुंडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुंडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उद्धृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते हैं। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता है। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नींव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्य आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतूतों का कलंक लगना आदि घटनाएं होती हैं।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटा-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या

तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिद्धियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा—दादी, माता—पिता, बहन, बेटी—बुआ, भाई का परिवार चाचा—ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर—बराबर धन लेकर सौ अलग—अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों—करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी—ठगी—गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा—मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालों की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी—व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बीमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी ईश्वरीय ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य, बेटी-बुआ आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर 100 कुत्तों को एक ही दिन में खाना खिलाना।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(29/10/2011 - 28/10/2029)

राहु की महादशा 29/10/2011 को आरम्भ और 28/10/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु द्वितीय भाव में बुध की राशि में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि अष्टम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। आपकी यात्रा तथा व्यय और साझेदारों से लाभ होगा। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ, उत्तम शिक्षा और सरकार से संभावित आर्थिक लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली और ऊर्जावान होंगे। किन्तु मौसम में परिवर्तन के कारण गले का रोग, वाइरल बुखार, स्नायविक-दुर्बलता, चर्मरोग आदि मामूली रोग हो सकते हैं। कुछ सतर्कता बरत कर इनमें से कुछ से बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति और उपहार में धन की प्राप्ति होगी। सट्टे तथा निवेश में लाभ हो सकता है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए वायुयान-संचालन, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, शिक्षण, ट्रेवल एजेंट, वायुसैनिक, लेखा-कार्य, कम्प्यूटर-विज्ञान, प्रकाशन आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, चमड़ा, आयात-निर्यात, कागज, टेलीफोन, इलेक्ट्रॉनिक सामान आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता, पदोन्नति, उच्च सम्मान और आय में वृद्धि होगी। आपको सहकर्मियों का सहयोग और उच्चाधिकारियों की शुभकामना प्राप्त होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उपार्जन तथा लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार और सम्पत्ति की अचानक बढ़ाएगी। आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है और अप्रत्याशित प्रगति की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा जायदाद :

इस दशा के दौरान आपका जीवन सुखमय रहेगा। आपको वाहन की प्राप्ति होगी। जायदाद के लिये भी यह दशा उत्तम है। जमीन-जायदाद में वृद्धि की संभावना है। आपका एक आरामदायक मकान होगा। चन्द्र की महादशा में आपकी छोटी यात्रा और मंगल की महादशा में लम्बी यात्रा होगी। मामूली नुकसान से बचाव के लिये सावधानी बरतें।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी उत्तम तकनीकी शिक्षा होगी। आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। विज्ञान, इन्जीनियरिंग, लेखा-कार्य, वाणिज्य, लेखन, समाचार माध्यम आदि में आपकी रुचि होगी। आप तेज हैं तथा बौद्धिक गतिविधि से सम्बन्धित सभी विषयों में अच्छा

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आप यदा-कदा परिवार से दूर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचानक धन मिलेगा, हालाँकि कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या और परिवर्तन हो सकता है। आपकी माता को समृद्धि और सम्पत्ति मिलेगी तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे जबकि आपके पिता को आदर, सम्पत्ति तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी, व्यय होगा और विरोधियों तथा प्रतिद्वन्द्वियों के कारण निराशा मिलेगी। आपके बड़े भाई-बहनों को अचल सम्पत्ति, आवास में परिवर्तन तथा जीवन का सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति तथा जीवन का सुख मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपको सम्पत्ति और सुख की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में लाभ होगा और मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, सफलता, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति और यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में शिक्षा, परिवार में सुख और लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी जबकि उसके बाद शुरु होने वाली सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान जमीन जायदाद में वृद्धि और माता से सुख मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा होगी और भाई-बहनों से सुख मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, कुछ स्वास्थ्य समस्या और यात्रा होगी।

**अंतर्दशा :- राहु – शुक्र
(17/05/2023 - 17/05/2026)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 29/10/2011 को प्रारंभ होकर 28/10/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 17/05/2023 को प्रारंभ होकर 17/05/2026 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। शुक्र शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में विपरीत लिंग के व्यक्ति आपसे रुष्ट रह सकते हैं। वे आपका चरित्र बर्बाद कर सकते हैं। शत्रु इस अवधि में समाप्त हो जाएंगे। विषय-वासना में अधिक रुचि के कारण स्वास्थ्य की हानि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु – सूर्य
(17/05/2026 - 11/04/2027)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 29/10/2011 को प्रारंभ होकर 28/10/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 17/05/2026 को प्रारंभ होकर 11/04/2027 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप चिंतित और अप्रसन्न रह सकते हैं; व्यर्थ इधर-उधर भटक सकते हैं। दर्शनशास्त्र और तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। राजनीति में सफलता मिलना कठिन होगा। जीवन से संबंधित पहेलियों को सुलझाने में और दार्शनिक चिंतन में समय बिताएंगे। विरासत में जायदाद मिल सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
- बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

**अंतर्दशा :- राहु – चन्द्र
(11/04/2027 - 10/10/2028)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 29/10/2011 को प्रारंभ होकर 28/10/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 11/04/2027 को प्रारंभ होकर 10/10/2028 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। चंद्रमा मन का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप नेकी के कार्य करेंगे, समाज में प्रतिष्ठा होगी। धन-संपदा को एकत्र करने की शुरुआत हो सकती है। धनागम, नम्रता और ज्ञान के बल पर समाज में सम्मान बढ़ेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- राहु – मंगल
(10/10/2028 - 28/10/2029)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 29/10/2011 को प्रारंभ होकर 28/10/2029 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 10/10/2028 को प्रारंभ होकर 28/10/2029 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। छठे भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 9, 12 और लग्न भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप साहसी और विजयी होंगे। अधिकारी या नेता के रूप में सफल रहेंगे। विषय-वासना में रुचि हो सकती है। शत्रुओं को परास्त करेंगे। त्वचा रोग हो सकता है। ऊर्जा का सकारात्मक दिशा में उपयोग करना श्रेयस्कर रहेगा। अभिमान से बचें। छठे भाव में मंगल की स्थिति शुभ मानी जाती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्मा जी के गायत्री मंत्र के 108 जाप प्रतिदिन करें।

**महादशा :- गुरु
(28/10/2029 - 28/10/2045)**

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 28/10/2029 को आरम्भ तथा 28/10/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव जीवन साथी, व्यवसाय, कोर्ट-कचहरी के मामले, विदेश संबंध तथा विदेशों में अर्जित प्रतिष्ठा का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जिसकी सप्तम भाव में स्थिति तथा एकादश, प्रथम और तृतीय भाव पर दृष्टि है। इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्षों की इस दशा में आपको बहुत ही आनन्द तथा शान्ति की प्राप्ति होगी और आप उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की सप्तम भाव, जो एक केंद्र है, में स्थिति तथा स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व के द्योतक प्रथम भाव पर इसकी दृष्टि के फलस्वरूप आपको किसी भयानक विपत्ति से छुटकारा मिलेगा तथा इस दशा काल में कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको परेशान नहीं कर पाएगी और आपका जीवन सामान्य रहेगा।

अर्थ सम्पत्ति :

गुरु, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है तथा जो दशम भाव (कर्म भाव) के स्वामी के अतिरिक्त सप्तम भाव का स्वामी होकर सप्तम भाव में स्थित है एवं सप्तम भाव से जिसकी दृष्टि एकादश भाव (आय भाव) पर है, आपको इस दशा काल में चल एवं अचल संपत्ति में बढ़ोतरी करने का सुअवसर प्रदान करेगा तथा आरामदेह और शौकीन वस्तुओं को खरीदने में आपकी अक्षमता को कम करेगा।

व्यवसाय :

सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव तथा दशम अर्थात् कर्म भाव के स्वामी गुरु की सप्तम भाव में स्थिति के कारण आपका व्यवसाय उत्तम होगा। आप व्यवसाय में लाभ प्राप्त करेंगे। आपको विदेश यात्रा का अवसर मिलेगा। आप वाक्पटु होंगे और आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के सप्तम अर्थात् जीवनसाथी के भाव में स्थित होने के कारण आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे और व्यवसाय में आपकी सहायता करेंगे। आपके जीवन साथी का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपका पारिवारिक जीवन उन्नतिशील होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

धार्मिक मानसिकता के कारण आप अपना अधिकतर समय शास्त्रों तथा धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लगाएंगे।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

**अंतर्दशा :- गुरु – गुरु
(28/10/2029 - 16/12/2031)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 28/10/2029 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 28/10/2029 को प्रारंभ होकर 16/12/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको पारिवारिक सुख मिलेगा। विवाह हो सकता है। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी; नये मित्र बनेंगे। धन और सम्मान में वृद्धि होगी। कई माध्यमों से धनलाभ होगा। अध्ययन, अध्यापन, लेखन और प्रकाशन के लिए शुभ समय है। ललित कलाओं और नाटक आदि में रुचि हो सकती है। संचार माध्यमों से लाभ हो सकता है। पारंपरिक साहित्य और कला की ओर अधिक झुकाव होगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता की विद्वानों और सत्पुरुषों से मित्रता होगी। उन्हें समाज में सफलता मिलेगी। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं; सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। उन्हें भूमि और अचल संपत्ति से लाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, उत्तम शिक्षा और समृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की वाक्शक्ति उत्तम होगी। भाषण प्रतियोगिता आदि में भाग ले सकते हैं। अध्ययन, लेखन और ज्ञान-विज्ञान में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी, सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापारी तरक्की करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले वस्त्र, अनाज और हल्दी दान करें।

**अंतर्दशा :- गुरु – शनि
(16/12/2031 - 29/06/2034)**

आपकी बृहस्पति की महादशा 28/10/2029 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 16/12/2031 को प्रारंभ होकर 29/06/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आप भाग्यशाली और धनी बनेंगे। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। संन्यास में रुचि हो सकती है। धर्म और दर्शनशास्त्र में मन लग सकता है। पिता से संबंध मधुर होंगे। शिक्षा उत्तम होगी। संतान से सुख मिलेगा। पारिवारिक जीवन उत्तम होगा। दान-धर्म की संस्थाओं से जुड़ सकते हैं।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

Aniket Dhyani

आपके जीवनसाथी सब कार्यो को उत्साह और साहस से पूर्ण करेंगे। आपके पिता के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। माता को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, व्यापार में लाभ, अचल संपत्ति और वाहनसुख, निवेश से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा पूर्ण हो सकती है, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, प्रोन्नति होगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में अष्टम में और राहु मीन राशि में नवम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि में दशम में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में एकादश भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में दशम भाव में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप अपने कार्यक्षेत्र में अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। अनुभवी साझेदार के मिलने से व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा और व्यापार में अधिक लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

अप्रैल के बाद एकादश स्थान के गुरु आपके व्यापार में आय की मात्रा और बढ़ा सकते हैं। बड़े लोगो व वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। अष्टम स्थान का शनि आपके कार्य व्यवसाय में अवरोध उत्पन्न करेंगे, परन्तु आप अपने विवेक से उसे भी अनुकूल बना लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन व रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम के साथ साथ भौतिक सुख सुविधा पर खर्च भी होगा।

अप्रैल के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका रुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही धनागम में भी वृद्धि होगी। निवेश से पूंजी में वृद्धि होगी। भाई-बहन या पुत्रादि के विवाह अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। बातचीत का ढंग व व्यवहार दोनों में बदलाव आएगा।

अप्रैल के बाद आपको प्रेम प्रसंग में भी सफलता प्राप्त होगी। आपके

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

जीवनसाथी के साथ आपके संबंध और मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति होने के शुभ योग बने हुए हैं। यदि सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह होने की सम्भावना है। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। अष्टम स्थान का शनि कभी-कभी मौसम जनित बीमारियों से परेशान कर सकता है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी मोटी परेशानी बनी रहेगी।

अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता प्रदान करेगा। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन करें। शाकाहारी भोजन व संतुलित आहार के साथ-साथ नियमित व्यायाम भी करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठ स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। रोजगार प्राप्ति के योग बने हुए हैं।

अप्रैल के बाद समय व्यवसायिक शिक्षा हेतु अनुकूल है। विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। मन को एकाग्र कर लक्ष्य की प्राप्ति करें।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। नवम स्थान के राहु अचानक लम्बी यात्राएं कराते रहेंगे। वर्षारम्भ में अपने जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है।

अप्रैल के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से व्यापारिक व्यक्तियों की व्यावसाय संबंधित यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। अप्रैल के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति श्रद्धा-भक्ति बढ़ेगी।

- काले कुत्ते को रोटी दें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ाएं एवं हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश

जनवरी 2024 के लिए फलादेश

यह महीना आप के लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि न्यूनाधिक शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शारीरिक रूप से आप दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। शत्रुपक्ष भी आपका इस मास में बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। साथ ही घर में भी किसी प्रकार की चोरी आदि भी हो सकती है अतः सावधान रहें। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का तत्परता से पालन करें तथा उनकी किसी भी प्रकार से उपेक्षा न करें अन्यथा आप उनसे दण्ड प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अथक परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को करेंगे जिससे आपको पछताना पड़ेगा तथा सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपका मन मुटाव रहेगा। आपकी इच्छाएं इस समय में पूर्ण नहीं होंगी अतः मानसिक रूप से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप पत्नी से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता होने के कारण बुद्धिचातुर्य से अपने कार्यों को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। साथ ही धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर सकेंगे।

फरवरी 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे या इनको कोई कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी बलवान रहेगा तथा आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करते रहेंगे। इस मास में आपके अन्दर उत्साह के भाव की न्यूनता स्पष्ट परिलक्षित होगी तथा धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा। अतः आर्थिक क्षेत्र में आप कष्ट प्राप्त करेंगे। आप का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके अच्छे संबंध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मनमुटाव तथा वैमनस्य रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज तथा परिवार के लोगों से आपके परस्पर विवाद होते रहेंगे। अतः ऐसे समय को संयम पूर्वक व्यतीत करना ही बुद्धिमानी रहेगी।

साथ ही इस मास में आपको अल्प मात्रा में शुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति भी हो सकती है। इस समय आप नवीन वस्त्र तथा द्रव्य आदि भी प्राप्त कर सकते हैं जिससे आप किंचित सुख की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

मार्च 2024 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा फिर भी अल्प मात्रा में शुभ फल अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे तथा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे फलतः आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी अत्यंत ही परिश्रम से सफल होंगे। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर रहेंगे। शारीरिक रूप से भी आप दुर्बल रहेंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव अल्प ही रहेगा तथा देवता एवं ब्राह्मणों का आप अल्प मात्रा में ही पूजन तथा सेवा करेंगे। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे तथा शरीर में दुर्बलता का भाव रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपकी दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। आपके पारिवारिक कार्य भी इस समय असफल रहेंगे एवं मुकद्दमे आदि में धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने बुद्धिचातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त सामान्य धन तथा सुखार्जन करके आप प्रसन्नता की अनुभूति कर सकेंगे।

अप्रैल 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जित करने में सफल रहेंगे तथा आर्थिक रूप से पूर्ण सम्पन्न रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को यथासमय सिद्ध करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं। इस समय संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय आपके भाग्योदय संबंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा। अपने बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबंध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र सम्माननीय तथा आदरणीय समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में श्रद्धा का प्रदर्शन करते हुए आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में सम्मान अर्जित कर सकेंगे।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

मई 2024 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक एवं पारिवारिक जनों से यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित करेंगे जिससे आपके महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे एवं वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। आपके शुभ कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करने के लिए तत्पर रहेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे एवं बन्धु तथा मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप की मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अल्प मात्रा में अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा की दृष्टि से मास में पूर्ण सतर्क रहें तथा अन्य कार्यों को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

जून 2024 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय महिला वर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सौभाग्य से ही सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आप अपनी रुचि का प्रदर्शन करेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों तथा संबंधियों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा साथ ही मनोवांछित द्रव्यों की भी इस मास में उपलब्धि हो सकती है। संतति पक्ष से भी आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं की भी प्राप्ति करने में सफल सिद्ध हो सकते हैं।

जुलाई 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप अशुभ फलों की ही

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

प्राप्ति करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्टजनों की संगति आपको प्राप्त होगी जिससे आर्थिक दृष्टि से आप कमजोर होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही मानसिक रूप से भी आप अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के उपरांत भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राह्मणों की आप उपेक्षा करेंगे। इस मास में आप के अन्य प्रकार से भी हानि के योग बनते रहेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से विशेष संबंध नहीं रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग भी अल्प ही मिलेगा। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय शत्रुपक्ष आपका बलवान रहेगा तथा उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप शीत या वात से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवमानना होगी एवं बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको क्षति हो सकती है। अतः सावधानी तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से ही शुभ फलदायक रहेगा तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा हृदय से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके शत्रु आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आप की आय स्त्रोतों में भी उन्नति होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य की भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके विलम्बित कार्य भी इस मास में पूर्ण हो सकेंगे। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा सांसारिक कार्य भी समय पर सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथा योग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आप कोई ऐसा कार्य करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त इस मास में अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार क्षति होने की संभावना है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

सितम्बर 2024 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही समाज में आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपके परिवार तथा मित्र जनों से मधुर संबंध रहेंगे एवं उनसे आप यथोचित आदर प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मिष्टान्न के प्रति आपकी तीव्र रुचि रहेगी। शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी एवं शत्रुओं को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। स्त्री से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा अतः आपका गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। इसके अलावा व्यापारादि कार्यों से भी आप अतिरिक्त धन अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

अक्टूबर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग भी करेंगे। समाज में आपके यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। साथ ही समाज में आप लोगों की भलाई के कार्यों को करने में भी तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा तथा अन्य लोग भी आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। इसके अलावा इस समय आपकी चिर प्रतीक्षित मनोकामनाएं भी पूर्ण होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही रुधिर विकार का भी भय रहेगा। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को संपन्न करें।

नवम्बर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही दुश्मन भी बलवान रहेंगे अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता रहेगी तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन या कोई कार्य छूट सकता है या बंद भी हो सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से आपके विशेष मधुर संबंध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि होने की संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। इसके साथ ही इस समय आप अपनी बुद्धिमता से धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में सफलता अर्जित कर सकेंगे।

दिसम्बर 2024 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही नवीन ज्ञानार्जन करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी सुनने को मिलेगा। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा के कार्य में तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग से भी लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में आप सफल होंगे। साथ ही आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति मिलेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धनार्जन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय धर्मानुपालन में तत्पर रह कर समाज के सभी लोगों में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा वे आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु नवम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि नवम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वादश भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि लग्न स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वादश भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। वर्ष के शुरुआत में सप्तम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप व्यापार में उन्नति करेंगे। अनुभवी लोगों कह सलाह अवश्य लें। व्यापार में आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद आपके कार्यों में गुप्त शत्रु या बिरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें अन्यथा परिणाम प्रतिकूल होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाईयों व पत्नी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद राहु एवं गुरुग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में आपको कोई बड़ा निवेश न करें। यदि निवेश करना अत्यधिक जरूरी हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों से परामर्श लेकर निवेश करें।

घर—परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा

तत्पर रहेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे।

मई के बाद गुरुएवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद हो सकता है। अतः सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि विवाह योग्य है तो विवाह हो सकता है। मई के बाद समय प्रभावित हो रहा है, अतः उस समय उन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। किसी प्रकार की कोई चिंता परेशानी न होने के कारण आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आप अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे।

मई के बाद आपका समय थोड़ा प्रतिकूल हो रहा है। उस समय छोटी-मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। द्वादशस्थ गुरुके पृथ्वी तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक रोग या मौसम जनित बीमारियों से परेशानी उत्पन्न हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगी। पंचम स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए शुभ है। यदि उत्तम शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ शुभ है।

मई के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल रोजगार प्राप्त होगा।

यात्रा—तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी—मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु मई के बाद द्वादश स्थान के गुरु विदेश यात्रा करा सकते हैं।

नवम स्थान के शनि आपको लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की उनकी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा—पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति एवं मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। मई के बाद गुरुग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य, भण्डारा इत्यादि धार्मिक कार्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरुव मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली वस्तुएं जैसे दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- दुर्गा बीसा कवच अपने गले में धारण करें एवं राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

02 जून के बाद समय अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान केगुरु धनागम में रूकावट उत्पन्न करेंगे। जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अन्तराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है, परन्तु आपको मातुल पक्ष से लाभ होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको रूका हुआ धन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुधारने में इनका पूर्ण सहयोग होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी आपका पैसा

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

खर्च हो सकता है। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर भी पैसा खर्च करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत उत्तम रहेगा। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद करा सकता है।

02 जून के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य व शिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

02 जून के बाद गुरु के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है। तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रमण, सांस व पेट संबंधित बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है।

02 जून के बाद गुरु का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से

स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठ स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को मनोनुकूल सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को वर्षारम्भ में नौकरी मिल सकती है।

02 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा—तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है। द्वादशस्थगुरु विदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होगी।

02 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी—मोटी यात्राओं के साथ—साथ लम्बी यात्रा भी दर्शा रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थगुरु एवं नवमस्थ शनि के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। 02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आप गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। मन्त्र जाप कर आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाएंगे।

- माता—पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़िया रहेगा। व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से नयी योजनाओं से लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। आप कम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा।

साझेदारी में काम करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है। 26 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा, आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कर्जें इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी धन का व्यय हो सकता है।

26 नवम्बर के बाद सामाजिक कार्यों में व धार्मिक कार्यों में पैसा खर्च कर सकते हैं। भाइयों या ससुराल पक्ष से भी धन लाभ हो सकता है। अचानक धन लाभ होने के भी योग बन रहे हैं।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

26 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद आपके सामाजिक मान संमान में और बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

संतान के लिये वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। विवाह योग्य है तो विवाह हो जाएगा।

26 नवम्बर के बाद दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। मन में अच्छे विचार आएंगे व आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे और प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसम जनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 26 जून के प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त हो सकती है। तकनीकी शिक्षा

के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा—तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी। 03 जून के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आपकी छोटी—मोटी यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आप का अटूट विश्वास रहेगा। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 26 जून के बाद मन्त्र सिद्धी व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन राहु ग्रह का दान आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। भाइयों का सहयोग मिलेगा। सप्तम स्थान के राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं परन्तु आप उसे भी अपने बौद्धिक बल से अनुकूल बना लेंगे।

24 मई के बाद व्यवसाय में सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो 24 जुलाई के बाद अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आमदनी के नये स्रोत मिलने कि उम्मीद है। अनुभवी व्यापारिक एवं वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे। आपका मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। आप बचत करने में सफल रहेंगे। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकते हैं।

फरवरी के बाद आपको रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पिता का अहम सहयोग होगा। मातुल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा। मांगलिक कार्यों में भी पैसे खर्च हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे।

फरवरी के बाद आपके परिवार में

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय शुभ है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा चल रहा है यदि बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी।

राहु ग्रह के गोचर के साथ आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। यदि पहले से किसी बीमारी से ग्रसित हैं तो उससे छुटकारा मिल सकता है। छठे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए सामान्य रहेगा। आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि शिक्षा की दृष्टि से उत्तम है।

24 मई के बाद षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों को ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा—तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से लम्बी यात्राएं व तीर्थ यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि, नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है, जिसके कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा। आप गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। समय समय पर गरीबों की सहायता भी करेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में बांट दें।
- दुर्गाजी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।
- गौ सेवा करें या गौशाला में चारा दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। बड़े अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण सारे विरोधी शान्त होंगे। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अति उत्तम रहेगा। व्यवसाय में उन्नति के लिए नये-नये तरीके अपनाएंगे व सफल भी होंगे। आपको लाभ मिलता रहेगा। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की अच्छी उन्नति होगी। छठे स्थान का राहु आपको ब्राण्ड नेम भी दिला सकता है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख सुविधा पर आप अधिक खर्च करेंगे। आय के स्रोत और उत्तम होंगे। निवेश के लिए समय अच्छा चल रहा है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की स्थिति पैतृक सम्पत्ति प्राप्ति के योग बना रही है। अचानक धनागम का योग बनेगा जिससे आर्थिक स्थिति सुधरेगी।

08 अगस्त के बाद आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। इस समय के अंतराल में आपका रुका हुआ या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। इस अवधि में वसीयत प्राप्त होने की भी संभावना बन रही है।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

घर—परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। यदि कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

तृतीयस्थ मंगल के प्रभाव से सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। माता-पिता के साथ भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। उच्च शिक्षा के लिए समय उत्तम नहीं है परन्तु प्रतियोगिता परीक्षा में आप सफल होंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएं।

आपके बच्चों का किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छठे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ा रहे हैं जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं, तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी।

इस समय के अंतराल में आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आगे रहेंगे। अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में और अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अहं भाव ना आने दें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

यात्रा—तबादला

वर्षारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। आपके माता—पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

29 मार्च के बाद छोटी—मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। 05 अक्टूबर के बाद तीर्थ यात्रा या परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बढ़ेगी। किसी तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं तो उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें, अन्यथा उसमें व्यवधान आ सकता है। 25 अगस्त के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष आयोजन कर सकते हैं जैसे— भगवती जागरण, माता की चौकी इत्यादि।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं और केतु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। फरवरी से आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने काम को पूरा करके ही रहेंगे

17 अप्रैल से समय व्यावसायिक स्तर आपके लिए बेहतर होने वाला है। आपको पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। भले ही गुरु एवं राहु की युति थोड़ी अड़चने देगी किन्तु सफलता आपके कदम चूमेगी। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आय भाव पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। 04 फरवरी से आपकी आर्थिक उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। वित्तीय मामलों में आपको निराशा हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। आपकी राह में अवरोध उत्पन्न किया जा सकता है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं।

01 मई से आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश

करेंगे यह समय आपके लिए लाभकारी रहेगा। यदि अनपेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिए मत अपितु उसका लाभ उठाएं। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी मौके आएंगे।

घर—परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। परिवार के प्रत्येक मसले पर आपको बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता—पिता के लिए समय शुभ नहीं है।

मई से समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा, क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो परिवार के लिए हितकर होंगे। परिवार के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान में गुरु चण्डाल योग संतान हानि का योग बना रहा है।

गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। अप्रैल के बाद सन्तान के लिए समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य रहेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप आलसी हो जाएंगे और आपके रवैये में भी परिवर्तन आएगा। आपको अपने खान—पान और दिनचर्या पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है ताकि आप इस तरह की भावनाओं से बच सकें। आपके जीवन में इस साल कुछ अच्छे पल भी आएंगे किन्तु ऐसा भी समय आएगा जब आप अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन से सम्बंधित चिंताओं से घिरे रहेंगे

स्वस्थ रहने के लिए आप योग और ध्यान का सहारा लें और प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएं। स्वास्थ्य को लेकर यह साल वैसे तो आपके लिए ठीक—ठाक ही रहेगा लेकिन अपने खान—पान को लेकर सतर्क रहें। पंचम स्थान में गुरु एवं राहु की युति उदर रोग दे सकती है। अतः

मसालेदार या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम से कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रथम मास श्रेष्ठतम रहेगा परन्तु 04 फरवरी के बाद से समय प्रभावित हो रहा है। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। विदेश यात्रा के भी प्रबल योग बन रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र भी ले सकते हैं और उस मन्त्र की साधना भी कर सकते हैं। पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा भी करेंगे। अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं और महालक्ष्मी मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- राहु ग्रह का दान करें और उसके मन्त्र का पाठ करें।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा आप व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप अपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम पर ध्यान देंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। बस आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। चतुर्थ मंगल के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

09 अगस्त के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अपने अनुभवों से आपका खुद का विकास होगा। आपका धैर्य आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए थोड़ा चिंताजनक हो सकता है क्योंकि राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपकी आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी नहीं है। 18 फरवरी के बाद अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है। परन्तु 14 जून से एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। आपको कई अत्यंत लाभकारी अवसर भी मिलेंगे। अपनी समझ का सही उपयोग करेंगे।

15 अक्टूबर के बाद जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद

कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर—परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान के मंगल आपके घरेलू माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं। आपकी माता स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। 18 फरवरी के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है।

09 अगस्त से समय अनुकूल हो रहा है। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में एक—दूसरे के प्रति भावुक लगाव बढ़ने के कारण पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। आपके पिताजी एवं बड़े भाई के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों के स्वास्थ्य व शिक्षा में रूकावटें आ सकती हैं। 18 फरवरी के बाद गर्भवती स्त्रियों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

09 अगस्त से बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी कम होगी और शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। गर्भधान के लिए उत्तम समय रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान रह सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फिर भी आपको स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह—सुबह व्यायाम करते रहना चाहिए।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक—ठाक रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षाथियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार

प्रयास करना पड़ेगा। व्यापारिक व्यक्तियों के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

8 अगस्त के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 15 अक्टूबर से समय आपके लिए काफी बेहतर हो रहा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में कोई विदेश यात्रा का योग नहीं बन रहा परन्तु 18 फरवरी के बाद विदेश यात्राएं होंगी। राहु के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। इस स्थानान्तरण से आप प्रसन्न नहीं रहेंगे।

14 जून से नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्रा के भी योग बन रहे हैं। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। परन्तु 18 फरवरी के बाद आप दान पुण्य करेंगे। राहु ग्रह के गोचर के बाद मन्त्र जप या साधना अधिक करेंगे। साधु, संन्यासी, देवता एवं अपने से बड़े लोगों में आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं एकादश भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं छठे भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्टूबर को मकर राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

5 मार्च के बाद का समय आपके कार्य-व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके अंदर काम करने का जुनून होगा। परिश्रम की बदौलत उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपनी शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। अधिकारी आपसे प्रभावित होंगे और उनका अच्छा सहयोग भी मिलेगा।

किसी के साथ मिल कर कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे तो उसमें अच्छा लाभ होगा। 12 अगस्त से आपको किसी पर अत्यधिक विश्वास नहीं करना है, नहीं तो आपको धोखा मिल सकता है। 23 अक्टूबर से आपका समय अनुकूल हो रहा है फिर भी आपको सतर्क रहना चाहिए।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। एकादश स्थान का शनि आर्थिक उन्नति के लिए काफी शुभ है फिर भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवों की सलाह अवश्य लें।

5 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। पुत्र एवं आपके मित्रों से अच्छा लाभ होगा। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन व्यय करेंगे। 12 अगस्त से 23 अक्टूबर तक निवेश के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में निवेश से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

लेकर मन में चिंता रह सकती है। वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें। आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं होगी। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

गुरु के गोचर के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। वर्षान्त में आपके परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बढ़िया नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुआपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही न करें। दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

रोग स्थान में गुरु ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य के लिए उत्तम नहीं है। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता में कुछ अनुकूलता आएगी। आप स्वस्थ महसूस करेंगे परन्तु अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। पेट की तकलीफें व मोटापा बढ़ सकता है। व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए श्रेष्ठ रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। विदेश में व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा—तबादला

व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राओंके प्रबल योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर हो सकता है। 5 मार्च के बाद पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे।

यात्रा के दौरान या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें क्योंकि द्वादश स्थान में शनि ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होता।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा—पाठ भी प्रभावित हो सकता है परन्तु 5 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपकी श्रद्धा और बढ़ेगी।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं छठे भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक जीवन में इस वर्ष आप कुछ विशेष करेंगे। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनो से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। कानून से जुड़े लोगों वकील, पुलिस आदि को लाभ की संभावना बन रही है। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपका किसी से मतभेद हो सकता है। पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। वर्षान्त में किसी प्रकार का जोखिम न लें।

धन संपत्ति

आर्थिक उन्नति के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आर्थिक उन्नति के लिए अच्छी नहीं है। आय के कम एवं व्यय के ज्यादा योग बन रहे हैं। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसे न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 मार्च से आपका समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। आपके पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसे खर्च हो सकते हैं। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। ऐसी विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना चाहिए। छठे स्थान में वक्री मंगल आपके आय के स्रोतों में वृद्धि करेंगे। फिर भी आर्थिक स्थिति को लेकर सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव के कारण घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में न पड़ें। मार्च के बाद अपने दांपत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए आपको अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। इस समय आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मदभेद हो सकता है।

तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। भाई-बहनों का अच्छा सहयोग मिलेगा। समाज में आपका पराक्रम और बढ़ेगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होना आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा, जिसके कारण संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम है। परन्तु 18 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। आपको पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। अपने खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर पार्क जाना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

छठे स्थान में मंगल ग्रह के प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिसके कारण आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। 8 अक्टूबर के बाद वाहन इत्यादि से सावधान रहें और यात्रा भी कम से कम करें। नहीं तो शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता अभ्याथियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है।

व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साइंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा और आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहें हैं। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं। चोट चपेट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास होगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में संलग्न होंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को प्रेम सौहार्द के साथ मनाएंगे। 8 मार्च से आप दान पुण्य व दूसरों की सहायता अधिक करेंगे, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनि ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए शनि यन्त्र अपने पूजा घर में स्थापित कर उसकी पूजा करें।
- मदिरा व नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें।

Aniket Dhyani

- सरसों के तेल से निर्मित वस्तुओं को गरीब मजदूरों को खिलाएं।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों में दान करें।

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रुचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते हैं।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू – स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापकम के अनुसार हैं। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

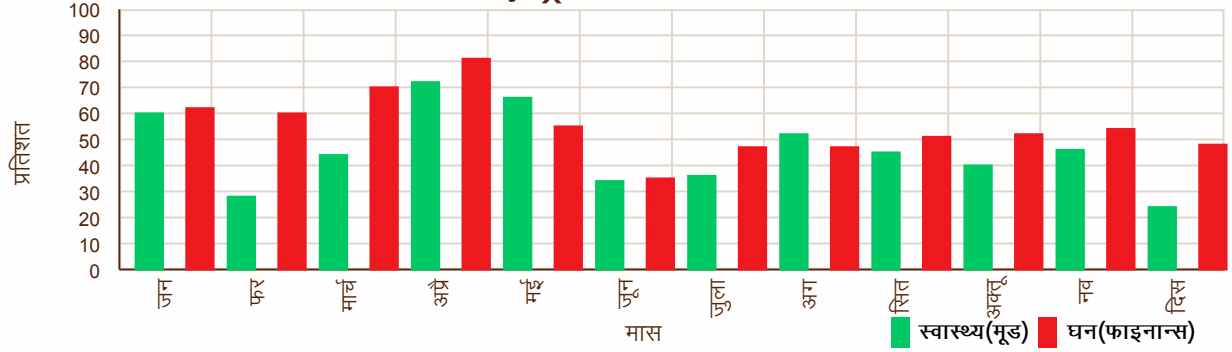
+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

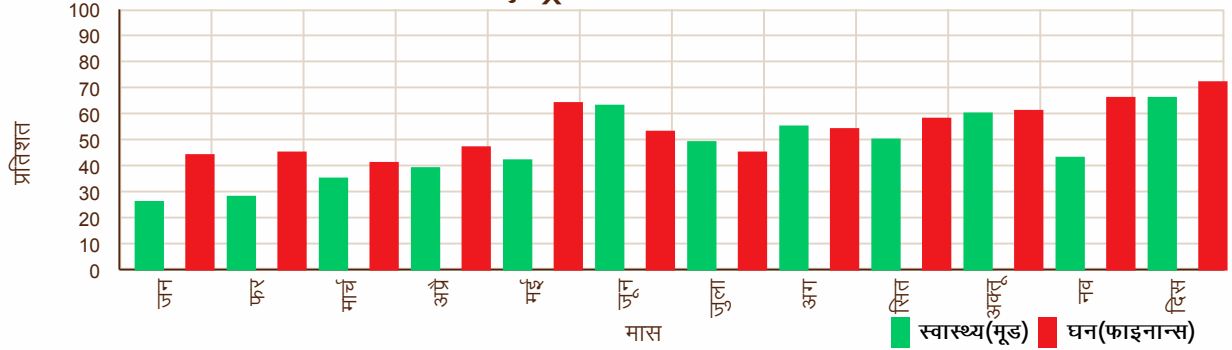
एस्ट्रोग्राफ — 2024



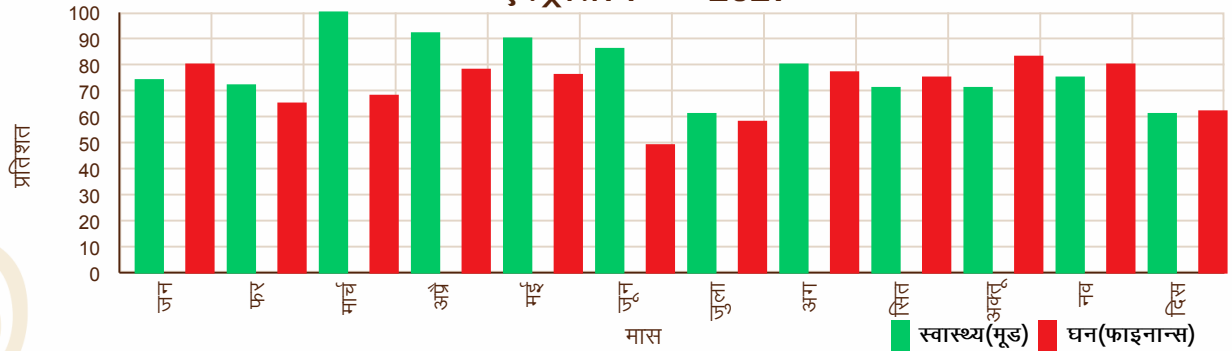
एस्ट्रोग्राफ — 2025



एस्ट्रोग्राफ — 2026



एस्ट्रोग्राफ — 2027



Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

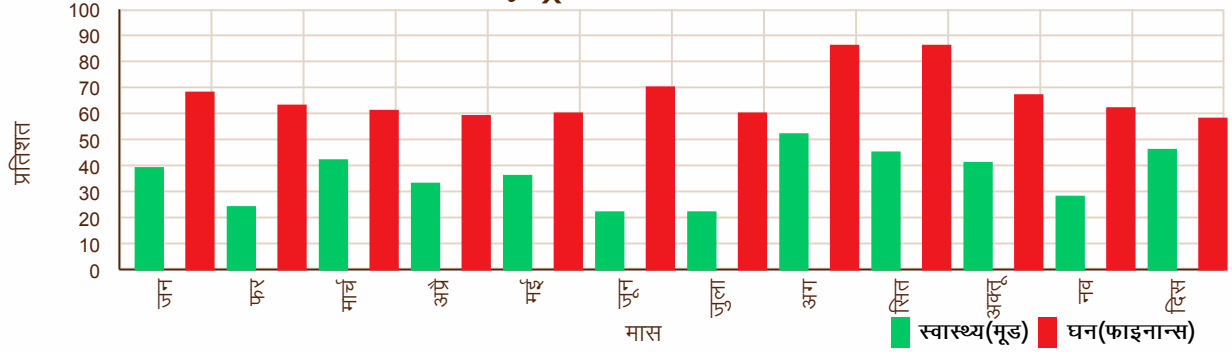
+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

एस्ट्रोग्राफ — 2028



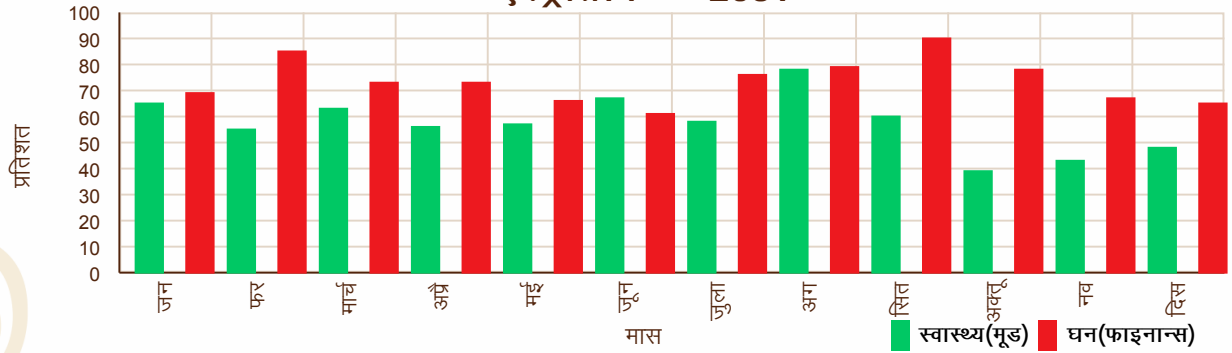
एस्ट्रोग्राफ — 2029



एस्ट्रोग्राफ — 2030



एस्ट्रोग्राफ — 2031



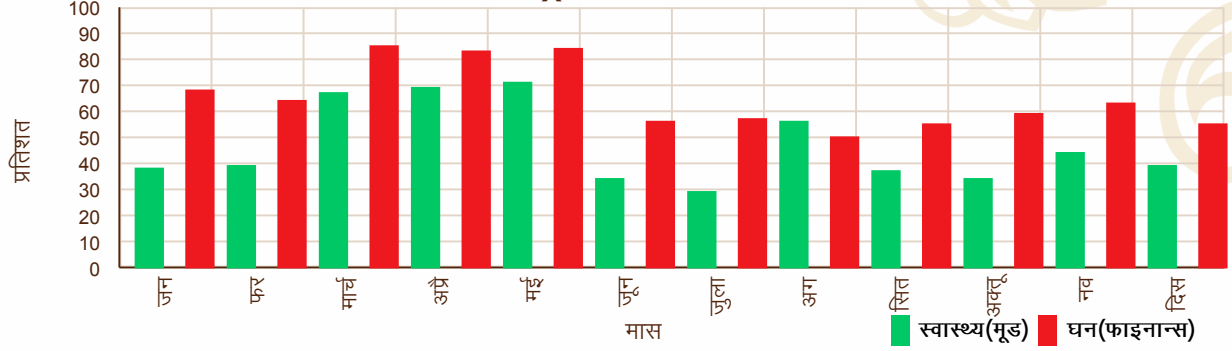
Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

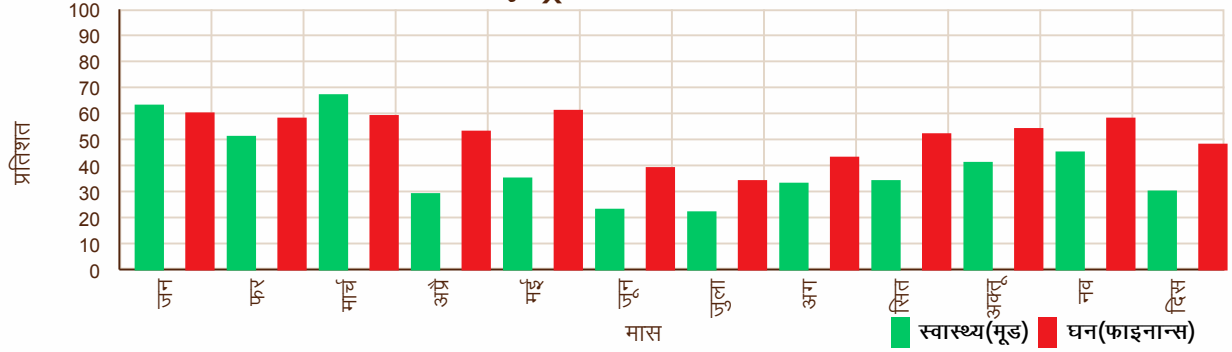
+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

एस्ट्रोग्राफ — 2032



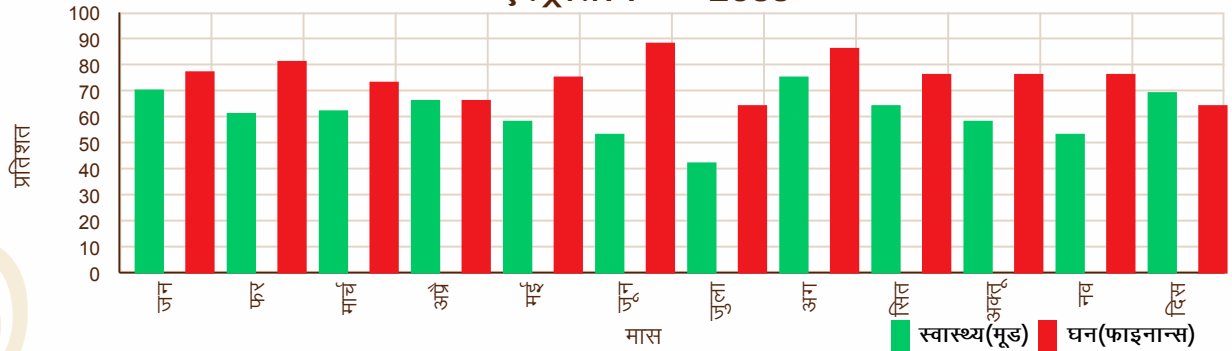
एस्ट्रोग्राफ — 2033



एस्ट्रोग्राफ — 2034



एस्ट्रोग्राफ — 2035



Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202, +91-8090283937

www.astroarunpandit.org, support@astroarunpandit.org

योग

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम् ।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ॥

॥ सारावली ॥ अ. 35 / श्लोक 64 ॥

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्ती राजा होता है ।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठित हो रहा है । फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे ।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.7 / भाव-9 / श्लो

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है ।

योग कारक ग्रह : गुरु, चंद्र

योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे । आप महादानी होंगे ।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4 / श्लो. -16

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है ।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु,मंगल

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते।

वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-35

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापक्षयुक्ते निधने सपापे

शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20 ॥

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में भी पापग्रह हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ्र, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : केतु,शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको

शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यग्रहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण विना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23॥

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वदारा में आसक्त योग

गुरौ कलत्रे स्वदारसक्तः।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ-6/श्लो.-2॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमभाव में गुरु स्थित हो तो जातक अपनी स्त्री में आसक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मात्र अपने जीवनसाथी में आसक्त रहेंगे।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-15

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-30

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-31

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबंध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।

कूटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-62

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र,बुध,गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरान्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

“केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति ।

दृष्टे सितार्येन्दुसुतेः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात् ॥”

॥ बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 1 ॥

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है या चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेसरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,चंद्र

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

काहल योग— प्रथम विधि

“अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ—

लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात् ॥”

॥ बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 10 ॥

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,गुरु,चंद्र

योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्राम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

“सपारिजातद्युचरः सुखानि ।”

॥ बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 34 ॥

जिसकी पत्रिका के “पारिजात” भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “पारिजात” वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

“नीरोगतामुत्तमवर्गयातः ।”

॥ बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

“सगोपुरांशो यदि गोधनानि ”

॥ बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका में “गोपुरांश” भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शनि

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में “गोपुरांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन

Astro Arun Pandit Private Limited

Astrology|Numerology|Palmistry|Tarot Reading|Occult|Gemsstone

+91-8604802202,+91-8090283937

www.astroarunpandit.org,support@astroarunpandit.org

अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

केमद्रुम योग

“चेत्त्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।

प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।”

।। बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो “केमद्रुम” योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “केमद्रुम” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वेशि योग

“धनखेटैर्वेशी दिनेशात्”

।। बृ. पा. होरा. —योगाध्याय—श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध, सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वेशि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।